Hindi Spiritual E-book by Smt.B.K.Neelam

Hindi Spiritual One Liners – Quotes – Short Stories – All Mix – Page 1

हाथ-पैर को ऊपर-नीचे करना
हमारे वश में है।
वैसे ही
विचारों को भी हम दिशा-निर्देश
दे सकते हैं।
विचारों को दिशा देना सीख लोगे
तो दशा भी बदल जायेगी।

जब मनुष्य अपनी इन्द्रियों को वश में करता है, उस समय मानों वह तप करता है।

संबंध सुख देता है
बंधन दुःख देता है

घर गन्दा नहीं होने देते फिर
हृदय को क्यों गन्दा करते हो
हृदय को मत बिगाड़ने दो
क्या हो गया
आग लगाने वाले को
तुम्हारे में कोई
गुण दिखाई ही नहीं देता
भगवान ने तो पसन्द किया है ना

अहंकार पतन की जड़ है।

तोलो फिर बोलो

कुसंग से अपनी सम्भाल करो।

इस ड्रामा में पार्ट बजाने
आये हैं –

कबिरा आप ठगाइये, और न ठगिये कोय।
आप ठगे सुख ऊपजै, और ठगे दुख होय॥

सदा स्वयं के पाँव दूसरों के जूते में डालकर देखिये। यदि आपको लगता है कि वह आपको तकलीफ पहुँचा रहे हैं तो दूसरों को भी पीड़ा पहुँचा सकते हैं। अतः दूसरों से ऐसा व्यवहार न करें जो आप स्वयं पसंद नहीं करते हैं।

चार चीजों का सदा सेवन करना चाहिए : सत्संग, संतोष, दान और दया।

नीम का बीज बोते हो मीठे फल कैसे मिलेंगे?

बड़े हुए तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर॥

न दुःख दो, न दुःख लो

Click To Enlarge

Click To Enlarge

आत्मा तो एक शरीर छोड़ जाकर दूसरा लेती है

नदी न अपना जल पीती
पेड़ न अपना फल खाते
पर-उपकार के लिए ही हम
ये अनमोल जीवन पाते

ज्यादा बोलने वाला गलती करेगा ही करेगा -

जो भी हमें आता है, भले अच्छा है चाहे वो फिर वस्तु हो, व्यक्ति हो, वैभव हो, जो भी अच्छा मिला है वो सब हमारे पुण्य का फल है -

अपनी जांच करते रहो - हमारे में कोई आसुरी गुण तो नहीं है -

जब मनुष्य के हृदय में दान देने अथवा कोई शुभ कार्य करने की रुचि उत्पन्न हो तो उसे भगवान की कृपा ही समझो।

कर्म को बोओ और आदत की फसल काटो। आदत को बोओ और चरित्र की फसल काटो। चरित्र को बोकर भाग्य की फसल काटो।

ज्यादा न बोलना अच्छा है -

शान्ति में रहना सबसे अच्छा है -

जैसे बछड़ा हजार गौओं के बीच में अपनी माता को ढूंढ लेता है, उसी प्रकार पहले का किया हुआ कर्म भी कर्ता को पहचानकर उसका अनुसरण करता है।

मीठा बोलना वाणी की सुंदरता है -

निष्काम कर्म ईश्वर को ऋणी बना देता है और ईश्वर उसको सूद सहित वापस करने के लिए बाध्य हो जाता है।

अंधकार जीवन की समस्या है, और प्रकाश उसका समाधान -

गुणों का दान करो तो गुणवान बन जाओगे

जिसके साथ गए उसका रंग तो नहीं लगा।

चीजें प्यारी लगती हैं, देने वाले को कैसे भूल गए -

Click To Enlarge

Click To Enlarge

Hindi Spiritual One Liners – Quotes – Short Stories – All Mix – Page 5

भजन करने वाले के हृदय पर किसी भी प्रकार का वजन नहीं रह जाता। तुम भजन तो करते हो फिर भी न वजन कम होता है ना ही कहीं आनन्द का पता है, फिर तुम से कौन प्रेरणा ले -

'जिस समय तुम वायुमण्डल के प्रभाव में आ जाओ तो एक अगरबत्ती अपने सामने जलाकर रखो और फिर सोचो, अगरबत्ती बनाने वाला कौन? आप मानव आत्मा ने ही तो इसे बनाया है ना! आप रचयिता हो और अगरबत्ती आपकी रचना है। फिर सोचो, क्या अगरबत्ती कभी कहती है, कड़वू है, मैं कैसे खुशबू फैलाऊं? फिर बाबा ने कहा, यह अगरबत्ती दुबली-पतली, तुम इससे भी गए गुजरे हो क्या?''

लालच का जाल

एक बार किसी संपन्न राज्य के राजा के पास एक साधु आए। राजा ने पूछा, 'आप की क्या सेवा करूं?' साधु बोले, 'महाराज, यह एक छोटा सा पात्र है, कृपया इसे भरवा दीजिए।' राजा बोला, 'महात्मा जी, इस छोटे से पात्र को अभी अमूल्य हीरे-जवाहरात व सोने-चांदी से भरवा देता हूं ताकि शेष जीवन आप को धन की जरूरत ही न पड़े।' राजा का आदेश पाते ही कोषाध्यक्ष ने उस पात्र को भरना शुरू कर दिया लेकिन वह भर ही नहीं पा रहा था। देखते-देखते सारा राजकोष खाली हो गया। राजा ने पूछा, 'महात्मा जी, यह पात्र किस धातु का बना है। मेरा खजाना खाली हो गया है लेकिन यह भर ही नहीं रहा।' साधु बोले, 'यह मनुष्य की खोपड़ी की हड्डी से बना है। इस कपाल की लिप्सा कभी पूरी नहीं होती।' यह सुनते ही राजा चौंक पड़े और उन्होंने विनयपूर्वक कहा, 'आप की बात सुन कर मेरी उत्सुकता बढ़ गई है। कृपया विस्तार से बताएं।' साधु ने समझाया, 'राजन, तृष्णा एक ऐसा गहरा गड्ढा है जिसे संपूर्ण पृथ्वी के हीरे आदि से भी नहीं भरा जा सकता है। यह तृष्णा मनुष्य को बंदर की तरह नाच नचाती है, कुत्ते की भांति दर-दर भटकाती है, उल्लू के समान सूरज के प्रकाश में भी अंधा बना देती है और मछली की तरह लोभ में फंसा कर जीवन को संकट में डाल देती है। तृष्णा के अनेक रूपों का शब्दों में वर्णन करना मेरी सीमा से बाहर है।' यह सुनते ही अचानक राजा की नींद खुल गई। उसके सपने ने एक बड़ी सीख दी थी।

अपने ऊपर ही तुम्हें दया नहीं आती तब दूसरों पर क्या दया करोगे -

कोई कुसंस्कार किसी शुभ संकल्प को दबा दे, उसके पहले ही उस पवित्र विचार को पूरा कर देना चाहिए।

पांच विकार कितना भी भगाएं लेकिन हम भगवान को जरूर याद करेंगे।

ज्ञान से ही संशय दूर होंगे

'लाख करे दुनिया,
तेरा साथ ना छोड़ेंगे
तेरा बनकर तुझसे ओ बाबा
मुख न मोड़ेंगे'

अपनी चलन सुधारो

आत्मा की उन्नति संस्कारों का परिवर्तन होता रहे।

पाप नहीं किया, पुण्य कितना किया

यद्यपि देखने में तो हमारा शरीर मनुष्य के समान है तथापि स्वभाव से तो कुत्ते-शूकर आदि के समान ही है।

Click To Enlarge

Hindi Spiritual One Liners – Quotes – Short Stories – All Mix – Page 6

मन का वशीकरण

मन के वश होने से तात्पर्य यह है कि मन में केवल वही संकल्प उठें जो मनुष्य को सद्‌मार्ग पर ले जाने वाले हों। मन बुरे संकल्प अर्थात् विकल्प करना छोड़ दे, अशुद्ध संकल्प मन में आएं ही नहीं, इसको ही मन पर जीत प्राप्त करना कहा जाता है। जैसे घोड़े को वश करने का अर्थ यह नहीं कि वह दौड़ना बंद कर दे, वह दौड़े बेशक परन्तु जिस ओर मालिक ले जाना चाहे वह उस ओर ही जाए, मनमाने मार्ग पर नहीं। मन रूपी अश्व के लिए विकारी मार्ग ही कुमार्ग है। जीवन की राह में मनुष्य के लिए विकार ही गड्ढे हैं जिनमें गिरने से उसे दुख तथा अशान्ति रूपी चोटें खानी पड़ती हैं।

... अगर पाप हो भी गया तो वह कृत्य है एक, वह तेरा स्वभाव नहीं है। वह भूल है, वह तेरा कोई स्वरूप नहीं है।

हजार काम आदमी कर रहा है, एक भूल हो जाती है, इससे कोई पापी नहीं हो जाता। कभी कोई आदमी बीमार हो जाता है, इसलिए बीमारी तुम्हारा स्वभाव नहीं हो जाती। कभी आदमी बुखार से भर जाता है, कभी क्रोध से भर जाता है, पर ये दुर्घटनायें हैं, ये तुम्हारा स्वभाव नहीं है। ये भूल-चूक है- ज्यादा से ज्यादा। अपराध इसमें कुछ भी नहीं है। कमजोरियां होंगी।

... सपने की भूल से ज्यादा नहीं है। जैसे रात तुमने सपना देखा कि किसी की हत्या कर दी है। अब सुबह तुम छाती पीट कर रोते नहीं। न ही तुम चिल्लाते-फिरते हो कि मैं महापापी हूं। अपना सपना था।

बिना ब्रह्मचर्य के कोई भी कभी योगी नहीं बन सकता -

मेरे लिए कर्म और किस्मत के मायने...

कर्म और किस्मत दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। हमारी किस्मत हमारे पूर्व कर्मों से बनती है और आज किए गए कर्म भविष्य का निर्माण करते हैं। कर्म वह बीज है जिससे किस्मत बनती है।

जब भी भगवान की वाणी करने का मन करे तो प्यार से भजन गाने लगो

(आत्मा शुद्ध होगी)

कमज़ोर बुद्धि का कारण है

अपवित्र संस्कार।

कम बोलो, धीरे बोलो, मीठा बोलो

गुण चोर होने से और चोर भाग जायेंगे।

आज का दिन भगवान का दिया हुआ उपहार है। ये पल ये घड़ी लौट कर नहीं आयेगी -

गीता में कहा गया है कि "कर्म पर तुम्हारा अधिकार है। तुम जो चाहो, कर सकते हो। इसकी स्वतंत्रता तो तुम्हें मिली है।" कर्म के फल की ओर नहीं देखना चाहिये। [illegible] एक बूढ़े से किसी ने पूछा, "अब आम का पेड़ लगाने से क्या फायदा? आपको तो फल मिलेंगे नहीं।" बूढ़े ने हंसकर जवाब दिया, "जो आम मैं खा रहा हूं, उसका पेड़ भी तो किसी ने लगाया ही होगा? यह मेरे पुण्य का काम है। आने वाली पीढ़ी के बच्चे फल खायेंगे।"

सच्चे हैं तो भगवान को प्यारे लगते हैं -

जिन बातों से तुम्हें कोई फायदा नहीं उनसे तुम अपने कान बन्द कर लो।

बुरा मत सोचो)
बुरा मत सुनो)
(बुरा मत देखो)
बुरा मत बोलो)
बुरा मत करो

Click To Enlarge

Click To Enlarge

Hindi Spiritual One Liners – Quotes – Short Stories – All Mix – Page 8

कामी मत बनो। काम से बचने का उपाय
कहा
"काम रसा को भोग प्यारे
राम रसा के प्याले पी प्यारे"
भगवान के नाम का स्मरण ही काम से बचने का उपाय है

दयालु ईसा

एक बार महात्मा ईसा अपने विचार प्रकट करने और प्रश्नों का उत्तर देने के लिए एक सभा में बुलाए गए। सभा में पहुँचते ही उन्होंने देखा कि वहाँ उपस्थित एक व्यक्ति हाथ की पीड़ा से बहुत कष्ट पाता हुआ कराह रहा है। महात्मा ईसा तुरंत उसका उपचार करने में लग गए। उनका यह कृत्य देख विरोधियों ने समझा कि वे सभा की कार्रवाई से कतरा रहे हैं। एक ने व्यंग्य करते हुए कहा, "ईसा! तो शास्त्रार्थ करने आया है, फिर उस मुख्य कार्य को छोड़कर हकीमी कैसे करने लगा?"

महात्मा ईसा ने बड़े शांतभाव से उत्तर दिया, "क्या तुममें से कोई ऐसा है, जिसके पास एक ही भेड़ हो और वह कुएँ में गिर जाए तो वह सारा काम छोड़कर उसे निकालने में न लगे? मेरा मुख्य काम तो पीड़ितों की सेवा करने का है, लोगों का दुःख-दर्द दूर करने का है। शास्त्रार्थ तथा व्याख्यान तो जीवन के साधारण कार्य हैं।

एक धनिक सेठ था- मदिरापान के दुर्व्यसन से ग्रस्त। चाहता था कि कोई ऐसा एक चतुर सेवक मिले जो इशारे में ही सारी बातों को ताड़ ले।
एक बार एक नौकर आया। सेठ ने कहा, "वेतन जो चाहो- दिया जा सकता है, पर एक कार्य के लिए मुझे बार-बार न कहना पड़े- यह याद रखना।"
नौकर बात समझ गया और वहीं रहने लगा। उसने मन में दृढ़ निश्चय कर लिया कि सेठ को दुर्व्यसन से किसी तरह बचाना चाहिए। एक दिन सेठ ने शराब की बोतल मँगवाई। नौकर ने बोतल लाकर सेठ के सामने रख दी। साथ ही कफन, मांस, दवाइयाँ, डॉक्टर और कफन की सामग्री भी ले आया। सेठ ने हैरान होकर पूछा, "यह सब क्या है?"
नौकर ने उत्तर दिया, "आप ही ने तो कहा था- एक बार में ही पूरी बात समझ आ जानी चाहिए। अतः सारी बात समझ कर मैं सब सामग्री एक साथ ले आया हूँ। देखिये, मद्य के साथ मांस भी चाहिए, सो यह तैयार है। इससे रोग होगा ही, अतः डॉक्टर भी तैयार और दवा भी। फिर इस दुर्व्यसन से मरना भी जल्दी पड़ता है, अतः जलाने के लिए कफन और लकड़ियाँ भी तैयार हैं। शवयात्रा के लिए लोगों को न्योता भी दे आया हूँ।"
सेठजी चुप थे, मन ही मन शर्मिन्दा भी।

प्रश्न : कितना समय ध्यान करना चाहिए?

जब तक आप ये भूल न जाये कि आप ध्यान कर रहे हैं, ध्यान करते रहिये।

सुनी सुनाई बातों पर विश्वास नहीं करो, अगर कोई उल्टी सुल्टी बातें सुनाये तो एक कान से सुन दूसरे से निकाल दो

आत्मा के ऊपर संग्रह और क्रोध का कचरा है उसे हटाकर 'आत्म-दर्शन' कर सकते हैं। इसे यही ध्यान-साधना करनी है।

आत्मा प्रेम स्वरूप है, किसी व्यक्ति से अगर प्यार का अनुभव होता है तो हम उस पर फ़िदा हो जाते हैं। वही व्यक्ति कुछ दिन के बाद अगर प्यार के बदले गुस्सा प्रदर्शित करे तो उससे भी दिल हट जाता है क्योंकि हमें प्यार चाहिए, व्यक्ति नहीं।

स्वप्न का संदेश

एक संत की साधना और भक्तिमय जीवन की बड़ी ख्याति थी। एक रात उन्होंने स्वप्न देखा कि उनकी मृत्यु हो चुकी है और वह एक देवदूत के सामने खड़े हैं। देवदूत सब मृत लोगों से उनके कर्मों का ब्योरा मांग रहा था। काफी देर बाद जब उनकी बारी आई, तो देवदूत ने उनसे पूछा, 'आप बताएं, आपने जीवन में क्या अच्छे कार्य किए जिनका आपको पुण्य मिला हो?' संत सोचने लगे- मेरा तो सारा जीवन ही पुण्य कार्यों में व्यतीत हुआ है, मैं कौन सा एक काम बताऊं। वह बोले, 'मैं पांच बार तीर्थयात्रा कर चुका हूं।' देवदूत बोला, 'आपने तीर्थयात्राएं तो कीं, लेकिन आप अपने इस कार्य की चर्चा हर व्यक्ति से करते रहे। इसके कारण आपके सारे पुण्य नष्ट हो गए।' संत को भारी ग्लानि हुई। फिर कुछ हिम्मत कर उन्होंने कहा, 'मैं प्रतिदिन भगवान का ध्यान और उनके नाम का स्मरण करता था।' देवदूत ने कहा, 'जब आप ध्यान करते और कोई दूसरा व्यक्ति वहां आता, तो आप कुछ अधिक समय तक जप-ध्यान में बैठते थे। चलिए कोई और पुण्य कार्य बताइए।' संत को लगा कि उनकी अब तक की सारी तपस्या बेकार चली गई। उनकी आंखों से पश्चाताप के आंसू बह निकले। इतने में उनकी नींद खुल गई। वह स्वप्न का संदेश समझ गए। वह समझ गए कि उन्हें अपनी साधना पर गर्व हो गया था। वे अपने त्यागमय जीवन के बदले दूसरों से कुछ अपेक्षाएं रखने लगे थे। उस दिन से उन्होंने स्वयं को बदलने का फैसला किया और सहज होकर साधना करने लगे।

एक दीन ब्राह्मण के रूप में इंद्र कर्ण के पास दान मांगने आए। कर्ण की उदारता की उन्होंने अपार प्रशंसा की और कहा, 'आप ना' कहते ही नहीं। कितना त्याग करते हैं आप।' तब कर्ण ने ब्राह्मण से कहा, 'भगवन्, आप गलती कर रहे हैं। मैं दान नहीं देता, बल्कि कुछ प्राप्त ही करता हूं। यह बात लोगों के ध्यान में नहीं आती। सालों से जिन चेहरों पर दीनता थी, उन पर आयी मुस्कराहट, निराश लोगों के जीवन में आयी थोड़ी-सी आशा, दोनों आंखों में लबालब भरे कृतज्ञता के आंसू और थरथराते हाथों से तथा होंठों से फूटने वाले आशीर्वचन, इससे अधिक कीमती भला क्या हो सकता है?'

Click To Enlarge

Hindi Spiritual One Liners – Quotes – Short Stories – All Mix – Page 9

तनाव मुक्त जीवन

परिस्थिति तनावपूर्ण नहीं है बल्कि उसके प्रति हमारा दृष्टिकोण ही तनाव अथवा खुशी निर्माण करता है।

एक महिला ने अपने पति को उसके जन्म दिवस पर दो टाईयाँ उपहार के रूप में दीं। कुछ दिनों बाद एक पार्टी में आते समय उसके पति ने एक टाई पहनी तो उस महिला को टेन्शन आ गया। उसने सोचा कि क्या उसके पति को दूसरी टाई पसंद नहीं आयी? यह ग़लत विचारधारा का परिणाम है। उसके पति को दोनों टाईयाँ पसंद आयी हों तो भी वह दोनों टाईयाँ एक साथ तो नहीं पहन सकता। इसलिए तनाव से मुक्ति प्राप्त करने के लिए हमें विचारधारा में परिवर्तन लाना होगा।

देखने वाले ने कीचड़ में भी कमल देखा तो किसी ने चांद में भी दाग देखा।

लोग आपसे जिस तरह व्यवहार करते हैं वह उनका कर्म है और जिस तरह आप रिएक्ट होते हैं, वह आपका कर्म है।

कर्म है बीज, बीज अच्छा है तो फल भी अच्छा ही होगा।

Click To Enlarge

देखने को भी मिला न हो, इतना वैराग आना चाहिए। कांटे को कोई देखता है भला -

मतभेदों का प्यार मिटाने वाला है, भगवान का प्यार उठाने वाला है

प्यार में गणित का क्या काम.

गृहस्थी में जिस प्रकार धन की जरूरत होती है, उसी प्रकार परमार्थ में भक्ति की जरूरत होती है। बिना धन के गृहस्थी चल नहीं सकती, उसी प्रकार बिना भक्ति के परमार्थ हो ही नहीं सकता। जैसी आपकी भक्ति होगी, वैसी आपकी भावना होगी, उसी प्रकार आपको ईश्वर प्राप्ति होगी।

भक्त प्रह्लाद की कथा इस बात का प्रमाण है। उसे तो एक स्तम्भ में ईश्वर की प्राप्ति हुई। सन्त नामदेव महाराज ने ईश्वर की पत्थर की मूर्ति को खाना खिलाया। गोकुल की गोपियों की कृष्णभक्ति तो सर्वविदित है, एक गोपी की इच्छा थी कि वह कृष्ण को अपने हाथों से खाना खिलाए। पति ने उसे ऐसा करने से रोका। गोपी ने उससे कहा, 'मेरी देह पर आपका अधिकार है, किन्तु मन पर नहीं।' उसने अपनी देह वहीं पर छोड़ दी और वह श्रीकृष्ण को भोजन कराने चली गयी।

इसी प्रकार हमें भी परमार्थ में भावना रखना जरूरी है।

बुद्ध के जीवन में एक घटना आती है। उनके शिष्य एक व्यक्ति को लेकर आए और उसे धर्म-तत्त्व समझाने की प्रार्थना की, क्योंकि उनके उपदेशों को वह समझ नहीं पा रहा था। बुद्ध ने कहा- "पहले इसे खाने को दो। यह भूखा है। पेट भर जाने के बाद समझेगा धर्म। भूखे पेट को धर्म की बात करना उसका अपमान करना है।

धर्म का लक्ष्य है- शांति।

चिंतामणि नामक एक युवा था। वह बहुत ही चिंतित रहता था। छोटे-छोटे कार्यों में भी उसे तनाव आ जाता था। बात-बात में गुस्सा करना, लड़ाई-झगड़ा करना जैसे कि उसका धंधा बन गया था। पड़ोस में रहने वाले खुशालसिंह को देख उसे बहुत ही आश्चर्य लगता था क्योंकि खुशालसिंह सदा खुश रहता था। हरेक को प्यार बांटता था। सभी उसे सम्मान देते थे। एक दिन चिंतामणि ने खुशालसिंह को पूछ ही लिया कि आप इतने खुश कैसे रहते हो? तब खुशालसिंह उसे सिर्फ देखता ही रहा। चिंतामणि के बार-बार पूछने पर खुशालसिंह ने एक ही जवाब दिया कि जो एक सप्ताह तक ही जीवित रहने वाला हो, उसे क्या बताऊँ? यह सुन कर चिंतामणि बहुत ही हैरान हो गया लेकिन खुशालसिंह एक माना हुआ ज्योतिषी था, इसलिए उसकी बात पर विश्वास करना पड़ा। अब चिंतामणि को जीवन के मूल्य का बोध होने लगा। वह सभी से प्यार भरा व्यवहार करने लगा। हरेक को सुख देने लगा। भगवान को बहुत ही प्यार से याद करने लगा। उसके जो दुश्मन बन गये थे, उनसे भी माफी मांग ली। चिंतामणि का जीवन खुशियों से भर गया। इसी खुशी में वह यह भी भूल गया कि वह सिर्फ एक सप्ताह का ही मेहमान है। प्रसन्नचित्त चिंतामणि को देखकर खुशालसिंह ने कहा - 'क्यों चिंतामणि, मेरी एक छोटी-सी असत्य बात ने तुम्हें जीवन की सच्चाई समझा दी ना! अंतिम घड़ी की स्मृति ने तुम्हारे जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला दिया ना!' कृतज्ञ चिंतामणि ने नम्रता से सिर झुका लिया।

संत ज्ञान देता है, वैराग्य नहीं देता। ज्ञान से वैराग्य सहज उत्पन्न होता है। प्रकाश का काम क्या है? प्रकाश अंधकार की निवृत्ति करता है। उसके सहारे मार्ग का अन्वेषण तो चलने वाला खुद ही करता है।

वैराग्य क्या है? यह किसी क्रिया का नाम नहीं है। इसलिए वैराग्य किया नहीं जाता है, हो जाता है। किया हुआ वैराग्य त्याग तो करा देता है लेकिन त्याग नहीं टिकता रहता है। इसलिए वैराग्य करना नहीं चाहिए। वैराग्य तो होना चाहिए।

छिप कर किया गया पाप जीवन भर कांटे की तरह चुभता है

मन को वश करने का तात्पर्य है कि मन में केवल वहीं संकल्प उठें जो मनुष्य को सद्मार्ग पर ले जाएं।

Click To Enlarge

श्रेष्ठ कर्म का फल श्रेष्ठ ही होता है

ऐसा मज़ाक़ अच्छा नहीं जिससे दोस्ती में फ़र्क़ आए।

जो चाहिए वो देना सीखो
प्यार चाहिए, सुख चाहिए
बीज होगा, तो फल होगा

भगवान को याद करने से
फायदा ही फायदा है

अपने मित्र को मज़ाक में भी
दुःख मत पहुंचाओ.

हमें यह तो सिखाया ही नहीं जाता
कि किस प्रकार हमारा भोलापन बना
रहे

मनुष्य की इज्जत धन
बढ़ने से नहीं है,
प्रत्युत धर्म बढ़ने से है।

भगवान को भी लगे कि यह मेरा
पर्सनल बच्चा है

खुद को भूल कर ही खुदा को
पाया जा सकता है

जितना बड़ा संघर्ष, उतनी बड़ी
उपलब्धि -

होली

होली - होली के तीन अर्थ हैं -
होली - बीती-सो-बीती
होली - पवित्र (Holy)
होली जलाना - बुराइयाँ समाप्त करना
गुलाल है - ज्ञान का
रंग है - खुशी का

यदि आपका घर कचरे से भरा होगा तो आप आसानी से चल-फिर नहीं सकेंगे। इसी प्रकार यदि आपका मन गलत विचारों रूपी कचरे से भरा है तो आपको इस कचरे को बाहर फैकना होगा, जिससे कि स्वस्थ विचारों के लिए जगह बन सके।

Click To Enlarge

सुख देने वाले शब्द बोलने वालों के पास दुःख दर्द कभी नहीं फटकता।

जब आप गुस्से में हों तब कोई फैसला न लें और जब आप खुश हों तब किसी से वादा न करें।

शिष्यों की परीक्षा

एक गुरु के दो शिष्य थे। दोनों गुरु के पास रहकर शास्त्रों की शिक्षा ग्रहण करते थे। एक दिन गुरु ने उनकी परीक्षा लेने का निश्चय किया। उन्होंने एक शिष्य को बुलाकर पूछा, 'बताओ, यह जगत कैसा है?' शिष्य ने कहा, 'गुरुदेव, यह तो बहुत बुरा है। चारों तरफ अंधकार ही अंधकार है। आप देखें, दिन एक होता है और रातें दो। पहले रात थी। अंधेरा ही अंधेरा छाया था। फिर दिन आया और उजाला हुआ। लेकिन पुनः रात आ गई अंधेरा छा गया। एक बार उजाला, दो बार अंधेरा। अंधेरा अधिक, प्रकाश कम। यह है जगत।' गुरु ने उस शिष्य की बात सुनने के बाद दूसरे शिष्य से भी यही प्रश्न पूछा। दूसरा शिष्य बोला, 'गुरुदेव, यह जगत बहुत ही अच्छा है। यहां चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश है। रात बीती उजाला हुआ। सर्वत्र प्रकाश फैल गया। रोशनी आती है तो अंधकार दूर हो जाता है। यह सबकी मुंदी हुई आंखों को खोल देता है, यथार्थ को प्रकट कर देता है। कितना सुंदर और लुभावना है यह जगत कि जिसमें इतना प्रकाश है। देखता हूं, दिन आया, बीता। रात आई, बीती। फिर दिन आ गया। इस प्रकार दो दिनों के बीच एक रात। प्रकाश अधिक, अंधकार कम।' गुरु ने फिर दोनों शिष्यों को बुलाकर कहा, 'यह जगत अपने आप में कुछ नहीं है। यह वैसा ही दिखता है जैसा हम इसे देखते हैं।' उन्होंने पहले शिष्य को दूसरे शिष्य की बात बताई और कहा, 'अगर हम इसे सकारात्मक दृष्टि से देखेंगे तो यह हमें बहुत सुखद लगेगा। इसलिए तुम अपना दृष्टिकोण सकारात्मक बनाओ।'

आपकी इच्छाएं बहुत अच्छी और पॉजिटिव होनी चाहिए जैसे - खुशी देने और लेने की चाहत, शांति की चाहत, आपसी मेल-जोल और मैत्रीपूर्ण संसार की चाहत

दुनिया करे काम, मैं करूं आराम

पहले अभावों में खुशियां थीं,
अब खुशियों का अभाव है

कलियों के पास से गुजरते ही माली को सुगंध आती है।

अति का भला न बोलना,
अति का भला न चुप।
अति का भला न बरसना,
अति की भली न धूप।

एक महात्मा बैठे थे। उनके पास एक कुत्ता आकर बैठ गया। तब किसी असभ्य मनुष्य ने महात्मा से आकर पूछा –आप दोनों में से श्रेष्ठ कौन है? महात्मा ने कहा - यदि मैं अपना जीवन मानव सेवा और परोपकार में लगाता हूँ तब तो मैं श्रेष्ठ हूँ और यदि मैं मानव होकर भी भोग-विलास में जीवन व्यतीत करता हूँ तो मेरे जैसे सैकड़ों मनुष्यों से यह कुत्ता श्रेष्ठ है।

अपनी जिह्वा पर वही नियन्त्रण कर सकता है जिसका मन पर नियन्त्रण हो। और मन पर नियन्त्रण उसी का होता है जिसकी बुद्धि बलशाली और विवेक युक्त हो। और बुद्धि उसी की बलशाली व विवेक युक्त होती है जिसमें सत्य-असत्य का प्रखर निर्णय हो और जिसमें पवित्रता व तपस्या की शक्ति हो।

आहत करने से आहत होता है

Click To Enlarge

Click To Enlarge

Click To Enlarge

Q: दूसरों के प्रति शुभ भाव, शुभ भावना और शुभ कामना क्यों रखनी है?

Ans: हम शांत बैठे हैं कहते हैं तो इसको देखते ही मुझे गुस्सा आता है इसने मुझे ऐसा कहा तो मुझे कड़वा बोलना पड़ा। संस्कार तो सबके हैं लेकिन निमित्त के प्रति शुभ भावना इसीलिए तो रखनी है ताकि वो शांत रहेगी तो मैं भी शांत रहूँगी।

बहुमूल्य रत्न

एक बार राजा कृष्णदेव के निमंत्रण पर भक्त पुरंदर दास राजमहल में पधारे। जाते समय राजा ने दो मुट्ठी चावल उनकी झोली में डालते हुए कहा, 'महाराज, इस छोटी सी भेंट को स्वीकार करें।' राजा ने बड़ी चतुराई से इन चावलों में कुछ हीरे मिला दिए थे। पुरंदर दास की पत्नी ने घर पर चावल साफ करते समय देखा कि उनमें कुछ बहुमूल्य रत्न भी हैं, तो उन्होंने उन्हें अलग करके कूड़ेदान में फेंक दिया। इसके बाद पुरंदर दास को प्रायः रोज ही किसी न किसी कारण से दरबार में आना पड़ा। राजा रोज ही उन्हें दो मुट्ठी चावल के साथ हीरे मिलाकर देते और मन में यही सोचते कि यह ब्राह्मण भी धन के लालच से मुक्त नहीं है। एक दिन राजा ने कहा, 'लालच मनुष्य को आध्यात्मिक उपलब्धियों से दूर कर देता है। आप स्वयं ही अपने विषय में विचार करें।' राजा की यह बात सुनकर पुरंदर दास को बेहद दुख हुआ। वह अगले दिन राजा को अपना घर दिखाने ले गए। उस समय पुरंदर दास की पत्नी चावल साफ कर रही थीं। राजा ने पूछा, 'देवी, आप क्या कर रही हैं?' वह बोलीं, 'महाराज, कोई व्यक्ति भिक्षा के चावल के साथ कुछ पत्थर मिलाकर हमें देता है। वैसे ये बहुमूल्य रत्न हैं, लेकिन हमारे लिए इनका कोई मूल्य नहीं है। अन्न तो खाना ही है, इसलिए उन्हें निकाल कर अलग कर रही हूं।' राजा ने अपने उन सभी बहुमूल्य रत्नों को कूड़ेदान में पड़े देखा तो आश्चर्यचकित रह गए। फिर उस भक्त दंपती के चरणों में गिर कर उन्होंने अपने आरोप के लिए क्षमा मांगी।

भक्ति

आंखें बंद करके फिर जाओ पूछना नहीं है पाप लगेगा। अगरबत्ती जला दी, घंटी बजा दी, नारियल फोड़ दिया, पेड़े बांट दिये काम हो गया।

हमारी समझ, हमारे विचार ही ठीक हैं। हम सोचते हैं कि जो कुछ हमने सोच लिया, जो हमने कर दिया वही ठीक है, बाकी सब गलत है।

सब की अलग-अलग संस्कृतियां हैं सब का अपना-अपना तरीका है भगवान की पूजा कुछ अलग कुछ नए ढंग से भी हो सकती है।

सत्य की राह

एक चोर था। एक दिन उसे एक महात्मा मिले। महात्मा ने उससे कहा कि अगर वह हमेशा सत्य बोले तो उसका कल्याण होगा। चोर को यह कठिन काम नजर आया पर चूंकि वह महात्मा से बहुत प्रभावित हुआ था, इसलिए उसने उनकी बात पर अमल करने का फैसला किया। एक दिन वह राजमहल में चोरी करने गया। बाहर निकलते ही वह पकड़ा गया। द्वारपाल ने पूछा, 'तुम इतनी रात में यहां क्या कर रहे हो?' चोर ने कहा, 'मैं चोर हूं और चोरी करके वापस जा रहा हूं।' द्वारपाल को उसकी बात मजाक लगी। वह हंसने लगा। उसने चोर के हाथ में पोटली देखी तो पूछा, 'इसमें क्या है?' चोर बोला, 'इसमें रानी के गहने हैं।' द्वारपाल ने पोटली खोली तो उसमें सचमुच गहने थे। चोर को अगले दिन राजा के सामने पेश किया गया। राजा ने कहा, 'तुम जानते हो राजमहल में चोरी के लिए मृत्युदंड भी दिया जा सकता है, फिर भी तुम कह रहे हो कि तुमने चोरी की है।' चोर ने कहा, 'महाराज मैंने तय कर लिया है कि केवल सत्य ही बोलूंगा।' राजा ने कहा, 'अगर अभी भी तुम कहो कि तुमने चोरी नहीं की है तो तुम्हें माफ किया जा सकता है।' चोर ने कहा, 'मैं सत्य से नहीं हटूंगा। चोरी मैंने ही की है।' राजा ने कहा, 'तो ठीक, तुम्हें सजा मिलेगी। तुम्हारी सजा यह है कि तुम आज से हमारे साथ रहोगे। तुमने विवशता में चोरी करना भले शुरू कर दिया पर तुम में सत्य को अपनाने और उस पर टिके रहने की शक्ति है। मुझे ऐसे ही लोगों की आवश्यकता है।'

Click To Enlarge

Click To Enlarge

आत्मा को पानी गीला नहीं कर सकता
हवा उड़ा नहीं सकती
आग जला नहीं सकती
तलवार काट नहीं सकती

दीवाली के शुभ अवसर
पे याद आपकी आई,
शब्द शब्द जोड़कर
देते तुम्हें बधाई,
दीवाली मुबारक

ना जुबान से,
ना निगाहों से,
ना दिमाग से,
ना रंगों से,
ना ग्रीटिंग से,
ना गिफ्ट से,
आपको दीवाली मुबारक
हो डायरेक्ट दिल से।
शुभ दीपावली

अगर आप मित्र बनाओ तो हंस गाय के समान बनाओ। दोस्ती दूध और पानी की तरह होनी चाहिए। सच्चा मित्र वह है जो तुम्हें पाप से बचाए, पुण्य में लगाए

कोई कुछ करता है लोग उसी के पीछे पड़ते हैं पेड़ में फल हैं तभी तो पत्थर मारते हैं

कर्मेन्द्रियों से कोई विकर्म नहीं करो।

असली सवाल यह है कि भीतर तुम क्या हो? अगर भीतर गलत हो, तो तुम जो भी करोगे, उसका गलत फलित होगा। अगर तुम भीतर सही हो, तो तुम जो भी करोगे, वह सही फलित होगा।

है ही कर्मक्षेत्र, कर्मक्षेत्र पर तो जरूर काम ही करना पड़ेगा

तुम्हारे मन मन्दिर में बहुत सारा कचरा जमा हो गया है उसे अब वाणी की झाड़ू से साफ करो -

ना दिमाग से,
ना जुबान से,
ना पैगाम से,
ना मैसेज से,
ना नजराने से,
आपको हैपी दीवाली
डायरेक्ट दिल से!
शुभ दीपावली

दीवाली के इस
मंगल अवसर पर,
आपकी सभी
मनोकामना पूरी हो,
खुशीयाँ आपके
कदम चूमे,
इस कामना के साथ
आप सभी को
ढेरों बधाईयाँ।

धन का उपयोग इस तरह से करो कि दुनिया देख तो सके लेकिन ले न सके। सदुपयोग करोगे तो वो दिखाई देगा ही। अगर धर्मशाला बनवा दी, वो दिखाई तो देगी लेकिन धन तो तुम्हारे पास ही रहा पुण्य भी मिलता रहेगा

Click To Enlarge

Click To Enlarge

सफल व्यक्ति कोई महान कार्य नहीं करते बल्कि वे छोटे कार्यों को ही महान ढंग से करते हैं।

लोगों के छिपे हुए ऐब जाहिर मत करो। इससे उनकी इज्जत जरूर घट जाएगी, मगर तुम्हारा तो एतबार ही उठ जाएगा।

दिव्य गुण भगवान के नजदीक लाते हैं लेकिन अवगुण मनुष्य को भगवान से दूर कर देते हैं।

जो आध्यात्मिक पथ पर बढ़ाता है वही साधु है.

भक्त क्या करेगा? दुर्जन की संगत नहीं करेगा।

अब सब किनारे छोड़ घर चलने की तैयारी करो

दुर्जन कौन है. ऐसा मनुष्य जिसका संग करने से हम गिरती कला में जायें पतन होता है.

किसी [illegible] जीत सकते हैं।

सेवा से ही रिश्ते-नाते पक्के बनते हैं

मीठे बच्चे! हर संकल्प में पुण्य जमा हो बोल में दुआयें जमा हों।

आपकी अन्तरात्मा आपका अच्छा मित्र है उसकी बार-बार सुनें।

विनम्रता ही आदमी को बड़ा बनाती है

धर्म का कार्य मनुष्य के हृदय को विशाल बनाना है।

हम सिखाते हुए भी सीखते हैं

यदि मैं किसी के लिए अच्छा करता हूँ तो मेरे साथ भी अच्छा होगा।

Click To Enlarge

बकरी दूध तो दे देगी लेकिन मींगन डाल देगी। पूरा सम्मान खातिरी की लेकिन जाते समय दु:ख दाई शब्द बोल दिए। बोल पर विशेष ध्यान रखो - मार का घाव भर जाता है, लेकिन बोलका -

सहनशीलता का अथाह भण्डार है नारी

माचिस की तीली से हम चाहें तो भगवान के मंदिर में जाकर दीया जला सकते हैं और चाहें तो सारे संसार को आग भी लगा सकते हैं। तीली वही है लेकिन हमारे प्रयोग का तरीका अलग-अलग है। उसी तरह, नारी सतयुग में भी थी, आज भी है लेकिन हमने उसे समझा नहीं। हमारा उसे देखने का नजरिया बदल गया,

सब कुछ चुनते हैं, गलत विचार आये, तो फिर उसे भी चुनो ना -

घर की शोभा बुद्धिमान लोगों से है -

जैसे बर्तनों को राख से साफ किया जाता है, कपड़े को साबुन से धोया जाता है और शरीर को पानी से स्वच्छ किया जाता है, वैसे ही बुद्धि को पवित्र बनाने का साधन ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग ही है।

तुम उद्दंडता करो और शान्त वाले से उम्मीद करो की तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार करेगा ये हो नहीं सकता - धूर्त व्यक्ति के साथ धूर्तता का ही व्यवहार होगा -

जो मिटता है वही उसे पाता है। मिटना ही उसे पाने की कला है। बूंद जब सागर में मिट जाती है तो सागर हो जाती है।

नारियल (ना रियल) जो है वो नहीं हूं।

पुण्य ज्यादा हों तो फिर कितनी भी मुसीबत में फंसे हों लेकिन रक्षा हो ही जाती है। कोई मार नहीं सकता - धार्मिक वृत्ति हमारी रक्षा करती है -

Click To Enlarge

इन्सान गड़बड़ करता है। कभी बिच्छू की तरह, कभी कुत्ते की तरह, कभी गिरगिट की तरह न जाने क्या-क्या करते हैं। अच्छे के साथ सभी अच्छे हैं -

सौभाग्य को पुण्य कहा जा सकता है
दुर्भाग्य को पाप कहा जा सकता है

जैसा कर्म होता है
भाग्य वैसा ही बन जाता है -

नाटक - ना अटक

पुरुषार्थ से ही होता है भाग्य का निर्माण

कहो कम, लेकिन करके दिखाओ -

धीरे-धीरे व्यर्थ से विकारी बन जाते हैं। जैसे आलू के छिलके व्यर्थ होते हैं पर यदि दो दिन पड़े रहें तो बदबूदार भी हो जाते हैं अतः व्यर्थ बात दो घड़ी भी मन में पड़ी रहेगी तो विकार उत्पन्न करेंगे। अतः जितना जल्दी हो सके इन्हें निकाल दीजिए।

Qus: सीता का साथ क्यों छूटा? कारण.

Ans: लकीर का उल्लंघन किया। मर्यादा की लकीर के बाहर बुद्धि जरा भी ना जाए - बुद्धि रूपी पांव मर्यादा की लकीर से संकल्प वा स्वप्न में भी बाहर ना निकले।

Click To Enlarge

विरोध हो तो अपने ऊपर विशेष ध्यान दो -

परमात्मा बुलाता है आत्मा की प्यास

अच्छा घी थोड़ा भी चल जाता है।
मिलावट वाला ....

अगर आप किसी से बदला लेना चाहते हैं, उसने आपके साथ बहुत बुरा किया, तो फिर आपको उसके साथ बहुत अच्छा व्यवहार करना होगा।

तुम ये बताओ कि तुम्हें भगवान का भजन करना पड़ता है कि भगवान का भजन होता है

जहां प्यास नहीं होती, वहां बारिश भी नहीं होती। बादल भी वहीं बरसते हैं, जहां धरती प्यासी हो। लोग कहते हैं कि भजन करते हैं, पर मन नहीं टिकता। मन कैसे टिके? जिस दिन भीतर प्रेम की अग्नि प्रगट हो जाएगी, उस दिन मन टिकाना नहीं पड़ेगा, मन तो ऐसा टिक जाएगा कि फिर ये कहोगे कि इस मन को मालिक के ध्यान से हटाएँ कैसे? यह प्रश्न प्रेमी का नहीं हो सकता कि मन लगाएं कैसे? बहुत हो सके तो प्रेमी यह पूछ सकता है कि मन हटाएं कैसे?

दुःख नहीं देता लेकिन सुख देता है।

सुर साध लें तो हम भी देवता बन सकते हैं -

किसी को समझाना है हैं समझते तो मानता ही है ना -

मैं शरीर रूपी मकान मेरा नहीं है बाबा इस मकान का मालिक है चाहे जब निकाल दे -

जो बात अच्छी लगे बार - बार रिवाइज करो -

मृत्यु क्या है -
Dress और Address ही तो बदला है -

जब तक कच्चे हो बोलते हो पकने पर चुप हो जाओगे (छोटा बच्चा कितना बोलता है) बुजुर्ग सिर्फ मुस्कुराता रहता है मान गए अब कभी बोलो -

Click To Enlarge

Click To Enlarge

नए साल के लिए
शुभ संदेश

"पुरानी और परायी बातों को बिन्दी लगाकर, श्रेष्ठ कर्म द्वारा श्रेष्ठ संस्कार बनाओ"

अब घर जाने का समय है, अचानक कुछ भी हो सकता है
ध्यान रहे, कोई भी नया हिसाब-किताब न बने, पुराना भी याद के बल से खत्म होता जाये –

नये साल में उमंग-उत्साह और इन संकल्पों को साकार करने की आप सबको बधाई हो! बधाई हो! बधाई हो!

फुल खिलते रहे
जिंदगी की राह में,
हँसी चमकती रहे
आपकी निगाह में,
कदम कदम पर
मिले खुशी की
बहार आपको, दिल
देता है यही दुआ
बार बार आपको।

इक दुआ माँगते
है हम अपने
भगवान से,
चाहते है आपकी
खुशी पुरे इमान
से, सब हसरतें
पुरी हो आपकी,
और आप
मुस्कुरायें दिलो
जान से। जन्मदिन
पर शुभकामनाएँ।

अब घर जाना है (अपने घर जाने की तैयारी करो)

शरीर के साथ - साथ
आत्मा को भी सजाना
संवारना चाहिए।

खुदा हर रात चाँद
बन कर आये,
दिन का उजाला
शान बन कर
आये, कभी दूर ना
हो आपके चेहरे से
हँसी, हर नया
दिन ऐसा मेहमान
बन कर आये।
जन्मदिन मुबारक

सुख अपनी सीमाओं में रहने से मिलता है

Click To Enlarge

एक बार एक महिला ने अपनी सखी को पत्र लिखा कि मैं सास बनने वाली हूँ, मुझे किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए। सखी ने बहुत सुन्दर उत्तर दिया, मीठी बहन, अगर हम बाजार से नई कुर्सी खरीदकर लाते हैं तो उसे रखने के लिए जगह बनानी पड़ती है, यदि नई कटोरी खरीदकर लाते हैं तो कई पुरानी कटोरियों को खिसकाकर जगह बनानी पड़ती है, बहू तो चेतन प्राणी है, उसके लिए भी जगह बनानी पड़ेगी, घर में भी और दिल में भी।

कोई व्यक्ति अपनी जगह से उखड़कर हमारे पास आ गया तो उसे समाने और उसके साथ समायोजन करने के लिए हमें अपने पुराने ढर्रे से थोड़ा हिलना तो पड़ता ही है। यदि हम कहें, हम तो जैसे थे, वैसे ही रहेंगे, ज़रा भी नहीं हिलेंगे तो वह नया व्यक्ति अपने को सेट करने की कोशिश में कई बार हमसे टकरा सकता है। यदि हम टक्कर नहीं चाहते, उसे साथ भी रखना चाहते हैं तो थोड़ा खिसकने में और उदारदिल से उसे अपनाने में ही भलाई है।

उगता हुआ सुरज
दुआ दे आपको,
खिलता हुआ फूल
खुशबु दे आपको,
मैं तो कुछ दे
नहीं सकता,
देने वाला लंबी
उमर दे आपको।

अच्छा बना लीजिए

एक बार एक व्यक्ति ने भगवान से शिकायत की, भगवान सबको आपने सब कुछ बढ़िया-बढ़िया दिया, मुझे ही अच्छे साथी-सहयोगी नहीं दिए। भगवान का जवाब आया, ऐसा मैंने जानबूझकर तुम्हारा भाग्य बनाने के लिए किया है क्योंकि भाग्यशाली वो नहीं होते जिन्हें सब कुछ अच्छा मिलता है, भाग्यशाली वो होते हैं जो मिलने वाली हर चीज़ को अच्छी से अच्छी बना देते हैं।

इस शरीर को सहन कर सकते हैं तो व्यक्ति को क्यों नहीं?

देने वाला कभी खाली नहीं होता
और लेने वाला कभी भरता नहीं

ज़िंदगी आवाज के साथ शुरू होती है, मौन के साथ खत्म। प्यार भय के साथ शुरू होता है, आंसुओं के साथ खत्म। लेकिन सच्ची दोस्ती कहीं भी शुरू हो सकती है और कभी खत्म नहीं होती।

गाँधीजी ने तीन बंदरों के माध्यम से जीवन का संदेश दिया था लेकिन वर्तमान वैज्ञानिक युग में चार बंदरों के माध्यम से इस संदेश को समझें – बुरा मत सोचो, बुरा मत देखो, बुरा मत सुनो एवं बुरा मत बोलो। जब तक हम बुरा सोचते रहेंगे तब तक बुरा देखेंगे भी, सुनेंगे भी एवं बोलेंगे भी। लेकिन बुरा सोचना बंद कर दें तो शेष तीनों चीज़ों पर अंकुश

बर्फ हाथ में लेकर ... नवयुवक बोला, 'इस बर्फ को आप एक व्यक्ति के हाथ से दूसरे व्यक्ति के हाथ में देते जाइए।' नवयुवक की बात सुनकर वह बर्फ एक हाथ से दूसरे हाथ में जाती रही और धीरे-धीरे पिघलकर बहुत कम रह गई। यह देखकर वह नवयुवक बोला, 'महाराज, जिस तरह यह बर्फ अनेक हाथों में जाने के बाद अपने वास्तविक रूप से बहुत कम रह गई है, ठीक उसी प्रकार

Click To Enlarge

दो आदमियों में झगड़ा हो गया एक ने दूसरे के मुंह पर थूक दिया। जिसके मुंह पर थूका गया था वो था सत्संगी पास ही में एक पानी की बोतल पड़ी थी उसने मुंह धोया और जाने लगा तो किसी ने पूछा तुम्हें गुस्सा नहीं आया। थूका है तो, गुस्सा तो आया फिर सोचा पानी से काम चल सकता है तो फिर पत्थर से क्यों काम लूं-

स्वीकार कीजिए कि मेरे जीवन में जो कठिनाई या भाव-स्वभाव की टक्कर है उसका कारण मेरा बोया हुआ बीज है। उसे अंकुरित होने, बड़ा होने और फलने-फूलने में इतना समय लग गया पर अब मुझे अपने बोए बीज का फल स्वीकार करना ही पड़ेगा। दूसरों की तरफ उंगली बिल्कुल नहीं करनी, अपने को ही पल-पल सुधारना है।

क्षण भर की सकारात्मक सोच का चमत्कार

जीवन में क्षण भर की भी सकारात्मकता सुन्दर परिणाम दे सकती है, इसके लिए रामायण (भक्तिमार्ग के शास्त्र) से प्रेरणा लीजिये। कहते हैं, लंका पर चढ़ाई के लिए समुद्र पर सेतु का निर्माण होने लगा। लंका में बेहिसाब दहशत फैल गई। लोग चर्चा करने लगे कि राम के नाम में भी कैसी ताकत है, राम नाम अगर पत्थर पर लिख दिया जाये तो वह तैरने लगता है। जब नाम में इतनी ताकत है तो स्वयं राम में कितनी ताकत होगी! रावण ने भी पत्थर पर अपना नाम लिखकर उसे तैराया तब प्रजा आश्चर्यचकित हो गई कि यह कैसे हुआ। मंदोदरी ने रावण से सवाल किया तो रावण ने कहा, पत्थर पर नाम तो रावण लिखा गया था लेकिन जब पत्थर को समुद्र में छोड़ा गया तो मैंने कहा, हे पत्थर, तुम्हें राम की सौगंध है अगर तुम डूब गये तो, बस, पत्थर पानी पर तैरने लगा। आशय यह है कि एक क्षण भर के लिए रावण की सोच राम के प्रति सकारात्मक हुई, जिसका यह परिणाम हुआ। यदि सारा जीवन सकारात्मक हो जाये तो कितना चमत्कार हो जाए?

आदमी अपने हाथ में खिंची हुई लकीरों को मिटा तो नहीं सकता लेकिन अपनी मानसिकता को बेहतर बनाकर अभाव में भी श्रेष्ठ स्वभाव का आनन्द ले सकता है। मानसिकता को बेहतर बनाएँ, भाग्यदशा अवश्य बदलेगी।

एक कहता है, पौधे पर काँटे लगे हैं; दूसरा कहता है, पौधे पर कलियाँ फूट आई हैं; दोनों के नज़रिये में क्या फर्क है? समझिए और अपना नज़रिया ठीक कीजिए। ❖

मदर टेरेसा जैसी सुंदरता तो सारी दुनिया में अभी तक किसी को नहीं मिली उनकी सुन्दरता ने अनेक लोगों को भी सुन्दर बनाया। इनकी सुन्दरता जीवन के अंतिम पड़ाव तक निखरती गई, चाहे मुँह में दांत नहीं थे, सिर के बाल सफेद थे, चेहरे पर झुर्रियाँ थीं। भले ही उन्हें विश्व सुन्दरी का खिताब न मिला हो पर उनकी सुन्दरता आज भी लोगों के मानस पटल पर अंकित है।

हर नये दिन में
इक नयी आस हो
हर आर्शीवाद का
साया आपके
साथ हो,
कोई दुख आपको
छु ना सके,
बस मुस्कुराहट
ही मुस्कुराहट
आपके पास हो।
जन्मदिन पर ढेर
शुभकामनाएँ।

असंतुष्टता ग्रहचारी है

असंतुष्टता भी एक ग्रहचारी है। राहू की दशा है। दशा उतारने के लिए दान-पुण्य किया जाता है। हमें भी देहभान का दान, स्थूल प्राप्तियों का दान या त्याग करके इसे उतारना है। अधिक योगाभ्यास, गुणों और शक्तियों की अधिक धारणा करके, अधिक सेवा करके इस ग्रहचारी को उतारना है।

आप सब भगवान राम की भाँई धनुष धारण नहीं कर सकते लेकिन रामजी के गुण तो अपने हृदय में धारण कर सकते हो।

Click To Enlarge

ज्ञान की प्राप्ति का मार्ग

मनुष्य का स्वभाव

गुरु की सीख

सफलता का रहस्य

उधार की आदत

Click To Enlarge

मरते तो वह आदमी हैं, जो शरीर में जिंदा रहते हैं। जो अपने आपको आत्मा समझते हैं, उनके मरने का सवाल कहाँ?

दोस्त समस्या में हो तो उसके कहने से पहले मदद करने पहुंच जाओ, पर उसकी खुशी में बिना बुलाए मत जाओ।

जिह्वा में अमृत है

बाबा कहता है -
मेरे बनो तो मैं तुम्हारी सब कामनायें पूरी कर दूंगा -

अपनी इच्छा को कम कर दो तो समस्या कम हो जायेगी।

जब दूसरों को बदलना असम्भव हो, तो खुद को बदल दें।

आध्यात्मिकता के क्षेत्र में हम जितना ज्यादा जानते जाते हैं, जितना ज्यादा समझते जाते हैं, उतना कुछ भी नहीं जानते। ये है विनम्र बनने की विधि —

जितना दिखते हो उससे अधिक तुम्हारे पास होना चाहिए, जितना जानते हो उससे कम तुम्हें बोलना चाहिए

श्रेष्ठ भाग्य की रेखा खींचने की कलम है श्रेष्ठ कर्म।

जीवन एक उत्सव है,
एक गीत है, एक संगीत है।
जीयो तो ऐसे जीयो कि
जीवन महक उठे।

विदेशों में कुत्ते बिल्ली आदि को साथी बनाते हैं परन्तु हमें भगवान को अपना साथी बनाना है संकल्प करें भगवान हमारा साथी है।

संसार में बहुत सी ऐसी "कीमती" चीजें हैं जिन्हें हम इस्तेमाल नहीं कर सकते क्योंकि हमने इतना पुण्य नहीं कमाया

भक्ति भजन नहीं, हृदय की पवित्रता है।

जिंदगी खूबसूरत है-

सत्संग - सुधरने का रास्ता बताता है।

Click To Enlarge

कबूतरों की एकता

एक बार कुछ कबूतरों ने जंगल की बंजर भूमि पर अनाज के दाने बिखरे हुए देखे । उन्होंने आकर सब कबूतरों को बताया । सब कबूतरों का मन ललचा गया । उन्होंने अपने बूढ़े कबूतर को सब बात बता कर दाना चुगने जाने की बात कही ।

बूढ़े कबूतर ने कहा, 'बंजर भूमि पर दाने नहीं होते, वहाँ मत जाओ, कुछ खतरा होगा ।' पर कबूतर न माने । वे सब वहाँ से उड़े और जहाँ दाने पड़े थे वहाँ नीचे उतर गये । वे मजे से दाना चुगने लगे । तभी अचानक बहेलिए ने उन पर जाल फेंका । वे सभी जाल में फँस गए ।

उधर बूढ़े कबूतर को चिन्ता हुई, वह उन्हें देखने के लिए गया । उसने देखा कि सभी जाल में फँस गए हैं । बूढ़े कबूतर को देखकर उन्होंने किसी तरह उन्हें जाल से बचाने की प्रार्थना की । बूढ़ा कबूतर बोला, 'तुम सब उड़ने को तैयार हो जाओ । मैं एक, दो, तीन बोलूँगा और जैसे ही फुर्र कहूँ, सब एकसाथ उड़ना ।'

सारे कबूतर सावधान हो गए । बूढ़े कबूतर ने एक, दो, तीन, फुर्र कहा, वे सब एकसाथ उड़ने लगे, जाल भी उनके साथ खिंच गया । बूढ़ा कबूतर उन्हें उड़ाता हुआ दूर जंगल में ले गया और उन्हें एक वृक्ष पर उतरने को कहा । वे वहाँ उतर गए । जाल पेड़ पर लटका रह गया और वे उसके नीचे से निकल गए ।

यह बूढ़ा कबूतर और कोई नहीं भगवान का साधु है । जो सत्संग में रहकर भगवान के साधुओं के अनुसार चलते हैं, उनकी कबूतरों के अनुसार मुक्ति हो जाती है । जब तक हम सत्संग में दृढ़ हैं और भगवान की कृपा हम पर है तब तक विषय-विकार हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते

आदमी ने भगवान को पसंद का बना कर दिखाते हैं अपने में - यहाँ पसंद का बनना है.

भगवान को भूले से भूले हैं तो -

सुख मांगने से नहीं मिलता, सुख देने से मिलता है. अगर बाजार में मिलता हो तो खरीद लो -

हम हीरो पार्टधारी हैं क्योंकि हम विकारों पर जीत पा रहे हैं -

अभी नहीं तो कभी नहीं

खुद ही नहीं सुधरे तो औरों को क्या सुधारेंगे -

हिसाब ही हिसाब है, भगवान के पास पूरा हिसाब रहता है।
कहीं भी हैं ना - भगवान तुम्हारा हिसाब लेगा -
(कहीं मन्दिर बन रहा है तुमने एक लाख रुपये Donation दिया लेकिन दस साल पहले किसी से 100 रु. लिए थे क्या बिना दिए छूट सकते हो -

आत्मा देखने में नहीं आती, लेकिन सब कुछ करने वाली तो आत्मा ही है। ये तीसरा है जिसने कहा, आत्मा ने कहा आत्मा कल भी थी, आज भी है, कल भी रहेगी। शरीर विनाशी है -

जैसा कर्म वैसा फल

खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तकदीर से पहले।
खुदा तुझसे पूछे कि बन्दे तेरी रजा क्या है ?

Click To Enlarge

हमारे घर के नौकर से हम काम लेते हैं तो क्या उसके लिये रोटी, कपड़ा, मकान की व्यवस्था करना हमारा दायित्व है कि नहीं ? यदि हाँ तो आज से हम इच्छा रखें यह मानने की कि हे प्रभु ! धन तुम्हारा है और हम तुम्हारा काम करते हैं । फिर जीवन का रूप कुछ अनूठा होगा ।

भगवान (बाबा) - तेरी मरजी पूरी करने में यह जीवन लग जाये ।

हमारा जीवन ऐसा हो .

जो देखे , वो निहाल हो जाये

जिसके संपर्क में आयें वो खुशी से भर जायें

प्रकृति भी चाहे कि वे हम पर पांव रखें -

हमारा अंग - अंग सुख देने वाला हो -

मुक्ति चाहते हो तो मरना पड़ेगा -

एक तोता पकड़ गया बहुत तड़प रहा था । मालिक के पास संत आया , संत ने देखा तोता तड़प रहा है । उसने कहा तुम पिंजरे में ऐसे रहो जैसे मर गए । उसने वैसा ही किया (कोई हलचल नहीं) मालिक ने सोचा मर गया है उसने पिंजरा खोला और तोता उड़ गया -

पंछी को स्वतंत्रता पसन्द है लेकिन दाना चुगने के लिए नीचे आता है दाना तो अच्छे - से - अच्छा भी मिल सकता है लेकिन पिंजरा पसन्द नहीं है -

घड़ी बन्द हो जाये तो कहते हैं घड़ी बिगड़ गई

लड़की बिगड़ जाये तो कहते हैं चालू है

क्या सेक्स का मतलब नंगापन है . जिसे खुल्लम खुल्ला समाज के सामने रखा जाये । इंटरनेट और फिल्मों में जिस प्रकार निर्लज्जता पूर्वक नग्न अंगों का प्रदर्शन किया जा रहा है यह सोचने की बात है

सहनशीलता का पाठ

राजा अपने दरबार में बैठे थे। तभी दरबारियों ने एक संत की चर्चा छेड़ दी। उन्होंने बताया कि वह संत केवल काले रंग के वस्त्र धारण करते हैं और उनकी सहनशीलता की कोई सीमा नहीं है। वह बड़े-छोटे, अमीर-गरीब सभी के साथ समान व्यवहार करते हैं। राजा ने जब यह सुना तो वह उस ज्ञानी संत से मिलने को उत्सुक हो उठे। वह उनसे मिलने उनके आश्रम में जा पहुंचे। संत ने राजा के साथ भी वैसा ही व्यवहार किया जैसा वह आश्रम में आने वाले अन्य लोगों के साथ कर रहे थे। राजा ने संत से पूछा, 'आप हमेशा काले वस्त्र ही क्यों धारण करते हैं?' राजा का प्रश्न सुनकर संत मुस्कराते हुए बोले, 'पुत्र, मैंने अपने अंतर्मन के मित्रों काम, क्रोध, ईर्ष्या, लोभ, मोह आदि को मार डाला है। इसलिए मैं उन्हीं के शोक में काले वस्त्र धारण करता हूं।' यह रोचक जवाब सुनकर सब हंस पड़े और संत से अभिभूत भी हुए। राजा की जिज्ञासा थोड़ी और बढ़ी। उन्होंने सोचा कि क्यों न इस संत की परीक्षा ली जाए। उन्होंने संत को अपने महल में बुलवाया। संत के पहुंचने पर राजा के सेवकों ने उन्हें धक्के मार कर बाहर निकाल दिया। उसके कुछ देर बाद उन्होंने संत को एक बार फिर वापस बुलवाया लेकिन उन्हें फिर उसी तरह बाहर कर दिया गया। यह क्रम कई बार चला। हर बार संत सहज भाव से फिर आ खड़े होते। उनके चेहरे पर क्रोध की मामूली झलक भी नहीं दिखाई पड़ी। संत की सहनशीलता देखकर राजा उनके पैरों पर गिर पड़े और उनसे क्षमा मांगते हुए बोले, 'आप सचमुच क्षमावान व सहनशील हैं और आपने वास्तव में मानव के अंतर्मन के मित्रों काम, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या, मोह आदि पर विजय प्राप्त कर ली है। कृपया मुझे भी अपनी शरण में लेकर इन सब पर विजय पाने का कोई रास्ता बताइए ताकि मैं अपनी प्रजा का समुचित पालन कर सकूं।' इसके बाद राजा संत से शिक्षा प्राप्त करने लगे।

वृक्ष अपने सिर पर गरमी झेल लेता है किन्तु अपनी छाया से औरों को गरमी से बचाता है।

Click To Enlarge

दार्शनिक का संदेश

दार्शनिक हिकी के पास रोज ढेरों लोग परामर्श लेने आते थे। लोग प्रायः उन्हें अपने पारिवारिक जीवन की उलझनें बताते और उनसे उनका कोई समाधान पूछते। हिकी सबको समान भाव से सलाह दिया करते थे। एक दिन एक व्यक्ति अपनी पत्नी के साथ उनके पास आया और पत्नी के आलस्य और कंजूसी की निंदा करने लगा। हिकी ने उस औरत को स्नेहपूर्वक अपने पास बुलाया। फिर उन्होंने अपने एक हाथ की मुट्ठी बांधकर उसके सामने की और पूछा, 'यदि यह हमेशा ऐसी ही रहे तो क्या नतीजा निकलेगा?' पहले तो वह औरत सकपकाई, पर साहस कर बोली, 'अगर यह मुट्ठी हमेशा ऐसी ही बंधी रहेगी तो हाथ अकड़कर निकम्मा हो जाएगा।' उस औरत का उत्तर सुनकर हिकी बहुत प्रसन्न हुए। फिर उन्होंने दूसरे हाथ की हथेली बिल्कुल खुली रखकर फिर पूछा, 'यदि यह हाथ ऐसे ही खुला रहे तो फिर इस हाथ का क्या होगा?' स्त्री बोली, 'ऐसी हालत में ये भी अकड़ कर बेकार हो जाएगा।' हिकी ने लोगों से कहा, 'यह तो बुद्धिमान भी है और दूरदर्शी भी। यह तो अच्छी तरह जानती है कि मुट्ठी बंद रखने और सीधा हाथ रखने से क्या हानि होती है।' फिर उन्होंने स्त्री से कहा, 'बेटी, तुम तो सब कुछ खुद ही समझती हो। इस समझ का उपयोग अपने जीवन में भी करो, तुम्हारा सुख-सौभाग्य बढ़ेगा। किसी भी चीज की अति अच्छी नहीं होती। न खुला हाथ अच्छा, न बंद हाथ। दोनों में संतुलन होना चाहिए। न लापरवाही से खर्च करो न ही कंजूसी से।' अब स्त्री हिकी के संदेश को समझ गई।

डॉक्टर जानता है भले ही जानवर हो लेकिन उसे भी सहानुभूति की जरूरत होती है। एक बार वो बाजार गया उसने देखा बहुत सुंदर-सुंदर पप्पी हैं सब बोला: भाव क्या है? खरीद रहे हैं लेकिन एक पप्पी लंगड़ा है, उसने वो खरीदना चाहा तो दुकानदार ने कहा आपके पास पैसे कम हैं तो भी कोई बात नहीं मैं कम पैसे में आपको अच्छा वाला पप्पी दे देता हूं लेकिन डॉक्टर ने मना कर दिया कहा मुझे तो यही चाहिए।

परम मित्र

एक जंगल में पास-पास दो पेड़ थे– एक आम का, दूसरा कटहल का। दोनों परम मित्र थे। जैसे-जैसे वे बड़े होते गये, उनकी मित्रता और गाढ़ी होती गयी।

एक बार जब गर्मी का मौसम आया तो आम पर बड़े-बड़े फल और नयी-नयी पत्तियां निकल आयीं।

तरह-तरह के पक्षी आकर उस पर अपना बसेरा बसाने लगे। आम का पेड़ उनका खुशी-खुशी स्वागत करता था। आम पकने लगे तो और भी रंग-बिरंगे पक्षी वहां मंडराने लगे। इतने मित्रों को पाकर आम का पेड़ बहुत खुश हुआ।

आम के पेड़ को घमंड हो गया कि वह कितना भाग्यशाली और फलदायी है। उसने कटहल पेड़ मित्र की उपेक्षा करनी शुरु कर दी और धीरे-धीरे बात करनी भी बंद कर दी।

कटहल के पेड़ ने कई बार अपने मित्र से बात करनी चाही लेकिन आम का पेड़ उसकी ओर देखता भी न था।

"कटहल एक बेकार पेड़ है, उससे क्या मित्रता करनी?" आम के पेड़ ने सोचा।

लेकिन कुछ ही दिनों बाद आम का मौसम खत्म हो गया और सभी पक्षी वहां से उड़ गये। धीरे-धीरे पक्षियों ने वहां आना-जाना कम कर दिया।

"अरे भाई रुको, मुझे छोड़ कर कहां जा रहे हो? मैं तो तुम सबका परम मित्र हूं!" आम के पेड़ ने उन्हें रोकने की बहुत कोशिश की।

"हम क्यों रुकें, अब तुम्हारे पास क्या है हमें देने को।" पक्षियों ने उत्तर दिया।

अब आम के पेड़ को समझ में आया कि वे पक्षी उसके फलों को के लिये ही वहां आते थे, न कि मित्रतावश। उसने कटहल से माफी मांगी।

"कटहल भाई, तुम्हीं मेरे परम मित्र हो, यह मैं समझ नहीं पाया था। मैं घमंडी हो गया था, क्या तुम मुझसे मित्रता जारी रखोगे?"

"मैं तो हमेशा से तुम्हारा मित्र हूं। वे पक्षी तो स्वार्थवश तुमसे मित्रता जता रहे थे, सही मित्र तो मुसीबत में भी साथ रहता है।" कटहल ने हंस कर जवाब दिया।

Click To Enlarge

गद्देदार बिस्तर पर इसलिए नहीं सोना चाहिए कहीं अमृत वेला छूट न जाए।

किसी के दिल को दुखाना सबसे बड़ा पाप है।

यदि किसी व्यक्ति के पास हजारों रुपये हों और वह उनमें से सौ रुपये दे दे तो कोई बड़ी बात नहीं है, लेकिन है ही 10 रुपये और वो 10 रुपये दान कर दे तो बहुत बड़ी बात है।

जन्म से कोई छोटा या बड़ा नहीं होता। बल्कि इंसान अपने कर्मों से छोटा या बड़ा बनता है।

हरेक मनुष्य को परमात्मा ने जीवन रूपी जागीर दे रखी है. जीवन की इस जागीर को जो अच्छी तरह संभालना सीख जाता है उसे फिर किसी चीज की कमी नहीं रह जाती।

बर्नार्ड शॉ ने अपने डॉक्टर को फोन किया कि मुझे हृदय का दौरा पड़ा है, जल्दी आयें। आधी रात. . . बूढ़ा डॉक्टर और बर्नार्ड शॉ रहता दूसरी मंजिल पर। आधी रात, उठा बूढ़ा, सीढ़ियां चढ़ा। हांफ गया। आ कर एकदम कुर्सी पर लेट गया। और जोर से हांफने लगा। बर्नार्ड शॉ बिस्तर पर लेटा था, उठ आया। पूछा कि मामला क्या है? पसीना-पसीना हो रहा है बूढ़ा डॉक्टर और जोर से हांफ रहा है। लगता है कि हार्ट-अटैक है। पंखा करने लगा। पानी पिलाया। थोड़ी-बहुत देर जब डॉक्टर की यह हालत रही तो बर्नार्ड शॉ को यह याद ही न रहा कि मैंने उसे बुलाया है कि मुझे . . .। जब डॉक्टर थोड़ा ठीक हुआ और चलने को हुआ तो उसने कहा : फीस? तो बर्नार्ड शॉ ने कहा : यह भी खूब रही! इलाज मैंने आपका किया और आप फीस मांगते हैं! बर्नार्ड शॉ से उसने कहा कि नहीं, यह सब खेल था। यह हांफना और धड़कना, यह सब खेल था। यह तेरी बीमारी मिटाने के लिए इलाज था।

बर्नार्ड शॉ को उसने कहा कि तू भी मजाक करता है तो मैंने सोचा कि आज मैं भी मजाक करूं। और सच में ही जब डॉक्टर की यह हालत खराब थी, जब यह नाटक कर रहा था, तो बर्नार्ड शॉ एकदम भूल ही गया, बीमारी खत्म ही हो गयी! याद ही न रही बीमारी की। बड़ी बीमारी के सामने छोटी बीमारी भूल ही जाती है।

मरने के बाद कहते हैं आत्मा चली गई, जीते जी समझते हैं क्या इसमें आत्मा है।

हर बात में पुरुषार्थ जरूरी है बिना पुरुषार्थ के तो पानी भी नहीं मिलता।

अच्छा आदमी हर बात में अच्छाई ढूंढता है, बुरा आदमी हर बात में बुराई ढूंढ ही लेता है। आप क्या ढूंढते हैं –

Click To Enlarge

Hindi Spiritual One Liners – Quotes – Short Stories – All Mix – Page 36

Click To Enlarge

Click To Enlarge

Click To Enlarge

- जो पूरे भक्त होते हैं वो दान-पुण्य भी बहुत करते हैं
- आत्मा रोगी होती है तभी तो शरीर भी रोगी होता है
- अच्छी तरह से अपने आप को समझाओ, ये गलती दुबारा नहीं होनी चाहिए।
- जीवन में आत्मा का विकास ही वास्तविक विकास है।
- कोई कुछ करने को कहता है और हम करते हैं तो आशीर्वाद मिलती है, भगवान कहे और हम करते हैं तो फिर वरदान मिलता है।
- गाने से प्राप्ति होगी क्या.
- जब हम यहाँ (स्टेज सन्दली) पर बैठते हैं तो प्रभाव और प्रवाह हमारा नहीं होता वो झलक वो फलक शब्दों से, नैनों से बाबा ही दिखाई देता है। आज्ञा - रूं - आंख मिल गई न जाने कब कब की आशा बाबा पूरी कर देता है -
- भगवान को याद करने की बहादुरी दिखानी है.
- भगवान में करिश्मा है, हम में कशिश है।
- माया के तूफान ऐसे आते हैं जो ज्ञान स्वरूप उड़ जाता है

Click To Enlarge

Hindi Spiritual One Liners – Quotes – Short Stories – All Mix – Page 40

- समान बनोगे तो समीप रहेंगे।
- हल्के होकर रहो।
- सबके अपने तरह आना चाहिए।
- अपने को अच्छे और शुभ मार्ग पर लगाये रखना चाहिए।
- दूसरे के गुण देखो और अपने अन्दर भर लो।
- हम यात्री हैं यात्री का किसी में भी मोह नहीं होता।
- ब्रह्म मुहूर्त में उठने के लिए बहाना नहीं दो।
- अपने को सुखदाई बनाओ
- जैसा अन्न वैसा मन
- एक चुप सौ सुख
- एक-एक ज्ञान की प्वाइंट्स लाखों-करोड़ों रुपयों की है।
- बुरे समय में सब दूरी बना लेते हैं।
- काबिल के लिए कामयाबी दूर नहीं।

Click To Enlarge

- मंदबुद्धि वाले को कम सुख और ज्यादा दुःख वाला काम कभी नहीं करना चाहिए -

- बुद्धिमान पुरुष पतित अथवा पदभ्रष्ट होकर भी पुनः उठ जाता है।

- शादी के बाद मन्दिर में कहते हैं ना, तुम मात-पिता हो हम बालक हैं। स्कूल को (कॉलेज) में बाकि सब बहन-भाई हैं ऐसा कहा कभी।

- खुश रहने के दो तरीके -
  1. जो पसंद है उसे हासिल करना सीख लो
  2. जो हासिल है उसे पसंद करना सीख लो.

जीवन एक उत्सव है, जीवन एक गीत है, जीवन एक संगीत है। जियो तो ऐसे जियो कि जीवन चमक उठे और मरो तो ऐसे मरो कि मौत महक उठे.... जीवन जीने की कला आ जाये उसके लिए तो फिर तुम्हें सत्संग में आना होगा।

शरीर आत्मा की एक कार है, आत्मा इसका ड्राईवर है। ड्राईवर को कार में नहीं सोना है। शरीर रूपी कार में नींद अच्छी नहीं आयेगी। परमधाम रूपी घर में देह से न्यारे होकर सोना है।

Click To Enlarge

सब को सन्मति दे भगवान...

हम मदद तब करना चाहते हैं जब उसे मदद की आवश्यकता ही नहीं होती (समय निकलने के बाद)

एक भाग्यशाली व्यक्ति को समुद्र में फेंक दीजिए और वह मुंह में मछली लिए बाहर निकलेगा।

किसी के कष्ट का कारण न बनो

जब राम शबरी की कुटिया में गए तो वह भाव विभोर हो उठी। उसने वन में जो भी फल उपलब्ध था, वह राम को खाने के लिए दिया। वह चाहती थी कि राम केवल मीठे बेर ही खाएं, इसलिए पहले स्वयं चख कर देखती, फिर जूठे बेर राम को देती।

लक्ष्मण को शबरी का यह व्यवहार अच्छा नहीं लग रहा था। उन्होंने राम को धीरे से कहा कि आप जूठे बेर खाने से इनकार कर दें। इस पर राम ने कहा, प्रेम के वशीभूत होकर ही वह ऐसा कर रही है। यदि हम ऐसा करने से मना करते हैं तो उसे पीड़ा होगी। राम शबरी को तनिक सा भी भावनात्मक कष्ट देने के पक्ष में नहीं थे।

आत्मा का परिचय जितना गहरा होता जाएगा, हम उतने ही विनम्र बनते जाएंगे।

दीप जलते जगमगाते रहें, हम आपको आप हमें याद आते रहें, जब तक जिंदगी है दुआ है हमारी, आप चाँद की तरह जगमगाते रहें
शुभ दीपावली

दुश्मन को खत्म करने का सबसे अच्छा तरीका है उसे दोस्त बना लो।

जो लोग शांत और मौन रहते हैं उन्हें आत्मा और परमात्मा की आवाज सुनाई आ जाती है -

कोई भी मुश्किल आवे दिल से आर्डर करो मेरा बाबा, बाप अवश्य बंधा हुआ है लेकिन दिल में और बातें नहीं रखना, मेरा बाबा भी कहो और दिल में कमजोरी भी हो तो बाप सहयोग नहीं देगा। दिल साफ मुराद हांसिल। किचड़े वाली दिल में बाप नहीं आता। और स्नेह से याद करो। सिर्फ ज्ञान के आधार से याद नहीं करो,

आप जैसा - वैसा पहनते हैं और दूसरा चप्पल होता है मैं भी फिर पाप के रस्ते में जाता है।

दीपावली में मुख्य चार बातें होती हैं -
घर का कूड़ा - करकट निकालना
नई चीजें लाना
दीपक जलाना
मिठाई खाना - खिलाना

Click To Enlarge

जो वाचा द्वारा ज्ञान रत्नों का दान करते हैं उन्हें मास्टर नॉलेजफुल का वरदान प्राप्त होता है। उनके एक-एक शब्द की बहुत वैल्यु होती है। उनका एक-एक वचन सुनने के लिए अनेक आत्मायें प्यासी होती हैं। उनके हर शब्द में सेन्स (सार) भरा होता है। उन्हें विशेष खुशी की प्राप्ति होती है। उनके पास खजाना भरपूर रहता है इसलिए वे सदा सन्तुष्ट और हर्षित रहते हैं। उनके बोल प्रभावशाली होते जाते हैं। वाणी का दान करने से वाणी में बहुत गुण आ जाते हैं।

प्यार तो प्यार ही चाहता है।

• भगवान की याद के सिवाय दूसरा कुछ भी याद न आये -

• परमधाम से आये हैं पार्ट बजाने

प्रेम का आनन्द देने में है, लेने में नहीं। प्रेम दान है, मांगा नहीं। प्रेम सेवा है, प्रेम प्रार्थना है।

यदि मनुष्य केवल प्रतीक्षा करे तो हर वस्तु प्राप्त हो जाती है।

सबको खुश नहीं किया जा सकता लेकिन भगवान को खुश करने से सब खुश हो जायेंगे। (पत्ते-पत्ते में कहाँ तक पानी डालोगे जड़ में एक लोटा पानी डाल दो)

वस्तु, व्यक्ति, वैभव जो भी तुम्हें बहुत अच्छा लग रहा है क्या वो हमेशा रहेगा।

पहला गहना है - ज्ञान

दूसरा गहना है - सेवा

बड़े-में-बड़ी तपस्या है सत्संग। बड़े-में-बड़ा ज्ञान का खजाना मिलता है सत्संग में। बड़े-से-बड़े सुख के द्वार खुलते हैं सत्संग से और बड़े-से-बड़ी उपलब्धि सत्संग है।

एक घड़ी आधी घड़ी, आधी में पुनि आध।
तुलसी संगत साध की, हरे कोटि अपराध।"

परमानंद के लिए चाहिए भीतर से संन्यास और बाहर से संसार

जल जो न होता
तो ये जग जाता जल

Click To Enlarge

हमेशा दूसरों का सम्मान करें

प्रश्न:- मन दुखी क्यों रहता है?

जैसे स्थूल संपत्ति होती है वैसे ही समय, संकल्प, श्वास हमारी सूक्ष्म संपत्ति है। इनमें से कोई भी व्यर्थ न जाए, सदा सफल हों, चाहे मनसा सेवा द्वारा, चाहे वाचा द्वारा, चाहे कर्मणा द्वारा। ईश्वरीय वरदान है, सफल करेंगे तो पद्मगुणा सफलता का अनुभव करेंगे।

बुरा मत सुनो

स्कूल में कोई बच्चा गलती करता है तो उसके कान पकड़ते हैं अथवा उसको मुर्गा बनाते हैं। उसने भी उस बच्चे को अपने ही कानों को पकड़ना पड़ता है। व्यक्ति अपनी की हुई गलती पर माफी माँगने के लिए अपने कान खुद पकड़ता है। सारा शरीर पड़ा है, फिर भी कानों को क्यों पकड़वाते हैं? क्योंकि कोई भी व्यक्ति बुरा सोचता है, बुरा बोलता है और बुरा करता है लेकिन उससे पहले उसने बुरा सुना होता है। बुरा सुनना ही सब बुराइयों की बुनियाद है। अगर वह बुरा सुनेगा नहीं तो उसकी बुद्धि बुरे की तरफ जायेगी ही नहीं। तो पहले दो कानों रूपी दुकान को बन्द करना है।

जिसका कोई नहीं उसके शिव हैं

Click To Enlarge

ज्ञान के समान कोई नेत्र नहीं है।

शास्त्रों में अक्ल की दवा है, मूर्खों की नहीं।

हमारे वचन चाहे कितने भी श्रेष्ठ क्यों न हों लेकिन दुनिया हमें हमारे कर्मों के द्वारा पहचानती है।

जितना तुम काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार से दूर होते जाओगे, तुम्हारा मन आनन्द से भरता जाएगा।

स्कूल में कहता था ना Teacher दस बार लिख कर लाओ। कोई भी भूल हो तो इसको फिर से रिपीट न हो, दूसरा दफा ध्यान में रहे। अगर हुई है तो कुछ तो करना होगा।

ईर्ष्या की आग

दो विद्वान एक सेठ के घर भोजन के लिए आमंत्रित थे। ये दोनों विद्वान एक-दूसरे को देखना नहीं पसंद करते थे और मौका मिलते ही एक-दूसरे की बुराई करने लगते थे। दोनों नियत समय पर सेठ के घर पहुंचे और एक-दूसरे को देखकर मुंह बनाने लगे। सेठ ने दोनों से स्नान करने का निवेदन किया। जब एक विद्वान नहाने चला गया तो सेठजी दूसरे के पास आकर बैठ गए और बातें करने लगे। वह बोले, 'महाराज, लगता है आपके ये साथी पहुंचे हुए विद्वान हैं। उन्हें काफी गूढ़ बातें मालूम हैं।' दूसरा विद्वान भला यह कैसे सुन सकता था? वह तपाक से बोला, 'अरे नहीं सेठजी, इसका तो विद्वता से दूर-दूर तक का कोई रिश्ता नहीं है। यह तो निरा बैल है। पता नहीं इसे लोग अपने यहां क्या सोचकर आमंत्रित कर लेते हैं।' तभी उसका साथी नहाकर बाहर आता दिखाई दिया तो वह चुप हो गया। कुछ देर बाद वह स्वयं स्नान के लिए चला गया तो सेठजी पहले विद्वान से बातें करने लगे और दूसरे विद्वान के बारे में बोले, 'अभी मैं आपके साथी से ही बातें कर रहा था। मुझे तो वह वेदों के बहुत बड़े ज्ञाता लगे।' सेठजी की बात पर वह विद्वान हंसते हुए बोला, 'क्या सेठजी, वह और विद्वान! अरे विद्वान आपने देखे ही कहां हैं। वह तो निरा गधा है।' अपने साथी के वापस आते ही वह भी चुप हो गया। कुछ देर बाद दोनों को भोजन के लिए बुलाया गया। दो थालियां रखी गईं, जिनमें से एक में घास और दूसरे में भूसा रखा था। दोनों विद्वान बिदक कर सेठजी से बोले, 'यह क्या! आपने हमारा अपमान करने के लिए यहां बुलाया है?' उनकी बातें सुनकर सेठजी बोले, 'महाराज! आप दोनों ने ही तो एक-दूसरे को गधा और बैल बताया है। गधा और बैल ऐसी ही खुराक तो खाते हैं। अब इसमें मेरा क्या दोष?' यह सुनकर दोनों शर्मिंदा हो गए। उन्होंने ईर्ष्या की आग अपने भीतर से निकाल दी।

कुत्ता रोज़ मालिक के दरवाजे पर बैठा रहता है। मालिक उसे टुकड़ा भी नहीं देता अपितु उसे बहुत डण्डे मारता है। कुत्ता भी ऐसा है कि इधर-उधर जाएगा, रोटी कहीं से खाकर आएगा लेकिन मालिक के दरवाजे पर फिर बैठ जाता है। कभी टुकड़ा मिल गया तो खुश, नहीं मिला तो कोई बात नहीं। दरवाजे पर बैठा रहता है। डण्डा खाएगा फिर आकर बैठ जाएगा।

आचरण रहित विचार कितने अच्छे क्यों न हों, उन्हें खोटे मोती की तरह समझना चाहिए।

भगवान कभी किसी का भी बुरा नहीं करते, जैसे माँ फटकार और मार कर के भी बच्चे का बुरा नहीं चाहती न ही करती,

भगवान दुःख देकर हमारा उत्साह बढ़ाते हैं। अपने को भगवान का मानो और भगवान को अपना मानो।

Click To Enlarge

एक सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री ने महात्मा गांधी से कहा, "बापू! बकरी का दूध पीना ठीक नहीं। पशु का दूध पीने से मनुष्य में पशु के गुण आ जाते हैं।" बापू का सोने का समय था। लेटते हुए बोले, "ठीक कहते हो। बकरी का दूध पीने से मेरे सींग निकल रहे हैं। भागो, नहीं तो सींग मार दूंगा।"

अपने को आत्मा समझ देह से परे बनाओ -

सन्त के संग से पुण्य भाव जागते हैं -

एक बार महात्मा बुद्ध से उनके शिष्य ने प्रश्न किया, "भगवन्! श्रेष्ठ साधक के क्या लक्षण होते हैं?"

तथागत ने उत्तर दिया, "चूहे चार प्रकार के होते हैं। एक वे, जो स्वयं खोदकर बिल बनाते हैं, लेकिन उसमें रहते नहीं। दूसरे वे, जो बिल में रहते हैं पर स्वयं नहीं खोदते। तीसरे वे, जो स्वयं बिल भी बनाते हैं और उसमें रहते भी हैं। चौथे वे, जो न तो बिल बनाते हैं और न ही बिल में रहते हैं।

इसी प्रकार साधक भी चार भागों में बांटे जा सकते हैं। एक वे, जो शास्त्र पढ़ते तो हैं लेकिन उसे जीवन में नहीं उतारते। दूसरे वे, जो शास्त्रज्ञानी न होकर भी जीवन में सिद्धान्त का साक्षात्कार करते हैं। तीसरे वे, जो शास्त्रज्ञान भी प्राप्त करते हैं और सत्य का अनुभव भी। चौथे वे, जो न तो शास्त्र का अभ्यास करते हैं और न सत्य का आचरण ही। अब तुम ही निर्णय करो कि श्रेष्ठ साधक कौन है?"

तुम्हारे कर्म यश दिलाने वाले हों -

मौज

'न बोलने में नौ गुण।' ये नौ गुण इस प्रकार हैं : निंदा करने से बचेंगे, असत्य बोलने से बचेंगे, किसीसे वैर नहीं होगा, क्षमा माँगने की परिस्थिति नहीं आयेगी, बाद में आपको पछताना नहीं पड़ेगा, समय का दुरुपयोग नहीं होगा, किसी कार्य का बंधन नहीं रहेगा, ज्ञान गुप्त रहेगा। अज्ञान ढका रहेगा, अंतःकरण की शांति बनी रहेगी।

आत्मा शरीर से अलग हो जाए फिर शरीर को काटो, कोई आवाज होगी नहीं. आत्मा ही कहती है - मेरे शरीर को दुःख मत दो. आत्मा अविनाशी है, शरीर विनाशी है।

रूखा खाऊँगा, पर आज़ाद रहूँगा

एक बार भेड़िये की कुत्ते से मुलाकात हुई। भेड़िये ने देखा—कुत्ता खूब मोटा-ताजा था। कौतूहलवश उसने कुत्ते से मोटे होने का कारण पूछ लिया।

कुत्ता गर्व से बोला—"मेरा मालिक मुझे बहुत बढ़िया खाना खिलाता है। तुम भी चलकर उसके पास रहो तो ऐसे ही हो जाओगे।"

भेड़िये ने पूछा—"तुम्हें मालिक का काम क्या करना पड़ता है, जिसके लिये वह इतना अच्छा खाना देता है?"

कुत्ता—"सिर्फ घर की चौकीदारी करता हूं।"

भेड़िये ने विचार किया—"यह काम तो मैं भी बखूबी कर सकता हूं। क्यों न इस कुत्ते के मालिक के यहां चलकर घर की रखवाली करूँ और खूब पौष्टिक पदार्थ खाऊँ?" ऐसा सोचकर वह कुत्ते के साथ चल दिया।

दोनों शहर के करीब पहुँचे ही थे कि भेड़िये की नजर कुत्ते के गले पर गई। चकित होकर उसने पूछा—"भाई! तुम्हारी गरदन पर यह काला-काला निशान कैसा है?"

कुत्ते ने कहा—"यह पट्टे का निशान है। दिन को मेरा मालिक इस पट्टे में जंजीर लगाकर मुझे बाँध देता है ताकि मैं लोगों को तंग न करूँ। आज तो जंजीर जरा ढीली थी अतः किसी प्रकार भाग आया। हाँ, रात को अलबत्ता चौकीदारी के लिये खुला रहता हूँ। तुम मेरे साथ रहोगे तो तुम्हें भी ऐसा पट्टा पहनना पड़ेगा।"

भेड़िया कुत्ते की यह बात सुनते ही उलटे पैरों लौट पड़ा। बोला—"मुझे स्वतन्त्र रहकर जंगल में रूखा-सूखा खाना मंजूर है, पर परतन्त्र बनकर बढ़िया माल खाना मंजूर नहीं। मैं तो भाई यह चला...।" कहता हुआ भेड़िया भाग गया।

जैसा सोचते हैं वैसा ही बन जाते हैं -

Click To Enlarge

क्या हमें पता है कि हमारी नस-नस में भी ठगी, बेईमानी भरी हुई है।

अभय और अहिंसा

एक राजा था। शिकार करता था। निरीह पशुओं को मार कर स्वयं को वीर मानता था। एक दिन शिकार के लिए जंगल में गया। एक हिरण को लक्ष्य बना कर उसने तीर छोड़ा। निशाना अचूक था। तीर मृग को लगा और वह पास खड़े मुनि के पैरों में गिर पड़ा। राजा शिकार को संभालने के लिए उधर आया। उसने देखा, मृग मुनि के चरणों में पड़ा है। उस समय वैदिक सन्यासी अपने तपोवन में मृगों को पालते थे। जो व्यक्ति तपोवन के मृग को मार देता, वह मुनि की कोप-दृष्टि से बच नहीं सकता था।

मुनि के कोप का परिणाम - सर्वनाश! यह सोचकर राजा के हथियार ढीले हो गये। शरीर से पसीना छूटने लगा, पर मन को थोड़ा मजबूत कर मुनि के निकट आया और अपना अपराध स्वीकार करता हुआ क्षमायाचना करने लगा। मुनि ध्यानस्थ खड़े थे। उन्होंने सोचा, किसी ने कुछ भी अपराध नहीं किया, फिर भी यह व्यक्ति क्षमा कैसे माँग रहा है? इसी चिन्तन में वे ध्यानस्थ खड़े रहे। मुनि के मौन ने राजा के भय को और अधिक बढ़ा दिया। वह फिर बोला - "महामुनि! मैंने आपका मृग मार दिया है। अब भविष्य में ऐसा काम कभी नहीं करूँगा। आप संसार को अभय बनाते हैं, मुझे भी अभयदान दें।"

अब मुनि ने समझा कि यह भयभीत मुझसे नहीं, स्वयं के आचरण से है। यह सुन्दर अवसर है, इसे बोध-पाठ देने का। मुनि ने आँखें खोलीं। देखा, राजा भय से काँप रहा है। मुनि ने पूछा - "राजन्! क्या चाहते हो?"

कातर स्वर में राजा ने कहा - "अभय।"

मुनि ने राजा के मानस को झकझोरते हुए कहा - "तुम दूसरों को भयभीत बनाते हो और स्वयं अभय रहना चाहते हो, यह कैसे हो सकेगा?"

राजा ने अत्यंत दीनतापूर्वक कहा - "मैं आपकी कृपा चाहता हूँ।"

मुनि ने राजा को पुनः झकझोरा - "राजन्! मेरा तुम पर कोई रोष नहीं है, पर तुम सोचो तो सही! क्या तुम अभय बनना नहीं चाहते? तुम्हारा क्या अधिकार है कि तुम किसी प्राणी को भयभीत बनाओ?"

राजा ने कहा - "मुनि! आप मुझे प्रतिबोध दें, अब मुझे क्या करना चाहिए?"

मुनि ने राजा को प्रेरित करते हुए कहा - "अब तुम संकल्प करो कि जिन्दगी में कभी भी शिकार नहीं करोगे और न किसी को भयभीत।"

राजा बोला - "मैं आपकी साक्षी में यह प्रतिज्ञा करता हूँ कि अब जीवन में कभी शिकार नहीं करूँगा।"

मुनि ने कहा - "राजन्! किसी भी प्राणी के भय का कारण हिंसा है। तुमने हिंसा को छोड़ने का संकल्प कर लिया है, तो समझ लो कि भय भी तुम्हें छोड़ देगा।"

राजा को आश्वासन मिला। मुनि को प्रणाम निवेदन कर, वह अपने नगर की ओर चल गया।

इस घटना का मर्म यह है कि अभय और अहिंसा दोनों एक ही हैं। व्यक्ति भयभीत होता है, वह स्वयं की हिंसात्मक प्रवृत्तियों के कारण ही होता है। अतः अभय बनने के लिए हिंसा को छोड़ना जरूरी है।

बाबा फरीद अपने शिष्यों के साथ एक गाँव से गुजर रहे थे। रास्ते में एक आदमी अपनी गाय को रस्सी से बाँधे लिये जा रहा था। फरीद ने उस आदमी से थोड़ी देर रुकने की प्रार्थना की। उसकी प्रार्थना पर वह रुक गया। अब बाबा फरीद ने अपने शिष्यों से पूछा- 'इन दोनों में मालिक कौन है- गाय या आदमी।' शिष्यों ने कहा- 'जाहिर है, आदमी गाय का मालिक है।' फरीद ने फिर कहा- 'यदि गाय के गले की रस्सी काट दी जाय तो कौन किसके पीछे दौड़ेगा - गाय आदमी के पीछे या फिर आदमी गाय के पीछे।' शिष्यों ने कहा- 'जाहिर है, आदमी गाय के पीछे भागेगा।' 'तो फिर मालिक कौन हुआ?' फरीद ने शिष्यों से कहा- 'यह जो रस्सी तुम्हें दिखाई पड़ती है गाय के गले में, वह दरअसल आदमी के गले में है। आत्मा की सम्पत्ति को छोड़कर बाकी हर सम्पत्ति हमारे गले का फंदा बन जाती है।' यथार्थ में आत्म सम्पदा ही सच्ची सम्पदा है। सच्चे शिष्य ही इसे पाने में समर्थ होते हैं।

असंतुष्ट - केवल सोचता है, काम नहीं करता।

हजारों मील का रास्ता भी एक-एक कदम उठाकर ही तो तय किया जाता है

कर्म करते के साथ-साथ सत्कर्म करने का यह सुनहरा अवसर है जिसका लाभ हर एक को उठाना चाहिए।

Click To Enlarge

मनुष्य

राह चलते आदमी ने आम के वृक्ष पर पत्थर फेंककर मारा। वृक्ष से कई पके आम गिरे। राहगीर ने उठाए और प्रसन्नचित्त चल दिया। आसमान यह दृश्य देख रहा था। उसने पूछा, "हे वृक्ष, मनुष्य प्रतिदिन आते हैं। तुम्हें पत्थर मारते हैं, फिर भी तुम इन्हें मधुर फल देते रहते हो। क्या बदले की भावना तुममें नहीं आती?" वृक्ष हंसा और बोला, "हे आर्य, मनुष्य अपने लक्ष्य से भ्रष्ट हो जाए तो क्या हम [illegible] ही [illegible] करना चाहिए।" वस्तुतः व्यवहार व आचरण का आधार है आंतरिक [illegible]। आज का आदमी इन्हीं का विकास कर ले, तो सही मायने में मनुष्य बन जाए।

सहज विकास करो, सहज समाधि लगाओ

[illegible]

क्या आप जानते हैं कि विचारों के कारण तनाव ने जीवन में प्रमुख स्थान ले लिया है।

तनाव से हो गई है दोस्ती इस कदर, तनाव होता है तनाव न होने पर

जो मेरे साथ भलाई करता है वह मुझे भला होना सिखाता है।

चीनी, पाउडर पीसने के बजाए [illegible] सब्जी खाना ज्यादा अच्छा है।

भूखा मनुष्य कौन सा पाप नहीं कर सकता।

फूल प्रफुल्लता का प्रतीक है। स्वयं खिला रहता है तथा औरों का हृदय खिला देता है। स्वयं अपना स्थान छोड़ कर भी दूसरों की शोभा बढ़ाता है।

• चन्दन शीतलता और सुगन्धि का प्रतीक है। चन्दन के वृक्ष से सर्प भी लिपटे रहकर शीतलता पाते हैं, पर वह उनसे प्रभावित नहीं होता। जहाँ तक उसकी गन्ध जाती है, अन्य पेड़ों में भी अपने जैसी सुगन्ध पैदा कर देता है। कटकर, घिसकर, पिसकर, जलकर हर प्रकार अपनी सुगन्धि ही फैलाता है। जिस मस्तक पर लग जाता है, उसे शीतलता प्रदान करता है। जो व्यक्ति चन्दन की तरह बनते हैं, वे प्रभु को प्रिय हैं।

• दीपक सदा प्रकाशित रहता है। थोड़ी-सी मात्रा थोड़े-से स्नेह को अपनी लगन (वर्तिका) के सहारे लगाकर स्वयं तिलतिल जलकर भी अन्धेरा दूर करता है। ज्योतिधर बनकर बहुतों को ज्योति तथा प्रकाश देता है।

• अक्षत पूर्णता की भावना के प्रतीक हैं। जो कुछ अर्पित किया जाय, पूरी भावना के साथ किया जाये। अधूरे मन से भगवान् का कार्य नहीं किया जाता।

• प्रसाद में मिष्ठान्न चढ़ाया जाता है। तात्पर्य है कि प्रभु को मधुरता ही प्रिय है। कटुता, उद्दण्डता आदि नहीं मधुर व्यवहार से ही प्रभु प्रसन्न होते हैं।

Click To Enlarge

Click To Enlarge

समय किसी का इंतजार नहीं करता

सफलता है क्या -
हजार करोड़ हो जायें, लेकिन
बेटा शराबी निकल जाये
पति दूसरी के साथ
रात बितायें
जिस रास्ते से गुजर रहे
हैं उसमें सुख का
अनुभव करे
उसे सफल कहेंगे.
सफलता एक
दृष्टिकोण है।

मनुष्य और ईश्वर

एक महात्मा गंगा तट पर प्रवचन कर रहे थे। भारी भीड़ जमा थी। चर्चा का विषय था- जीव और ब्रह्म की एकता। दोनों के संबंध का विश्लेषण करते हुए महात्मा ने कहा कि जीव ईश्वर का ही अंश है। जो गुण ईश्वर में हैं, वे जीव में भी मौजूद हैं। सुनने वालों में से एक ने पूछा, 'भगवन्! ईश्वर तो सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है, पर जीव तो अल्पज्ञ और अल्प सामर्थ्य वाला, फिर इस भिन्नता के रहते एकता कैसी?' यह सुनकर महात्मा जी मुस्कराए। फिर उन्होंने उस व्यक्ति से कहा, 'एक लोटा गंगाजल ले आओ।' वह व्यक्ति लोटे में गंगाजल जल भर लाया। फिर महात्मा जी ने उस व्यक्ति से पूछा, 'अच्छा यह बताओ कि गंगा के जल और इस लोटे के जल में कोई अंतर तो नहीं है?' वह व्यक्ति बोला, 'बिल्कुल नहीं।' महात्मा जी ने कहा, 'देखो, सामने गंगाजल में नावें चल रही हैं। एक नाव इस लोटे के जल में चलाओ।' यह सुनकर वह व्यक्ति भौंचक रह गया और महात्मा जी का मुंह ताकने लगा। फिर उसने साहस करके कहा, 'भगवन् लोटा तो छोटा है और इसमें थोड़ा ही जल है। इसमें भला नाव कैसे चलेगी।' महात्मा जी ने गंभीर होकर कहा, 'जीव एक छोटे दायरे में सीमाबद्ध होने के कारण लोटे के जल के समान अल्पज्ञ और अशक्त बना हुआ है। यदि यह जल फिर गंगा में लौटा दिया जाए, तो उस पर नाव चलने लगेगी, इसी प्रकार यदि जीव अपनी संकीर्णता के बंधन काटकर महान बन जाए, तो उसे ईश्वर जैसी सर्वज्ञता और शक्ति सहज ही प्राप्त हो सकती है।'

जो भी बात कर रही हूं,
अपनी बात कर रही हूं.

फिट रहना है, तो पाल लीजिए एक कुत्ता

नशामुक्ति का कारगर उपाय है ध्यान

गाली देना मानसिक क्रूरता है

Click To Enlarge

मीठी बोली

भगवान् गणेश जी से प्रेरणा

भगवान् गणेश जी का बड़ा सिर हमें बड़ी और फायदेमंद बातें सोचने के लिए प्रेरित करता है. उनके बड़े कान हमें विचारों और सुझावों को धैर्यपूर्वक सुनने की सीख देते हैं। उनकी छोटी आंखें हाथ में लिए कार्यों को उचित ढंग से और जल्दी पूरा करने की ओर इशारा करती हैं. उनकी लम्बी नाक हमें अपने चारों ओर की घटनाओं की जानकारी और ज्यादा सीखने के लिए प्रेरित करती है और उनका छोटा मुंह हमें कम बोलने और ज्यादा सुनने की याद दिलाता है।

नौ द्वारे का पिंजरा तामे पंछी मौन

Click To Enlarge

Click To Enlarge

फल खरीदने जाते हैं तब यही चाहता है ना बड़ा भी हो बढ़िया भी हो सस्ता भी हो

शिव बाबा - बड़े से बड़ा भी है बढ़िया भी है सस्ता भी है मीठा भी है -

मानव-जीवन में एक बात स्पष्ट देखी जा सकती है कि यदि मनुष्य में सत्त्व गुण प्रधान हो तो परमार्थ के काम, पवित्र काम और दूसरों के कल्याण के कार्य करने की रुचि होती है और ऐसे व्यक्ति की अन्तः-[illegible] उत्साह बढ़ाती है।

ज्ञान दान से बुद्धि रूपी झोली भर रही है ना

अज्ञान जैसा शत्रु नहीं, ज्ञान जैसा मित्र नहीं

परदेश में ज्ञान एक मित्र के समान सहायक होता है। विदेश में ज्ञान माता के समान रक्षक और पिता के समान सहायक होता है। ज्ञान अनेक दुखों को दूर कर पत्नी के समान आनंद प्रदान करता है।

कोई फर्क नहीं पड़ता कि हमारी चमड़ी का रंग क्या है, कि हम पढ़े-लिखे कितने हैं, या हमारे पास कितना पैसा है। या हम इधर मुंह कर के प्रार्थना करते हैं या उधर मुंह कर के।

ऊँचा उठना हो (महान् बनना हो) तो पहले नीचा (नम्र) बनना चाहिए। चातक पक्षी का घोंसला नीचे होता है पर वह आसमान में बहुत ऊँचा उड़ता है। ऊँची जमीन में खेती नहीं होती, उसके लिए नीची जमीन चाहिए, जहाँ पानी जम सके। तभी खेती हो सकती है।

एक बार स्वामी विवेकानन्द के पीछे बन्दर पड़ गये। विवेकानन्द को भागता देख एक बुजुर्ग व्यक्ति ने आवाज लगाई कि ठहर जाओ और बन्दरों को आँखों में देखो। विवेकानन्द ने वैसा ही किया। फिर जब वह बन्दरों की तरफ बढ़े तो बन्दर पीछे भागने लगे। परिस्थितियाँ भी बन्दर के समान हैं।

दानी कोई सोचता नहीं है कि मुझे दान करना है. अपने आप इच्छा जो चाहता है कि जो मुझे मिला है, वह औरों को मिले

छूटना और छोड़ना

छूटना जबरदस्ती से होता है छोड़ना स्वेच्छा से होता है। इसलिये छूटने में दुःख है, पीड़ा है, क्लेश है जबकि छोड़ने में सुख है, शांति है और आनन्द है। स्वयं छोड़ने में जो आनन्द है वह छूटने में नहीं है। स्वयं छोड़ने वाला त्यागी कहा जाता है।

एक भाई ने कहा, दुनिया में लोग कहते हैं, जो इनके पास है वो मेरे पास आए। भगवान का बच्चा सोचेगा, जो मेरे पास है, वो सबके पास जाए। कितना अंतर हो गया।

कराने वाला करा रहा है।

गरीबों से कई गुना अधिक दुःखी हैं अमीर -

Click To Enlarge

- मुक्त होंगे तो मुक्तिधाम जायेंगे
- बेचारा उसको कहा जाता है जो बन्धनों में फंसा हुआ है।
- बावली आत्मा दुःखधाम में अटकी पड़ी है।
- पुराने संकल्पों से, पुराने संबंधों से अपने को छुड़ाना है भगवान से जोड़ना है

मृत्यु ने मुझे जीना सीखा दिया

सुखी रहने के लिए भविष्य की तैयारी करो। अच्छे कर्मों का खाता जमा करो।

ध्यान क्या है - आप पूरी तरह अपने आप में डूब जायें। जैसे - बताशा पानी में घुलता है

जो प्रेम करता है, वह प्रेमिका के पालतू कुत्ते संग भी अच्छे रिश्ते बनाने की कोशिश करता है।

हम गंदगी जमा करने वाले जमादार थोड़ी ना हैं जो हम अपने चारों तरफ कचरा जमा करके रखें। लोगों ने जो कचरा कई साल पहले ही फेंक दिया था लेकिन हमने दूसरों की कही हुई कड़वी बातें, कड़वा व्यवहार, नफरत, जलन, घृणा सब कुछ संजो के रखा हुआ है अब भला सुख कैसे मिलेगा।

सजाओं से छूटना है तो भगवान को याद करो

ज्ञान की बातें बुद्धि में सदा स्मरण करते रहें।

एक बार तुम गुरु की बात मानकर तो देखो, एक बार तुम छलांग लगाकर तो देखो! सौदा मंजूर न हो तो सौदा वापस कर देना

यह सिद्धान्त है कि जो दूसरे को कमजोर बनाता है वह खुद कमजोर होता है। जो दूसरे को समर्थ बनाता है वह खुद समर्थ होता है जो दूसरे को चेला बनाता है वह समर्थ नहीं होता। जो गुरु होता है, वो दूसरे को भी गुरु ही बनाता है। जो खुद बड़ा होता है वह दूसरे को भी बड़ा ही बनाता है।

Click To Enlarge

- पास्ट के कर्म भोगने रहते हैं जो याद करने नहीं देते.

जो कुछ भी आता है वह जाता भी है

- बाबा (भगवान) सुखदाता है हमें भी सुखदाता बनना है

गलत काम करने वाला शरीर से भले ही मजबूत हो, मन से बहुत कमजोर होता है

- हमारे हर कर्म से कल्याण हो

- सेवा माना त्याग सेवा से प्यार मिलता है

यदि हम मनुष्य होकर भी मनुष्यता से दूर भागते हैं तो मनुष्यता का अर्थ ही क्या रह जाता है?

- कॉमेंट्री के आधार पर खिलाड़ी नहीं खेलता.

मन रूपी बगीचा में हमेशा सकारात्मक सोच के पौधे लगाइए। जैसा बोओगे, वैसा काटोगे।

- आध्यात्मिक गुरु ही आपके मन को समझ कर आपकी अवस्था को ऊपर उठाता है।

- सुनी सुनाई बातों पर नहीं लगना चाहिए, लगते-लगते बड़ी गांठें ही होंगी। सिवाय ज्ञान के और कुछ सुनाते हैं तो समझो यह हमारा दुश्मन है। दुर्गति में ले जाते हैं। कभी भी परमत पर नहीं लगना चाहिए। परमत पर चला तो यह मरा। झूठी बातें बोलने वाले तो बहुत हैं।

- कहना सहज होता है, करने में मेहनत है। मेहनत का फल अच्छा होता है।

बुद्धिमान पुरुष को सदैव आशावान रहना चाहिए, उदास नहीं

- अमृत के बीच विष की एक बूंद भी पड़ने से सारा अमृत विष बन जाता है।

Click To Enlarge

Click To Enlarge

• धार्मिक आदमी तो बहुत संवेदनशील होता है

• सब कुछ सुनते हैं ना, संगति का भी चयन करो
जो विचार चलते हैं क्या पसन्द हैं, नहीं
तो फिर क्या करें।
दुबारा चयन हो सके ऐसा काम करो।

• कमजोर आत्मा दुःख दे सकती है क्या -
कुत्ता भी कमजोर को काटता है
किसी को दुःख देना कमजोर आत्मा
की निशानी है -

• देना ही देना है
मुझे ही प्यार देना है
मुझे ही आशीर्वाद देना है
मुझे ही कल्याण करना है
दिल से सबको सुख देना है
कहते हो ना - मेरे दिल से बद्दुआ निकली है
दिल से अब आशीर्वाद देना है.

• हिम्मत से मदद मिलेगी।
भगवान को याद करना भी हिम्मत है।

• कोशिश करने वालों में काशिश होती नहीं
आज से कोशिश शब्द खत्म करो -
मेरे बिना कोई कर नहीं सकता।

• रास्ते जाते कोई खुशबू आती है तो दिल होती है कि
जाकर देखें क्या है। वैसे ही तुम्हारे गुण भी न
चाहते हुए खींचें -

सूरज रोज
कितने तेज के
साथ आता है
और जाता भी
रोज। अंधेरा
खत्म हुआ
अच्छा - कुछ
काम हुआ
सूरज इन ख्यालों
में उलझे बिना
अपना काम कर
रहा है -

क्रोध 'समझदारी' को
घर से बाहर निकाल
देता है
और
दरवाजे पर चटकनी
लगा
देता
है -

जो जाग गया
है, वो औरों को
जगाये बिना
नहीं रह सकता

मस्ती सस्ती नहीं
हर किसी को
जंचती
नहीं

Click To Enlarge

असीम पुण्य की प्राप्ति

एक जीवन्मुक्त महात्मा को स्वप्न आया। स्वप्न में सब तीर्थ मिलकर चर्चा कर रहे थे कि कुंभ के मेले में किसको अधिक से अधिक पुण्य मिला होगा। प्रयागराज ने कहा कि "अधिक से अधिक पुण्य तो उस रामू मोची को मिला है।"

गंगाजी ने कहा : "रामू मोची तो मुझमें स्नान करने नहीं आया था।"

देव प्रयाग ने कहा : "मुझमें भी नहीं आया था।"

रुद्र प्रयाग ने कहा : "मुझमें भी नहीं।"

प्रयागराज ने फिर से कहा : "कुंभ के मेले में कुंभ-स्नान का अधिक से अधिक पुण्य यदि किसीको मिला है तो रामू मोची को मिला है।"

सब तीर्थों ने एक स्वर में पूछा :

"वह रामू मोची कहाँ रहता है और क्या करता है?"

प्रयागराज ने कहा : "रामू मोची जूता सीता है और केरल प्रदेश में दीवा गाँव में रहता है।"

महात्मा नींद से जाग उठे। सोचने लगे कि यह भ्रांति है या सत्य है। प्रभात कालीन स्वप्न प्रायः सच्चे पडते हैं। इसकी खोजबीन करनी चाहिए।

संत पुरुष निश्चय के पक्के होते हैं। चल पड़े केरल प्रदेश की ओर। घूमते घामते पूछते पूछते स्वप्न में निर्दिष्ट दीवा गाँव में पहुँच गये। तलाश की तो सचमुच रामू मोची मिल गया। स्वप्न की बात सच निकली।

जीवन्मुक्त महापुरुष रामू मोची से मिले। रामू मोची भावविभोर हो गया :

"महाराज! आप मेरे द्वार पर? मैं तो जाति से चमार हूँ। चमड़े का धन्धा करता हूँ। वर्ण से शूद्र हूँ। उम्र से लाचार हूँ। विद्या से अनपढ़ हूँ और आप मेरे यहाँ?"

"हाँ..." महात्मा बोले। "मैं तुमसे यह पूछने आया हूँ कि तुम कुंभ में गंगा-स्नान करने गये थे? इतना सारा पुण्य तुमने कमाया है?"

रामू बोलता है : "नहीं बाबाजी! कुंभ के मेले में जाने की बहुत इच्छा थी इसलिए हररोज मैं टका टका करके बचत करता था। (एक टका माने आज के तीन पैसे।) इस प्रकार महीने में करीब एक रुपया इकट्ठा होता था। बारह महीने के बारह रुपये हो गये। मुझे कुंभ के मेले में गंगा-स्नान करने अवश्य जाना ही था, लेकिन हुआ ऐसा कि मेरी पत्नी माँ बननेवाली थी। कुछ समय पहले की बात है। एक दिन उसे पड़ोस के घर से मेथी की सब्जी की सुगन्ध आयी। उसे वह सब्जी खाने की इच्छा हुई। शास्त्रों में सुना था कि गर्भवती स्त्री की इच्छा पूरी करनी चाहिए। अपने घर में वह गुंजाइश नहीं थी तो मैं पड़ोसी के घर सब्जी लेने गया। उनसे कहा :

"बहनजी! थोड़ी-सी सब्जी देने की कृपा करें। मेरी पत्नी को दिन रहे हैं। उसे सब्जी खाने की इच्छा हो आई है तो आप...।"

"हाँ भैया! हमने सब्जी तो बनाई है..." वह माई हिचकिचाने लगी। आखिर कह ही दिया : "... यह सब्जी आपको देने जैसी नहीं है।"

"क्यों माताजी?"

"हम लोगों ने तीन दिन से कुछ खाया नहीं था। भोजन की व्यवस्था नहीं हो पाई। आपके भैया काफी परेशान थे। कोई उपाय नहीं था। घूमते घामते स्मशान की ओर वे गये थे। वहाँ किसीने अपने पितृओं के निमित्त ये पदार्थ रख दिये थे। आपके भाई वह छिप-छिपाकर यहाँ लाये। आपको ऐसा अशुद्ध भोजन कैसे दें?"

यह सुनकर मुझे बहुत दुःख हुआ कि अरे! मैं ही गरीब नहीं हूँ। अच्छे कपड़ों में दिखनेवाले लोग अपनी मुसीबत कह भी नहीं सकते, किसीसे माँग भी नहीं सकते और तीन तीन दिन तक भूखे रह लेते हैं। मेरे पड़ोस में ऐसे लोग हैं और मैं टका टका बचाकर गंगा-स्नान करने जाता हूँ? मेरा गंगा-स्नान तो यहीं है। मैंने जो बारह रुपये इकट्ठे किये थे वे निकाल लाया। सीधा सामान लेकर उनके घर छोड़ आया। मेरा हृदय बड़ा सन्तुष्ट हुआ। रात्रि को मुझे स्वप्न आया और सब तीर्थ मुझसे कहने लगे : 'बेटा! तूने सब तीर्थों में स्नान कर लिया। तेरा पुण्य असीम है।'

बाबाजी! तबसे मेरे हृदय में शान्ति और आनन्द हिलोरें ले रहे हैं।"

बाबाजी बोले : "मैंने भी स्वप्न देखा था और उसमें सब तीर्थ मिलकर तुम्हारी प्रशंसा कर रहे थे।"

वैष्णव जन तो तेने रे कहीए जे पीड़ पराई जाणे रे।
पर दुःखे उपकार करे तोये मन अभिमान न आणे रे॥

धर्म खुद तो 'जबर्दस्त' है, मगर वह किसी के साथ 'जबर्दस्ती' कभी नहीं करता। इस धर्म को समझने के लिए दिमाग नहीं, दिल चाहिए।

Click To Enlarge

आज के आदमी के पास सुख और सुविधा के लिए यों तो बहुत कुछ है। उसके पास टी.वी.-सेट है, डिनर-सेट है, डायमंड-सेट है, सोफा-सेट है, टी-सेट है। सिर्फ एक 'माइण्ड-अपसेट' है, बाकी सब सेट है। आदमी का दिमाग विचारों का विश्व-विद्यालय बना हुआ है और दिमाग में एक अंतहीन महा-भारत मचा हुआ है। हर ओर टेंशन है। टेंशन का इलाज मेडिसिन नहीं, मेडिटेशन है।

संत का सत्संग ज्ञान के झरने हैं, जहाँ कुछ तो प्यास बुझाते हैं। कुछ लोग हैं, जो सिर्फ एक-दो घूंट ही पीते हैं और आगे बढ़ जाते हैं, और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो सिर्फ कुल्ला करते हैं। सत्संग के इन झरनों में प्यास तो बुझानी ही है, साथ ही गहरे डुबकियाँ भी लगानी है क्योंकि जिन्दगी के अवदार-मोती गहराई में ही मिलते हैं।

बोर्ड पर एक सीधी रेखा खींचें, क्या इस रेखा को बिना मिटाये छोटा किया जा सकता है ?

जवाब में उस रेखा के नीचे उससे भी बड़ी रेखा खींचे आगे बढ़ने के लिए हम किसी को पीछे न हटायें लेकिन उससे प्रेरणा लेकर अपनी योग्यता और व्यक्तित्व का अधिक विकास करें।

एक बार लिंकन से पूछा गया - 'जब तुम्हारे सामने कोई तुमसे योग्य व्यक्ति हो और तुम्हारे मन में ईर्ष्या होने लगे तो क्या उपाय करते हो ?' लिंकन ने तुरंत उत्तर दिया - 'मैं उससे भी अच्छा बनने का प्रयास करता हूँ।'

संत तो केवल मार्ग दिखा सकता है; चलना तो तुम्हें ही होगा। कहते हैं न कि घोड़े को नदी तक तो ले जा सकते हो, पानी भी दिखा सकते हो, मगर पिला नहीं सकते। मैं तुम्हें नदी तक ले आयी हूँ, पानी भी दिखा रही हूँ। अब पीना तो तुम्हें ही होगा।

Click To Enlarge

संत ने द्वार पर दस्तक दी और आवाज लगाई : भिक्षां देहि। एक नन्हीं बालिका बाहर आई। बोली : बाबा ! हम गरीब हैं, हमारे पास देने को कुछ नहीं है। संत बोले : बेटी ! मना मत कर, अपने आंगन की धूल ही दे दे। लड़की ने एक मुट्ठी धूल उठाई और भिक्षा पात्र में डाल दी। शिष्य ने पूछा : 'गुरुजी ! धूल भी कोई भिक्षा है' आपने धूल देने को क्यों कहा ? 'संत बोले : बेटे ! अगर वह आज ना कह देती तो फिर कभी नहीं दे पाती। आज धूल दी तो क्या हुआ ? देने का संस्कार तो पड़ गया। आज धूल दी है; फल-फूल भी देगी। दाता बनकर जिओ।

सिर्फ बाहरी सुन्दरता से किसी को सुन्दर समझना भूल है सुन्दरता का मापदंड अच्छा स्वभाव है।

हमारे कुछ भी कहने का असर क्यूं नहीं होता क्योंकि हम कहते तो बहुत हैं लेकिन जीवन में दिखाई कुछ भी नहीं देता। कहने वाला हंसी का पात्र बन कर रह जाता है।

पानी सबकी धुलाई करता है मछली तो रहती ही पानी में है निकालने पर बांस आती है बिना कुछ बिना बांस जायेगी नहीं -

विवेकानंद जी अमेरिका गए तो धर्मसम्मेलन में भाग लेने सभी धर्म स्थापक ने सबने हंसी उड़ाई आपका धर्म ग्रन्थ सबसे नीचे है। ठीक ही तो है। आधार दृढ़ होगा तो आगे ही परिणाम क्या होगा।

रोज न सही, पर कभी-कभी मरघट जरूर जाओ। और वहां जलती हुई चिताओं को देखो। वहाँ ज्यों-ज्यों चिता जलेगी तुम्हारी चेतना भी जगती चली जायेगी। दरअसल किसी की जलती हुई चिता तुम्हारे लिए एक चेतावनी है कि आज नहीं तो कल तुम्हारा भी यही हाल होने वाला है। समझ हो तो किसी की भी अर्थी जीवन का अर्थ दे सकती है और समझ न हो तो ~~तरुणसागर जैसे मुनि भी~~ संत भी कुछ नहीं कर सकते। जो अर्थी को देखकर जीवन का अर्थ नहीं समझ सकता वह डोली को देखकर जीवन का क्या अर्थ समझेगा।

आंखों का भला करते चलो तेरा स्वयं ही भला हो जाएगा। कोई देख रहा हो या न देख रहा हो लेकिन परमात्मा लाखों आंखों से देख रहा है तो जब परमात्मा ज्ञान दे रहा है तो मनुष्यों के ज्ञान की इच्छा क्यों रखते हो

Click To Enlarge

हँसना पुण्य है। हँसाना परम-पुण्य है।
जब आप हँसते हैं तो ईश्वर के लिए प्रार्थना करते हैं
मगर जब आप किसी रोते को हँसाते हैं तो
ईश्वर आपके लिए प्रार्थना करता है।
रोने में तो फिर भी आँसू लगते हैं, हँसने में तो वे भी
नहीं लगते। फिर क्यों नहीं हँसते ?
हम हँसे, लेकिन हमारी हँसी मामा शकुनि की तरह
कपटपूर्ण न हो बल्कि शिशु और संत की तरह
निश्छल/निष्पाप हो।

कुदरत से सीखो -
कुदरत हमेशा देती है

वो बात क्यों जो तुम
नहीं चाहते कि
कोई दूसरा तुम्हारे
साथ करे ?

हमारे बोल सुख देने वाले हों -
शब्द ऐसे बोलो जो सब आत्मा
होकर सुनें -

आत्मा में मिलावट होते-होते
तुम्हारा शरीर भी आज
ऐसा बिमारी वाला हो
गया है -

भजन, कीर्तन करते रहे और स्वभाव मीठा
न हो तो जिंदगी में बरकत
नहीं होगी -

तुम्हारा उठना - बैठना सुख देने
वाला हो -

अकबर ने बीरबल से पूछा– बीरबल !
मेरी हथेली में बाल क्यों नहीं हैं? बीरबल बोला
महाराज! आप अत्याधिक दान देते हैं इसलिए
आपकी हथेली के बाल देते देते झर गये ।
अकबर ने कहा: ठीक है,
पर तुम्हारी हथेली में बाल क्यों नहीं हैं ?
बीरबल बोला –महाराज ! आप देते हैं और
मैं लेता हूँ। आपके देते देते झर गये और
मेरे लेते लेते झर गये ।
अकबर ने कहा:यह भी ठीक है, मगर
सभी दरबारियों की हथेली में भी तो बाल नहीं
हैं। क्यों ? बीरबल मुस्कुराया और बोला:
महाराज! इनके बाल हाथ मसलते
मसलते झर गये कि
राजा बीरबल को क्यों दे रहा है।
उदाहरण एक–कारण तीन।

इतने श्रेष्ठ कर्म करो जो दिल
से दुआ निकले
बीज गुप्त होता है
वैसे ही सुख भी गुप्त दो
गुप्त दान का महत्व होता
है -

सब पूछते हैं कैसे मेडिटेशन
करें, भगवान को कैसे याद
करें, कैसे ध्यान करें
क्या तुम बता सकते हो.

भगवान से तुम्हारा प्यार नहीं है
इसीलिए सारी मुसीबत है.

Click To Enlarge

जीना एक कला है। हँसते हुए
जीना इससे भी बड़ी कला है। हँसाते हुए जीना
और भी बड़ी कला है। पर हँसते हुए मरना
सबसे बड़ी कला है। जब तुम पैदा
हुए तो दुनिया हँस रही थी
और तुम रो रहे थे। अब कुछ ऐसा करो
कि जब तुम मरो तब
दुनिया रोए और तुम हँसो। रोते हुए
पैदा होना दुर्भाग्य नहीं है, वरन रोते-रोते जीना और
रोते-रोते मर जाना-यह दुर्भाग्य है। हँसना
खुशियों का खजाना है। संसार में
रुदन तो सबके पास है। अगर तुम दूसरों को
कुछ देना चाहते हो तो बस उसका चेहरा
मुस्कुराहट से भर दो।
इससे बेहतर और कोई तोहफा नहीं होगा।

आज जो हम दुःखी हैं, बिमार हैं न जाने क्या-क्या मुसीबतें हैं उसका कारण सिर्फ और सिर्फ यही है कि हमने पत्थर के समान कठोर बन कर अनेकों के हृदय में घाव किये हैं। अब मक्खन से भी अधिक कोमल बन कर जो-जो घाव दिये उन्हें भरने का सच्चा पुरुषार्थ करना है।

घर के बाहर Welcome लिखा होता है। क्या ये चोरों के लिए भी है।

जहां मन वहां तन

एक समय दामोदर दास जी ठाकुर जी की सेवा में मग्न थे। परन्तु उनका मन किसी अन्य स्थान पर केंद्रित था। वह नखास में जाकर घोड़ा खरीदने की सोच रहे थे। यह बात उनकी लड़की को पता चल गई। कुछ समय पश्चात वहां एक वैष्णव आये, उनके पूछने पर दामोदर दास की लड़की ने कहा, 'वह नखास में घोड़ा खरीदने गये हैं।'

इसके पश्चात किसी ने दामोदर दास जी से कहा कि जब आप सेवा में थे तब आपकी लड़की ने कहा कि वह नखास में घोड़ा खरीदने गये हैं। दामोदर दास जी के पूछने पर उसने कहा, 'सेवा के समय आपका मन कहां था?' इसका अभिप्राय है कि जहां पर मन होता है वहां पर तन होता है। इस पर दामोदर दास जी चुप हो गये।

छोटा बालक माँ से प्रेम
करता है। कोई हजार रुपये दे तो भी
माँ की गोद नहीं छोड़ता। थोड़ा बड़ा
हुआ तो माँ को भूलने लगता है। अब उसे
खिलौने से प्रेम हो गया। माँ के
बुलाने पर भी नहीं आता। थोड़ा और
बड़ा हुआ तो दोस्तों से प्रेम हो
गया। स्कूल गया तो पढ़ाई और पुस्तकों
से प्रेम हो गया। डिग्रियाँ मिली, नौकरी लग गई
तो नौकरी से प्रेम हो गया। फिर किसी छोकरी
से प्रेम हो गया। विवाह
हो गया। अब पत्नी से प्रेम
हो गया। अब माँ से सीधे मुँह बात नहीं
करता। पत्नी का पक्ष लेकर माँ को अपमानित
करता है। बुढ़ापा आया और सबने साथ छोड़
दिया तब कहीं भगवान
याद आया

सौ चाचा एक बाप की बराबरी नहीं कर सकते
परमात्मा तो [illegible] देता है
उसकी बराबरी कोई कर सकता है क्या।

अन्धेरा मिटाने के लिए छोटा सा दीपक भी काफी है।

Click To Enlarge

सत्संग का फल

[illegible]

संगति

एक जल बिंदु गर्म तवे पर पड़ा। छन की आवाज़ के साथ भाप बन कर उड़ गया। एक जल बिंदु कमल पर गिर गया। प्रातः काल मोती-सा चमक रहा था। सूर्य प्रखर हुआ। दोपहर हो गयी, उसका अस्तित्व मिट गया।

एक जल बिंदु स्वाति नक्षत्र में सीप-मुख में गिरा। समयानुसार उसका मुंह खोला गया तो उसमें से निकला एक मोती।

तवे की संगति क्षणिक थी, मिट गया बूंद। कमल पत्र पर थोड़ी देर रहा पर सीप मुख में मोती बन गया। अर्थात मनुष्य को सोई - समझकर संगति करनी चाहिए, जैसा संग - साथ होगा, वैसा जीवन बनेगा।

संसार दुख नहीं है।

संसार के प्रति जो आसक्ति है, वह दुःख है। अटैची दुःख नहीं है, अटैची के प्रति जो अटैचमेंट है, वह दुःख है। मकान में आग लगी। पिता जोर-जोर से रोने लगा। पड़ोसी ने कहाः यह मकान तो कल तुम्हारे बेटे ने बेच दिया था। पिता का रोना एक दम बंद हो गया। बेटा दौड़ता आया और बोलाः पिताजी ! मकान जल रहा है और आप...। पिता ने कहाः लेकिन तुमने तो यह मकान बेच दिया है ना। पुत्र बोलाः बेचने की बात चली थी मगर बिका नहीं। इतना सुनना था कि पिता फिर दहाड़ मारकर रोने लगा। अपनापन है, इसलिए रोना आता है।

जीवन एक भेलपुरी है,

बर्फी का टुकड़ा नहीं। जिसमें कुछ खट्टा भी है तो कुछ मीठा भी। हमें ध्यान रखना होगा कि जिंदगी में सुख के साथ दुःख का होना लाज़मी है। दिन के बाद रात रात के बाद दिन-यह शाश्वत नियम है। दिन ही नहीं टिकता तो रात कहां से टिकेगी? सुख ही नहीं टिकते तो दुःख कहां से टिकेंगे? बुरे समय और संकटों की घड़ियों में बस यही याद रखे कि अच्छे दिन नहीं रहे तो बुरे दिन भी ज्यादा समय रहने वाले नहीं हैं। अंधेरा गहरा हो जाये तो समझना सुबह होने को है।

आँख बड़ी नालायक है।

अनर्थों की जड़ मनुष्य की आँख ही है। सीता को देखकर रावण की आंख बिगड़ी तो उसका मन बिगड़ गया। फिर वाणी बिगड़ी, फिर व्यवहार बिगड़ा फिर रावण का जीवन ही बिगड़ गया। और तो क्या कहें रावण का नाम भी बिगड़ गया। हजारों साल गुजर गये पर किसी बाप ने अपने बेटे का नाम 'रावण' नहीं रखा।

Click to enlarge

किसी ने पूछा है: मुनि श्री !
जब कोई श्रद्धालु आपके पैर छूता है तब आप क्या सोचते है ? मैं सोचता हूँ : आज कोई पैर पर सिर रख रहा है । तो कल कोई सिर पर पैर भी रख सकता है ।
इंसान को मान–अपमान में समभाव रखना चाहिए । दूसरी बात, मैं सोचता हूँ: मैंने भी कभी महापुरुषों के पैर छुए होंगे । उसका ही फल है कि ये आज मेरे पैर छू रहे हैं ।
तीसरी बात, मैं सोचता हूँ: ये आचरण के कारण मेरे चरण छू रहे है ।
मुझे आचरण से डिगना नहीं है ।

प्रत्येक व्यक्ति गुरु बनना चाहता है और हर भिखारी करोड़पति बनना चाहता है । दोनों की स्थिति हास्यास्पद है,
बहुत अच्छा है तुम अपना मास्टर बनो, दूसरे का नही ।

माया सबको नचाती है, जो माया को नचा दे, वही परम भक्त है

जो खुद अपना कल्याण नहीं कर सकता, वह दूसरे का भी कल्याण नहीं कर सकता। आखिर बुझा हुआ दीप दूसरों को क्या प्रज्जवलित करेगा ?

एक स्वार्थ मुझे तुम्हारे बीच खींच लाता है और मुझे बोलने को मजबूर करता है और वह स्वार्थ है तुम्हारी खोई हुई हँसी वापस लौटाना। मैं तुम्हें हंसना सिखाना चाहती हूँ। क्योंकि हंसना पुण्य है। हंसाना परम-पुण्य है।

एक सेठ बीमार था ।
दवा खाने के बाद भी ठीक नहीं हो रहा था । आखिर वह हकीम लुकमान से मिला लुकमान ने कुछ गोलियां दी और कहा: इन्हें दिन में तीन बार अपने माथे के पसीने में पिघलाकर खा लेना । सेठ कुछ ही दिनों में ठीक हो गया । शिष्य ने कहा: गुरुदेव ! बड़ी चमत्कारी दवा है । लुकमान हँसा और बोला–दवा क्या उपलों की राख थी । पर उसे तीन बार माथे पर पसीना लाने के लिए बड़ी मेहनत करनी पड़ी होगी । यह चमत्कार उसी पसीने का है ।
सच्ची नींद और सच्चा स्वाद चाहिए तो पसीना बहाना मत भूलिए ।

Click to enlarge

बच्चा यों भी सुन्दर लगता है
लेकिन कोई उसकी आँखों में काजल डाल दे
तो और भी सुन्दर लगने लगता है और
फिर हर कोई उसे गोद में लेकर खिलाना चाहता
है। यूँ तो तुम भी सुन्दर हो, लेकिन यदि तुमने
अपनी आँखों में प्रभु-भक्ति का काजल डाल
लिया तो तुम और भी सुन्दर लगने लगोगे और
फिर तुम्हें खुद प्रभु गोद में लेकर खिलाए तो
आश्चर्य नहीं।

किसी ने पूछा-कथाकार हो या प्रवचनकार
इन्हें ऊँचा क्यों बैठाते हैं ?
रात हो और बिजली चली जाये तो
हम दीप जलाते हैं और
फिर उस दीप को ऊँचे स्थान पर रखते हैं। क्यों ?
क्योंकि उस दीप का प्रकाश सब ओर फैल सके।
कथाकार हो या प्रवचनकार—
ये जलते हुए दीप हैं।

मुँह खोलकर तो दुनिया हंसती है। मैं चाहता हूँ
तुम दिल खोलकर हंसो। क्योंकि जो दिल
खोलकर हंसता है, उसे दिल का दौरा नहीं पड़ता।
हँसना - यही भक्ति है, हंसाना - यही मुक्ति है,
मुस्कुराना - यही जप है, खिलखिलाना -
यही तप है। जब तुम रोते हो तो
एकदम कच्चे लगते हो,
मुस्कुराते हो तो एकदम बच्चे लगते हो,
हंसते हो तो एकदम अच्छे लगते हो।
मगर जब तुम किसी रोते को हंसाते हो तो
एकदम सच्चे लगते हो।

Click to enlarge

कभी पत्नी, बच्चों, नौकर से कोई गलती हो जाती है, तो तुम उसे दंड देते हो। कभी खुद तुमसे कोई गलती हो जाये तो खुद को भी तो दंड दो। जैसे सुबह प्रार्थना न हो और नाश्ता कर लो तो दंड लो, आज मैं दिन में दो बार से ज्यादा अपना मुंह जूठा नहीं करूंगा। क्रोध में किसी को कुछ बक दो तो दण्ड लो, आज मैं घंटे भर का मौन रखूंगा। माँ-बाप या गुरु तुम्हें कब तक दण्ड देंगे ? आप अपने जज खुद बनिए और अन्तःकरण की अदालत में खुद को खड़ा कर खुद को दंडित करिए।
जो खुद को दण्ड देगा
वह अनर्थ दण्ड के पाप से स्वतः बच जाएगा।

अपनी कचहरी को
कितना झूठ बोलते हैं
15 झूठ बोले
क्या जरूरी थे ।

जरूर बीज डाला है तभी फल
निकलता है ।

रोज-रोज पढ़ कर समझदार
बन रहे हो तो -

अन्दर झूठ बाहर झूठ
मैं भी अशुद्धता है

बाहर को बाहर के द्वारा बंधवाता है
खुद हाथ नहीं लगाता, खुद तो छिप कर खड़ा है। हमारी बुराई जानने के बाद भी छूटा नहीं करता तो ही हमारा सगा है, प्रायश्चित है।

भगवान की मदद क्यों नहीं
मिलती-
जहां सच्चाई है वहां मदद
मिलती ही है

सच्चे दिल पर साहिब राजी

वाणी है - 'तू अपनी चिन्ता कर। दुनिया की चिन्ता करने के लिए तो दुनियां भरी पड़ी है, पर तुझे छोड़कर कोई दूसरा तेरी चिन्ता करने वाला नहीं है।' और आदमी है कि दूसरों की चिन्ता में मरा जा रहा है। मेरे बच्चों का क्या होगा ? बच्चों के बच्चों का क्या होगा ? क्यों भाई। तेरे बच्चों के बच्चे क्या विकलांग पैदा होंगे? तू इस बात की चिन्ता मत कर कि मेरे बाद व्यापार को कौन संभालेगा ? व्यापार तो बीवी-बच्चे कोई भी संभाल लेगा।
तू इस बात की चिन्ता कर
कि दुर्गति में तुझे कौन संभालेगा।

आपकी ऊंचाई आपके विचारों से
बनती है
खाते चुन कर हैं
पहनते चुन कर हैं
जब कुछ तो चुना हुआ लेते हैं
फिर विचार भी तो चुने हुए
हों।

भगवान तो कहता है सब बोझ मुझे दे दो
लेकिन हम गांव वाले की तरह ट्रेन
में तो बैठ गए लेकिन पोटली
सिर पर रखे रहते हैं।

Click to enlarge

दुनिया में सज्जन और दुर्जन दो तरह के मनुष्य होते हैं। दोनों जीते हैं मगर दोनों में फर्क केवल इतना होता है कि सज्जन दूसरों को हंसाकर और दुर्जन रुलाकर जीता है, और जब दोनों दुनिया से विदा लेते हैं तो सज्जन लोगों को रुलाकर और दुर्जन हंसाकर जाता है। जीवन ऐसा जीना कि जब तुम दुनिया से जाओ तो लोग तुम्हारे लिए रोयें, तुम्हें याद करें। ऐसा जीवन मत जीना कि लोग कहें कि अच्छा हुआ, एक और पाप कटा। दुनिया से जाओ तो लोगों के दिलों में मीठी-यादें और आँखों में प्यार के आंसू छोड़कर जाना।

सुनने की आदत डालो क्योंकि दुनिया में कहने वालों की कमी नहीं है। कड़वे घूंट पी-पीकर जीने और मुस्कुराने की आदत बना लो क्योंकि दुनिया में अब अमृत की मात्रा बहुत कम रह गई है। अपनी बुराई सुनने की खुद में हिम्मत पैदा करो क्योंकि लोग तुम्हारी बुराई करने से बाज नहीं आयेंगे। आलोचक बुरा नहीं है। वह तो जिंदगी के लिए साबुन-पानी का काम करता है। जिंदगी की फिल्म में एक खलनायक भी तो जरूरी है। गली में दो-चार सूअर हों तो गली साफ रहती है।

मनुष्य को कोई याद नहीं करता गुणों को याद करते हैं.

नॉलेज खुशी देती है

अपने लिए सुख 'लाभ' की चाहत है तो दूसरों का भला करते चलो। कारण कि लाभ शब्द को पलट दे तो 'भला' ही तो बनता है।

काटे पर कचरा डालने से काटे का ढेर होता है। अच्छाई पर अच्छाई डालते जायें तो गुलदस्ता तैयार होता है।

एक बार दिन भर के कठोर परिश्रम के कारण थके हुए महात्मा गांधी शाम को सुस्ताने के लिए जैसे ही बिस्तर पर लेटे, उनकी आंख लग गई और ऐसी गहरी नींद आई कि अगली सुबह ही आंख खुली। उस दिन उन्हें बड़ा पछतावा हुआ, क्योंकि नींद के कारण वे शाम को प्रार्थना नहीं कर सके थे। इसके प्रायश्चित के लिए उन्होंने अगले दिन पूरे समय का उपवास करने की ठानी। लोगों ने इसका कारण पूछा तो बापू बोले, एक-एक क्षण मैं जिसके सहारे जी रहा हूं, उसी परमात्मा की याद न हो तो इससे बड़ा पाप और क्या होगा। इसीलिए इस बेलगाम मन को काबू में करने के लिए यह उपवास कर रहा हूं। तन और मन को साध लेना और अनुशासन की पकड़ में रखना भी ईश्वर की उपासना का ही एक रूप है।

ज्ञान रत्न सुनने से पढ़ने से कान मीठे होते हैं

रात सोने से पहले
आज की 'समीक्षा' करें।
आज जो ठीक बन पड़ा
उसकी प्रशंसा करें,
उसे उपलब्धि मानें और
जो गलत हुआ उसके लिए पश्चाताप करें।
आज हुई गलतियों की भरपाई करने के लिए
कल के कार्यक्रम में कुछ ऐसे तथ्य जोड़ें,
जो खोदे गए गड्ढे को पाटकर
समतल कर सके।
मौत को 'टाला' तो नहीं जा सकता,
मगर 'सुधारा' तो जा ही सकता है।

Click to enlarge

आज मैचिंग का जमाना है। ऊपर से नीचे और आगे से पीछे सब ओर मैचिंग चल रही है। वस्त्रों और गहनों के मैचिंग के इस दौर में आज एक और मैचिंग जरूरी हो गई है। वह है स्वभाव (Nature) की मैचिंग। अगर तुम परिस्थितियों और वातावरण के अनुसार अपने आपको नहीं ढाल सकते तो फिर तुम्हें आत्म-हत्या कर लेनी चाहिए क्योंकि यह दुनिया तुम्हारे रहने के लायक नहीं है। तुम्हारे सामने दो ही विकल्प हैं : या तो अपने को बदलिए या फिर आत्म-हत्या के लिए तैयार हो जाइए।

कहते हैं ना - सत्यम्-शिवम्, सुन्दरम्
सत्यम् - मेरी आत्मा सत्य की तरह है
शिवम् - मेरी आत्मा शिव की तरह है
सुन्दरम् - मुझे सुन्दर बनना है
शरीर तो यहीं रह जायेगा, आत्मा का शृंगार करना है।

बड़ा आदमी वह नहीं जिसके यहां चार नौकर काम करते हैं बल्कि वह है जो चार नौकरों का काम खुद अकेला कर लेता है। निठल्ला बैठा आदमी जल्दी बूढ़ा होता है। जब आदमी थक कर बैठ जाता है तो उस पर बीमारियां आकर बैठ जाती हैं। सेवा-निवृत्त होने के बाद भी खाली मत बैठिए। अपने तन और मन को किसी नेक और अच्छे कार्य में लगाए रखिए। थक कर बैठ जाने से तो इंसान की किस्मत भी बैठ जाती है। अच्छे-खासे होकर भी विकलांग क्यों बनते हो भाई?

जीवन की सार्थकता

हकीम लुकमान का बचपन अभावों में बीता था। उन्हें भरण-पोषण के लिए गुलामी भी करनी पड़ी। एक बार उनके मालिक ने ककड़ी खानी चाही। उसने लुकमान को ककड़ी लाने का आदेश दिया। लुकमान ककड़ी ले आए। मालिक ने ज्यों ही ककड़ी मुंह से लगाई उसे पता चल गया कि ककड़ी अत्यंत कड़वी है। मालिक ने ककड़ी लुकमान की ओर बढ़ा दी और कहा, 'ले, इसे तू खा ले।' लुकमान ने ककड़ी ले ली और बिना मुंह बिचकाए खा गए। लुकमान के मालिक को बेहद आश्चर्य हुआ। वह तो यह मानकर चल रहा था कि इतनी कड़वी ककड़ी कोई खा ही नहीं सकता, इसलिए लुकमान इसे फेंक देंगे। लेकिन जब लुकमान ने पूरी ककड़ी मजे से खा ली तो मालिक ने पूछा, 'तू इतनी कड़वी ककड़ी कैसे खा गया?' लुकमान ने हंसते हुए कहा, 'मेरे अच्छे मालिक! आप मुझे रोज स्वादिष्ट खाना बड़े प्यार से खिलाते हैं। आपके द्वारा दी गई कई चीजों का मैं मजा लेता हूं। ऐसे में अगर आपने एक दिन कड़वी ककड़ी दे भी दी तो मैं क्या उसे नहीं खा सकता? मैंने उसे भी और चीजों की तरह ही अच्छा मानकर लिया और खाया।' लुकमान का मालिक समझदार और दयालु था। उसने लुकमान की इस बात का आदर किया। वह बोला, 'आज तुमने मुझे जीवन का बड़ा सच बताया है। परमात्मा हमें अनेक प्रकार के सुख देता है, उसी के हाथ से यदि कभी दुख भी आए तो उस दुख को हमें खुशी-खुशी स्वीकार करना चाहिए। इसी से जीवन सार्थक हो सकता है। आज से तुम गुलाम नहीं रहोगे।'

हर समय मेरी प्रार्थना करते रहो प्रभु मेरे जीवन से जुड़ा रहे।

जिस घर में और सब कुछ हो मगर प्रेम न हो वह घर घर नहीं, श्मशान है। श्मशान में भी बहुत मुर्दे होते हैं मगर वे आपस में न तो कभी मिलते हैं और न ही कभी बतियाते हैं। जिस घर में पति-पत्नी, सास-बहू और बाप-बेटे साथ रहते हों मगर एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराते न हों तो क्या वह घर भी श्मशान नहीं है? परिवार में प्रेम और समर्पण है तो जीवन स्वर्ग है। मैं पूछती हूँ : प्रेम से भी बड़ा क्या दुनियाँ में कोई स्वर्ग है? घृणा और नफरत से भी बड़ा क्या दुनियां में कोई नर्क है?

Click to enlarge

दुनिया में तुम्हारा अपना कोई नहीं है। जो कुछ भी तुम्हारा है, तुम्हारे पास है वह बतौर अमानत है। बेटा है तो वह बहू की अमानत है। बेटी है तो वह दामाद की अमानत है। शरीर श्मशान की और जिंदगी मौत की अमानत है। तुम देखना : एक दिन बेटा बहू का हो जायेगा, बेटी को दामाद ले जायेगा, शरीर श्मशान की राख में मिल जायेगा और जिंदगी मौत से हार जायेगी। तो अमानत को अमानत समझकर ही उसकी सार-संभाल करना, उस पर माल्कियत का ठप्पा मत लगा देना।

घट में रहते हैं ना मैं तो राम है भगवान को राम में बहुत पसन्द है क्या तुमने अपने आप को राम बना लिया है?

अहंकार

एक फकीर सुकरात को मिलने गया। वह फकीर चीथड़े पहनता था, त्यागी था। उसके कपड़ों में जगह-जगह छेद थे। मगर चलता बहुत अकड़ कर था। सुकरात से उसने कहा 'तुम अभी तक धोखा में पड़े हो। मुझे देखो, सब छोड़ दिया, चीथड़े पहनता हूं, यह त्याग है। तुम सत्य की बातें ही करते रहोगे कि कभी त्यागी का जीवन भी जिओगे?' सुकरात ने कहा, 'क्षमा करें, दुख न मानना, मगर तुम्हारे कपड़ों के छिद्र में से सिवाय तुम्हारे अहंकार के मुझे कुछ और झांकता दिखायी नहीं पड़ता।

आपके हृदयमें दूसरोंको सुख पहुँचानेका भाव होगा, तो परिचित और अपरिचित, सबको प्रसन्नता होगी। आपके दर्शनसे दुनियाको शान्ति मिलेगी। कितनी उत्तम बात है! कुछ भी न कर सको तो बैठे-बैठे मनमें विचार करो कि सब सुखी कैसे हो जायँ? सब भगवान्‌के भक्त कैसे हो जायँ? भगवान्‌से कहो कि हे नाथ! सब आपके भक्त हो जायँ; सब आपके भजनमें लग जायँ, सब सत्संगमें लग जायँ; सब सत्-शास्त्रमें लग जायँ। अच्छी पुस्तकोंसे बहुत लाभ होता है। मैंने पुस्तकोंसे बहुत लाभ उठाया है और अब भी उठा रहा हूँ। आप भी देखो। यह असली लाभकी बात है। दूसरोंको अच्छी पुस्तकें पढ़नेके लिये दो और कहो कि एक बार पढ़कर देखो तो सही, शायद आपको बढ़िया लगे। पढ़कर हमें लौटा देना और दूसरी पुस्तक ले लेना। इस तरह अच्छी पुस्तकोंका प्रचार करो, जिससे लोगोंका भाव बदले। इसके समान दूसरी सेवा नहीं है। दान-पुण्यसे बढ़कर सेवा है यह। दूसरेको सत्-शास्त्रमें लगा देना, भजनमें लगा देना, सत्संगमें लगा देना बहुत ऊँची सेवा है। मुफ्तमें कल्याण होता है। कलकत्तेके एक वैश्य भाईने मेरेसे कहा कि हमारे जो मालिक हैं, वे रोजाना कहा करते थे कि तुम सत्संगमें चलो। परन्तु मेरेको अच्छा नहीं लगता था। जब उन्होंने कई बार कह दिया, तब सोचा कि ये कहते हैं तो चलो! वे सत्संगमें गये। केवल इस लिहाजसे गये कि ये मालिक हैं और बार-बार कहते हैं तो सत्संगमें चलो। कलम खोटी होगी तो इनकी होगी! वे सत्संगमें गये तो उनका मन लग गया और वे रोजाना जाने लग गये। ऐसे ही हरेकको प्यारसे, स्नेहसे सत्संगमें लगाओ। भीतरमें यह भाव रखो कि सबका कल्याण हो जाय! सबका उद्धार हो जाय! सबकी मुक्ति हो जाय!

किसी की अर्थी को सड़क से गुजरते हुए देखकर यह मत कहना कि 'बेचारा चल बसा।' अपितु उस अर्थी को देखकर सोचना कि एक दिन मेरी अर्थी भी इन्हीं रास्तों से यों ही गुजर जायेगी और लोग सड़क के दोनों ओर खड़े होकर देखते रह जायेंगे। उस अर्थी से अपनी मृत्यु का बोध ले लेना क्योंकि दूसरों की मौत तुम्हारे लिए एक चुनौती है। अर्थी उठने से पहले जीवन का अर्थ समझ लेना, वरना बड़ा अनर्थ हो जायेगा। वैसे गधे को कभी नहीं लगता कि उसका जीवन व्यर्थ है।

मुनिश्री! एक तरफ तो आप कहते हैं कि सभी आत्माएं एक समान हैं। फिर प्रवचन के दौरान आप ऊँची चौकी पर और हमें नीचे जमीन पर बैठाते हैं। इसका मतलब तो यही हुआ कि आप अपने को बड़ा और हमें छोटा समझते हैं?
शाबास जिज्ञासु! चौकी पर बैठना मुनि तरुणसागर का शौक नहीं मजबूरी है। एक व्यवस्था के तहत मुझे चौकी पर बैठना पड़ता है। बावजूद इसके एक अपेक्षा से मैं छोटा और आप बड़े हैं। कारण कि मैं चौकी पर बैठा हूँ, तो मैं 'चौकीदार' हुआ और आप जमीन पर बैठे हैं, तो आप 'जमींदार' हुए।

Click to enlarge

देना ही देना– यह संत धर्म है।
दुनिया का नियम है जो लुटाओगे वही लौटकर आयेगा। जो ठगता है, वह खुद भी ठगा जाता है। जो देता है, वही पाता है। जरा देकर तो देखो। मांगने पर देना अच्छा है लेकिन जरुरत समझकर बिना मांगे देना और भी अच्छा है।
जरुरत पाप नहीं है, जरुरत से ज्यादा रखना पाप है। गंजे का गंजापन तो जा सकता है लेकिन परिग्रह से मनुष्य का मन तृप्त नहीं हो सकता।

अच्छा काम करने वालों से मुझे जलन तो नहीं होती क्योंकि तरह से काम करना क्या मैं उनसे पिछड़ी तो नहीं हूँ अंदर ही अंदर कहीं कुढ़ती तो नहीं रहती।

इस शरीर को रोज भोजन देते हो, आत्मा को क्या देते हो - शरीर का भोजन है अन्न और पानी
आत्मा का भोजन है 'ध्यान'

राम रूपी रसायन का अगर तुम इस्तेमाल करो तो फिर सारे विघ्न दूर हो जायें बाबा-बाबा करते रहो निरोगी हो जाओगे।

क्रोध करना है, किसी से बदला लेना है, तो इसमें जल्दबाजी मत करना बल्कि किसी ज्योतिषी के पास जाना और कहना कि मुझे क्रोध करना है, एक आदमी है, जिससे बदला लेना है– इसके लिए आप अच्छा सा मुहूर्त निकालकर दीजिए। जब तुम हर शुभ कार्य के लिए मुहूर्त दिखाते हो तो अशुभ कार्य बिना मुहूर्त के क्यों कर लेते हो?

जितना दान दोगे उतना बढ़ेगा

मन को रेडियो Station समझो जिस तरफ लगाना चाहो, उस तरफ लगा दो जैसे T.V पर कोई प्रोग्राम पसन्द नहीं आता तो क्या करते हैं channel change करते हैं नफरत में हो तो Radio Station change करके प्रेम का Station लगा लो।

संसार में अड़चन और परेशानी न आएं। यह कैसे हो सकता है। सप्ताह में एक दिन रविवार का भी तो आयेगा ना। प्रकृति का नियम ही ऐसा है कि जिंदगी में जितना सुख-दुःख मिलना है, वह मिलता ही है। मिलेगा भी क्यों नहीं, टेन्डर में जो भरोगे वही तो खुलेगा। मीठे के साथ नमकीन जरूरी है तो सुख के साथ दुःख का होना भी लाज़मी है। दुःख बड़े काम की चीज है। जिंदगी में अगर दुःख न हो तो कोई प्रभु को याद ही न करे।

Click to enlarge

ईर्ष्या करना है तो ईश्वर से करो,
पड़ौसी से ईर्ष्या क्या करना ?
लोग पड़ौसी से ईर्ष्या करते हैं,
मेरा एक मंजिला मकान है, पड़ौसी का तीन मंजिला।
मेरे घर एक गाड़ी है, पड़ौसी के दो-दो गाड़ियां हैं।
पर सोचो - इस ईर्ष्या से क्या होगा ?
ज्यादा से ज्यादा
तुम्हारा भी तीन मंजिला मकान हो जाएगा,
तुम्हारे घर भी दो गाड़ियां हो जायेंगी।
पर इससे क्या होगा ? अरे ! ईर्ष्या करनी है तो
पड़ौसी से नहीं बल्कि टाटा-बिड़ला से करो ताकि
जब तुम ऊँचे उठो तो तुम्हें दुनिया देखे।
ईर्ष्या करनी है तो नीलम से नहीं बल्कि
राम, कृष्ण, बुद्ध और महावीर से करो।
ताकि जब तुम दुनिया में न रहो
तब भी लोग तुम्हारी पूजा करें।

मन की तरंग मार ले, बस हो गया भजन
आदत बुरी संभाल ले, बस हो गया भजन
आया है कहां से, जायेगा कहां
इतना तू विचार ले, बस हो गया भजन
तुमको बुरा, बुरा कोई मत जान
वाणी का स्वर संभाल ले बस हो गया भजन

कितना भी काला आदमी हो, गुण हैं तो ... होती है.

विशेष हो तो विशेषता दिखाओ

हे नाथ कृपा करो आपको भूलूं नहीं

भगवान कौन सा धन लेकर आऊं जो मेरा जीवन धन्य हो जाये -

जीवन में कुछ करना
है तो हिम्मत चाहिए। जिधर दुनिया बह
रही है, उधर तुम भी बह गये तो इसमें
क्या बहादुरी है ? गंगोत्री से गंगा
सागर की यात्रा तो मुर्दा भी कर लेता है
लेकिन गंगा सागर से गंगोत्री की यात्रा करने के
लिए भुजाएं चाहिए, हिम्मत चाहिए।
जिधर दुनिया बह रही है,
उधर तुम भी बहोगे तो मुर्दा कहलाओगे।
मर्द कहलाना है तो
प्रवाह के विरुध्द बहना सीखो। डूबना तो
मुर्दे को भी आता है। भुजाओं में ताकत
तो इस बात में है कि
तुम तैरना जानते हो।

धर्म की खेती

नानक देव बचपन से ही बैरागी स्वभाव के थे। सांसारिक कर्मों में तन्मय नहीं हो पाते थे। पिता बाजार से सामान लाने के लिए पैसे देते तो बालक नानक पैसे गरीबों में बांटकर खाली हाथ चले आते। एक बार नानक देव के पिता कालूराम ने अपने पुत्र को खेती करने का आदेश दिया। कई दिन पश्चात उन्होंने पूछा, 'बेटा, तेरी खेती का क्या हुआ ?' बालक नानक ने उत्तर दिया- 'पिताजी, खेती खूब लहलहा रही है। मैंने शरीर रूपी खेत में सत्कर्म का हल चलाया, उसमें ईश भजन के बीज बोये, सत्संग की खाद दी और संतोष के जल से सींचा है।' अब तो सर्वत्र आनंद का अन्न उग रहा है। पुत्र का उत्तर सुनकर पिता आश्चर्यचकित रह गये।

Click to enlarge

मैंने पाँच सौ का नोट दिखाकर पूछा:किसको चाहिए ? सबने हाथ खड़े कर दिये । फिर नोट को मोड़ा–मरोड़ा । उसकी पुड़िया बना दी और पूछा: अब नोट किसका चाहिए ? सब ने हाथ खड़े कर दिये । फिर नोट को नीचे डालकर उसे पैरों से रौंदा, कुचला और पूछा: अब नोट किसे चाहिए? अब भी बहुत से हाथ ऊँचे उठे । फिर नोट को फाड़ा, उसके चार टुकड़े कर दिये और पूछा: अब किसे चाहिए? अब एक भी हाथ न उठा । यह बहुत उपयोगी–पाठ है । जो अखंड़ है, उसकी कीमत है । जो टुकड़ों में बट गया, उसे कोई पूछने वाला नहीं है ।

घर व्यवस्थित है तो सुंदर लगता है।

मन चंचल है ।

यह शीघ्र एकाग्र नहीं होता । मन पर अकुंश रखने के लिए पतंग उड़ाना सीखिए । पतंगबाज जब हवा अच्छी होती है तो पंतग ढीली छोड़ देता है कि जाने दो, कहां जाती है । मगर जब हवा कमजोर पड़ती है तो पंतग नीचे आने लगती है तब वह ड़ोर खींच लेता है । इसी प्रकार जब तुम्हारा मन शुभ और पुण्य की ओर जाता है तो जाने देना । मगर जब बुराई और पाप की ओर जाने लगे तो उसे उधर से तुरन्त खींच लेना । मन कुत्ते की पूंछ है । सत्संग में बैठता है तो सीधा हो जाता है बाहर गया कि गया काम से ।

पेड़ में जितने ज्यादा फल होंगे उतना ही ज्यादा झुका हुआ होगा

(सब मूर्ख ही कहते हैं तो आपमें ही गुण ज्यादा हैं फल वाले पेड़ को ही तो पत्थर मारते हैं)

दान देना उधार देने के समान है । देना सीखो क्योंकि जो देता है वह देवता है और जो रखता है वह राक्षस । ज्ञानी तो इशारे से ही देने को तैयार हो जाता है मगर नीच लोग गन्ने की तरह कुटने-पिटने के बाद ही देने को राजी होते हैं । जब तुम्हारे मन में देने का भाव जागे तो समझना पुण्य का उदय आया है ।
अपने होश-हवास में कुछ दान दे डालो क्योंकि जो दे दिया जाता है वह सोना हो जाता है और जो बचा लिया जाता है वह मिट्टी हो जाता है । भिखारी भी भीख में मिली हुई रोटी तभी खाये जब उसका एक टुकड़ा कीड़े-मकोड़े को डाल दे । अगर वह ऐसा नहीं करता तो कई जन्मों तक भिखारी ही रहेगा ।

जिसने संसार को इतनी सुंदरता दी है . वो कितना सुंदर होगा मनमोहन चितचोर

Click to enlarge

गांधीजी से किसी वकील ने कहा: बापू ! आप हर रोज प्रार्थना में जितना समय लगाते है, अगर आप यही समय समाज-सेवा में लगाये तो आप बड़ी सेवा कर सकते है। बापू मुस्कुराये और बोले: वकील साब ! आप हर रोज घंटे-दो-घंटे नाश्ता और भोजन में लगा देते हैं, अगर यहीं समय आप अपनी प्रैक्टिस में लगाये तो आप बड़े वकील बन सकते है। वकील ने कहा- यह कैसे संभव है ? बिना भोजन के शरीर नहीं चलेगा। बापू बोले: बस! यही तो मैं कहता हूँ, बिना भोजन के तुम्हारा शरीर नहीं चलता और बिना प्रार्थना के मेरी आत्मा नहीं चलती।

एक तो है काम की मारा-मारी
दूसरी है धन की मारा-मारी

एक गुरु के दो शिष्य थे। दोनों बड़े ईश्वर भक्त थे। ईश्वर-उपासना के बाद वे आश्रम में रोगियों की चिकित्सा में गुरु की सहायता किया करते थे। एक दिन उपासना के समय ही कोई रोगी आ पहुंचा। गुरु पूजा कर रहे शिष्यों को बुलाने के लिए आदमी भेजा। शिष्यों ने कहलवा भेजा-अभी थोड़ी पूजा बाकी है, पूजा समाप्त होते ही आ जाएंगे।

इस पर गुरुजी ने दोबारा आदमी भेजा। इस बार शिष्य आ गए, पर उन्होंने अकस्मात् बुलाए जाने पर असंतोष व्यक्त किया। गुरुजी ने कहा-मैंने तुम्हें इस व्यक्ति की सेवा के लिए बुलाया था। प्रार्थनाएं तो देवता भी कर सकते हैं, किन्तु अकिंचनों की सहायता तो मनुष्य ही कर सकते हैं, सेवा प्रार्थना से अधिक ऊंची है, क्योंकि देवता सेवा नहीं कर सकते। शिष्य अपने कृत्य पर बड़े लज्जित हुए और उस दिन से प्रार्थना की अपेक्षा सेवा को अधिक महत्त्व देने लगे।

पग घुँघरू बाँध मीरा नाची रे।

मतवाली मीरा प्रेममें मस्त होकर लगी नाचने। कारण क्या ? भजनका रस मिल गया। सांसारिक दृष्टिसे ज्यादा-से-ज्यादा आकर्षक मान-बड़ाई, यश-कीर्ति है; इनकी तो परवा ही क्या हो, उलटी बदनामीसे डर न लगकर वह मीठी लगने लगती है। मीरा कहती है—

या बदनामी लागे मीठी। राणाजी ! म्हांने या बदनामी लागे मीठी।

एक भक्तदम्पति थे। पति-पत्नी दोनों ही बड़े भजनानन्दी थे। उनके भजन करनेका तरीका यह था कि वे अपने पासमें कुछ उड़द रख लेते और एक माला फेरनेपर एक उड़द उठाकर रख देते। इस प्रकार सेर, डेढ़सेर तथा दो-दो, तीन-तीन सेरतक उड़द समाप्त हो जाते। पति कहता कि मैं आध सेर भजन करूँगा तो पत्नी कहती, मैं एक सेर करूँगी। परस्पर होड़ लग जाती। हमें भी इसी प्रकार तेजीसे भजन करना चाहिये।

संसारी व संन्यासी में बस इतना ही फर्क है कि संसारी अपने स्वभाव को छिपाता है और प्रभाव को दिखाता है जबकि संन्यासी अपने प्रभाव को छिपाता है और स्वभाव को दिखाता है।

चींटी बहुत छोटा जीव है। घर-आंगन की छोटी-छोटी यात्रा में ही उसका पूरा दिन चला जाता है। चींटी को अगर पूना से चलकर दिल्ली जाना हो तो कितने दिन लगेंगे, हम कल्पना कर सकते हैं। लेकिन वही नन्हीं सी चींटी यदि किसी व्यक्ति का पल्ला पकड़ ले या किसी व्यक्ति के वस्त्रों पर चढ़ जाये और वह व्यक्ति दिल्ली जाने वाली ट्रेन में जा बैठे तो बिना प्रयास के चींटी अगले दिन दिल्ली पहुंच जाती है। इसी प्रकार सद्गुरु का पल्ला पकड़कर हम भी भव-सागर की दुर्गम-यात्रा बिन प्रयास के पूरी कर सकते हैं।

Click to enlarge

सफेद बाल निवृत्ति के प्रतीक हैं।
जब तुम भोजन करने बैठते हो तो अंत में चावल
आते हैं। चावल आने का अर्थ है-
भोजन पूरा हुआ। अब रस-मलाई और
मिठाई नहीं आयेगी; केवल पानी आएगा।
अत: अब पानी पीकर और हाथ-मुँह धोकर
उठ जाना है। इस प्रकार जब तुम्हारे मस्तिष्क रूपी
थाली में सफेद-बाल-रूपी-चावल परोस दिये
गये हों तो संसार से हाथ जोड़कर
संन्यास ले लेना चाहिए।

महावीर से गौतम ने पूछा : भंते !
दान देना ठीक है या संग्रह करना ?
महावीर ने अपनी एक हाथ की मुट्ठी बंद की और
गौतम से पूछा : यदि यह हाथ सदा ऐसा ही रहे
तो क्या होगा ? गौतम ने कहा : हाथ अकड़कर
निकम्मा हो जाएगा। फिर महावीर ने मुट्ठी को
खोलकर पूछा : और यदि हथेली को हमेशा यों
रखा जाये तो क्या होगा ?
तब भी हाथ अकड़कर बेकार हो जाएगा।
महावीर बोले : गौतम ! जिन्दगी में मुट्ठी बांधना
भी जरूरी है और खोलना भी। अर्जन के साथ
विसर्जन जरूरी है।
खाया हुआ तो बेकार हो जाएगा
लेकिन दिया हुआ बेकार नहीं जाएगा।

Click to enlarge

दो चींटियोंका दृष्टान्त दिया है संतोंने। एक नमकके ढेलेपर रहनेवाली चींटीकी एक मिश्रीके ढेलेपर रहनेवाली चींटीसे मित्रता हो गयी। मित्रताके नाते वह उसे अपने नमकके ढेलेपर ले गयी और कहा—'खाओ!' वह बोली—'क्या खायें, यह भी कोई मीठा पदार्थ है क्या?' नमकके ढेलेपर रहनेवालीने उससे पूछा कि 'मीठा क्या होता है, इससे भी मीठा कोई पदार्थ है क्या?' तब मिश्रीपर रहनेवाली चींटीने कहा—'यह तो मीठा है ही नहीं। मीठा तो इससे भिन्न ही जातिका होता है।' परीक्षा करानेके लिये मिश्रीपर रहनेवाली चींटी दूसरी चींटीको अपने साथ ले गयी। नमकपर रहनेवाली चींटीने यह सोचकर कि 'मैं कहीं भूखी न रह जाऊँ' छोटी-सी नमककी डली अपने मुँहमें पकड़ ली। मिश्रीपर पहुँचकर मिश्री मुँहमें डालनेपर भी उसे मीठी नहीं लगी। मिश्रीपर रहनेवाली चींटीने पूछा—'मीठा लग रहा है न?' वह बोली—'हाँ-में-हाँ तो कैसे मिला दूँ? बुरा तो नहीं मानोगी? मुझे तो कोई अन्तर नहीं प्रतीत होता है, वैसा ही स्वाद आ रहा है।' उस मिश्रीपर रहनेवाली चींटीने विचार किया—'बात क्या है? इसे वैसा ही—नमकका स्वाद कैसे आ रहा है!' उसने मिश्री स्वयं चखकर देखी, मीठी थी। वह सोचने लगी—'बात क्या है!' उसने पूछा— 'आते समय तुमने कुछ मुँहमें रख तो नहीं लिया था?' इसपर वह बोली—'भूखी न रह जाऊँ, इसलिये छोटा-सा नमकका टुकड़ा मुँहमें डाल लिया था।' उसने कहा—'निकालो उसे।' जब उसने नमककी डली मुँहमेंसे निकाल दी, तब दूसरीने कहा—'अब चखो इसे।' अबकी बार उसने चखा तो वह चिपट गयी। पूछा—'कैसा लगता है?' तो वह इशारेसे बोली—'बोलो मत, खाने दो।'

इसी प्रकार सत्सङ्गी भाई-बहन सत्सङ्गकी बातें तो सुनते हैं, पर धन, मान-बड़ाई, आदर-सत्कार आदिको पकड़े-पकड़े सुनते हैं। साधन करनेवाला, उसमें रस लेनेवाला उनसे पूछता है—'क्यों! कैसा आनन्द है?' तब हाँ-में-हाँ तो मिला देते हैं, पर उन्हें रस कैसे आवे? नमककी डली जो मुँहमें पड़ी है। मनमें उद्देश्य तो है धन आदि पदार्थोंके संग्रहका, भोगोंका और मान-पद आदिका। अतः इनका उद्देश्य न रखकर केवल परमात्माकी प्राप्तिका उद्देश्य बनाना चाहिये।

धन-सम्पत्ति आदि सब पदार्थ साथ तो चलेंगे नहीं, काममें ले लो इन्हें।

दुआमें दो और दुआमें लो
नहीं देता है तो भी लो
ऐसी जिद कल्याणकारी
है

[illegible] पर स्वर्ग - नर्क है।

भूख और प्यास रोग है तो अन्न और पानी दवा। कड़वी दवा व्यक्ति उतनी ही खाता है, जितनी अनिवार्य हो। भोजन भी विवेक से करो। जीभ जो मांगती है, वह मत दो। पेट जो मांगता है वह दो। भोजन करना पुण्य है। जीभ को लाड़ करना पाप है। बहुत बोलने और बहुत खाने से जीभ बिगड़ती है। सादा भोजन जीवन को सुधारता है। आँख सुधरने से मन सुधरता है। जीभ सुधरने से जीवन सुधरता है। जिसकी जीभ सुधर गई समझ लेना उसका जीवन भी सुधर गया।

भक्त प्रार्थना करता है
[illegible] याद करता है

तुम आगे बढ़ोगे, ऊंचे उठोगे तो लोग तुम्हारी टांग खींचने के लिए तैयार रहेंगे। बेवजह भला-बुरा कहेंगे। पर कोई कुछ भी कहे तुम सुनना मत। क्योंकि तुम किसी का हाथ तो पकड़ सकते हो किन्तु किसी की जीभ नहीं पकड़ सकते।

जिन्दगी में कभी दुःख और पीड़ा आये तो उसे चुपचाप पी जाना। अपने दुःख और दर्द दुनिया के लोगों को मत दिखाते फिरना क्योंकि वे डॉक्टर नहीं हैं, जो तुम्हारी समस्या का समाधान कर दें। यह दुनिया बड़ी जालिम है, तुम्हारे दुःख-दर्द को रो-रो कर पूछेगी और हँस-हँस कर दुनिया को बतायेगी। अपने जख्म उन लोगों को न दिखाओ, जिनके पास मरहम न हो। वे खुदगर्ज लोग मरहम लगाने की बजाय जख्मों पर नमक छिड़क देंगे।

Click to enlarge

किसी भी गाँव में दो चीजों का होना जरूरी है। एक तो मंदिर और दूसरा श्मशान। मंदिर गाँव के बाहर होना चाहिए। मंदिर वहां होना चाहिए जहां गांव का शोर-शराबा सुनाई न दे ताकि मंदिर में मन रम सके और श्मशान गाँव के बीच में होना चाहिए। श्मशान वहां होना चाहिए जहां से हम दिन में दस बार गुजरते हैं ताकि जब-जब हम वहां से गुजरें तो वहाँ जलती लाशों को देखकर हमें जीवन का अंतिम-सत्य दिखाई दे जाए। लेकिन हमने चालाकी से सब उलट-पलट कर दिया है। मंदिर को गांव में ले आये और श्मशान को गांव के बाहर छोड़ आये।

कितना सरल कार्य है, दर्द सहने की शक्ति पर भाषण देना और मजाक उड़ाना दरिद्रता का, हाथ में जाम लिये।

निंदा करना पाप है, निंदा सुनना और भी बड़ा पाप है। अगर कोई व्यक्ति अपने घर का कचरा तुम्हारे घर डाल दे तो क्या तुम उससे खुश होकर उसे चाय पिलाओगे? नहीं ना। तो फिर जब कोई व्यक्ति तुम्हारे सामने किसी की निंदा करता है तो तुम खुश होकर उसे क्यों सुनते हो। वह तुम्हारे कान में कचरा डाल रहा है और तुम खुश हो रहे हो। तुम्हारे जैसा बेवकूफ नहीं देखा। और हाँ, अगर फिर भी निंदा सुनने का शौक है तो एक काम करिए-अपने कान के ऊपर के हिस्से में 'डस्ट बीन' और नीचे 'प्लीज यूज मी' भी लिखवा लीजिए। फिर I am no प्राब्लम।

Click to enlarge

परीक्षा लेनी है तो खुद अपनी लो।
दूसरे की परीक्षा लेना आसान है। दूसरे तुम्हारी परीक्षा ले–यह भी आसान है। लेकिन खुद अपनी परीक्षा लेना और उसमें खरे उतरना आसान नहीं है। कभी वक्त निकालकर अपने मन की परीक्षा भी लो कि आखिर वह क्या है? और कहां है? मन की परीक्षा दिन में नही, रात में लेना। दिन में परीक्षा ठीक से नही होगी। रात में जब तुम अकेले हो, बिस्तर पर लेटे हो, तब देखना कि क्या याद आ रहा है? मन क्या माँग रहा है? एकांत के क्षणों में मन जहाँ जा रहा है, जो मांग रहा है, समझ लेना–मन वही फँसा है। अब आप ऊपर से चाहे जो भी हो लेकिन भीतर से क्या हो? यह पता चल जायेगा।

काम करने वालों को रोटियों की कमी नहीं

यदि अग्नि को शान्त करने की इच्छा है तो वह कार्य शीतल जल से ही हो सकेगा।

पता नहीं शरीर का कब अन्त हो जावे। अतएव सदैव बिस्तरा बांधे तैयार रहो

लक्ष्य

एक बात बताओ : मीठा के बाद नमकीन पसंद करते हो या नहीं ? यदि हाँ, तो प्रशंसा के साथ गाली पसंद क्यों नहीं करते ? प्रशंसा मिठाई है, गाली नमकीन है। मिठाई खा लो, और कोई गाली का नमकीन परोस दे तो उसे भी चुपचाप खा लो। किसी की गाली का बुरा क्यों मानना ? होली के दिन गाली बुरी नहीं लगती तो दिवाली–दशहरा के दिन भला क्यों बुरी लगेगी ? लेकिन हम बेईमान लोग हैं। हम प्रशंसा की मिठाई तो गप–गप कर के खा जाते हैं, लेकिन गाली का गोबर हमें हजम नहीं होता।

Click to enlarge

महावीर स्वामी पेड़ के नीचे बैठे थे। ध्यानमग्न थे। पेड़ पर आम लटक रहे थे। वहीं कुछ बच्चे भी खेल रहे थे। वे पत्थर फेंककर आम तोड़ने लगे। पत्थरों से एक–दो आम टूट पड़ें। पर एक पत्थर महावीर को जा लगा और उनके सिर से रक्त बहने लगा। बच्चे डर गये। क्षमा याचना के लिए महावीर के पास जा पहुँचे।
महावीर की आँखों में आंसू थे। बच्चों ने कहाः प्रभू! हमे क्षमा करें, हमारे कारण आपको कष्ट हुआ है। प्रभू बोलेः नहीं, मुझे कोई कष्ट नहीं है। बच्चों ने पूछाः तो फिर आपकी आँखों में आंसू क्यों ? महावीर ने बतायाः पेड़ को तुमने पत्थर मारा तो इसने तुम्हें मीठे फल दिये, पर मुझे पत्थर मारा तो मैं तुम्हें कुछ नहीं दे सका। इसलिए मैं दुःखी हूँ।

चींटी से अच्छा उपदेश कोई नहीं दे सकता, लेकिन वह मौन रहती है।

चमचे से चाहे हलवा परोसो, चाहे दाल-भात, उसे इसका कोई सुख-दुःख नहीं। ऐसी ही स्थिति जबान की हो जानी चाहिए।

हेनरी फोर्ड से एक व्यक्ति ने सवाल किया कि आपकी सफलता का रहस्य क्या है? हेनरी फोर्ड मुस्कराए, फिर बोले, मेरी सफलता का रहस्य है 'धैर्य और विश्वास!' मेरा अनुभव है कि धैर्य और विश्वास से संसार के सभी काम सम्भव हो सकते हैं। वह व्यक्ति बोला, 'माफ कीजिएगा, लेकिन मैं आपकी इस बात से सहमत नहीं हो सकता। आप ही बताइए, क्या केवल धैर्य और विश्वास के सहारे हम किसी छलनी में पानी भर कर उसे एक जगह से दूसरी जगह ले जा सकते हैं?' हेनरी फोर्ड ने कहा– 'जरूर! असल में जब हम इसे असंभव या हास्यास्पद विचार मानते हैं, तो हम सिर्फ धैर्य की बात सोचते हैं, लेकिन हमारे मन में इस बात का विश्वास नहीं होता कि ऐसा हो भी सकता है। लेकिन जब हमारे मन में इस काम के हो सकने का पूरा विश्वास होता है तो धैर्य के साथ तब तक प्रतीक्षा कर सकते हैं, जब तक छलनी का सारा पानी जमकर बर्फ न बन जाए।

जैसी प्रवृत्ति वैसी नियति

एक ज्योतिषी से किसी व्यक्ति ने अपने तीन बच्चों का भविष्य पूछा। उसने जन्मपत्रिका के पन्ने पलटने के बहाने उन बच्चों की गतिविधियाँ गौर से देखीं।
[illegible] तीनों बच्चों को एक-एक केला दिया। पहले बच्चे ने छिलका सड़क पर फेंक दिया। दूसरे ने [illegible] कूड़ेदान में डाला। तीसरे ने गाय को खिला दिया।
तीनों बच्चों में से ज्योतिषी ने एक के मूर्ख, दूसरे के समझदार और तीसरे के उदार बनने की घोषणा की।
इसका कारण पूछे जाने पर ज्योतिषी ने पत्रिका के पन्नों की अपेक्षा तात्कालिक प्रतिक्रियाओं के बारे में बताया। उन्होंने कहा, मनुष्य की जैसी प्रवृत्ति होती है, वैसी ही उसकी नियति बन जाती है।

सुंदर वाणी सुंदर मुख से भी अच्छा प्रभाव डालती है।

दरिद्र मैं नहीं हूँ; क्योंकि मेरे पास इच्छाएँ कम हैं, पर तुम हो; क्योंकि तुम्हारी इच्छाएँ अधिक हैं।

Click to enlarge

भगवान् महावीर से एक शिष्य ने उनसे देशाटन के लिए जाने की आज्ञा मांगी, महावीर ने गंभीर वाणी में पूछा, 'वत्स! संसार में सभी प्रकार के लोग रहते हैं। बुरे लोग तुम्हें गाली देंगे और निन्दा भी करेंगे। ऐसे में अनजान प्रदेशों में कैसे घूम पाओगे।' शिष्य बोला, 'भगवन्! मैं समझूंगा कि वे अच्छे हैं, कम-से-कम मुझे मारा तो नहीं।'

महावीर ने सिर हिलाकर प्रेमपूर्वक कहा, 'लेकिन वे तुम्हें मार भी सकते हैं।' शिष्य बिना हिचकिचाए बोला, 'भगवन्! तब भी मैं उन्हें भला ही समझूंगा क्योंकि वे मुझे लाठी से तो नहीं मारते।'

महावीर ने फिर कहा, 'पर चोर-उचक्के तो तुम्हें हथियार से भी मार सकते हैं।'

शिष्य ने फिर निर्भीक से कहा, 'प्रभु! यह तो उनकी कृपा होगी, क्योंकि इस तरह वे मुझे जीवन के दुःखों से निवृत्त कर देंगे। जीवन जितना अधिक है, उतना ही अधिक दुःख है।

महावीर बोले– 'वत्स! तुम अवश्य जाओ। सच्चा साधु वही है, जो कभी किसी का बुरा नहीं सोचता। सबका भला ही चाहता है। तुम देशाटन के सर्वथा योग्य हो।'

भगवान को याद करने की हॉबी हो।

ऐसे याद में रहें - बुद्धि विस्तार में फैली हुई है फैलाने की आदत पड़ी है पर सब कुछ समा कर, जाल को इप करके याद में बैठ जाओ.

भगवान के साथ का अनुभव औरों को सुख देता है-

शरीर तो छूटना ही है लेकिन भगवान की याद में छूटे

संत रैदास जूते सी कर अपनी रोजी-रोटी चलाते थे। एक बार वे संतों के किसी समागम से जब अपनी दुकान पर लौटे, तो उनके एक शिष्य ने शिकायत की, 'गऊ घाट वाला रामजतन मुझसे जूते सिलाने आया था। सिलाई के बदले खोटे सिक्के दे रहा था, ठगना चाहता था। मैंने जूते सिलने से मना कर दिया।' रैदास ने मुस्कराकर अत्यंत सहज भाव से कहा, 'क्यों नहीं सिल दिए? मुझे तो वह हमेशा ही खोटे सिक्के देता है।' शिष्य ने सोचा था कि रैदास कहेंगे कि ठीक किया लौटा दिया। लेकिन यह तो उल्टी ही बात सुनने को मिली। उसने पूछा, 'गुरुजी, ऐसा क्यों?' रैदास ने समझाया, 'यह सोचकर सिल देता हूं कि उसे कोई परेशानी न हो।' 'और खोटे सिक्के का क्या करते हैं?' शिष्य ने पूछा। 'उन्हें जमीन में गाड़ देता हूं, ताकि कोई और दूसरा उसकी वजह से न ठगा जाए।' रैदास ने बताया।

सुनो जी, बाजार से एक कि.ग्रा. चावल ले आओ। हल्के वाले चावल ही लाना कविता ने अपने पति रमेश से कहा। रमेश बोला, "अभी, पिछले सप्ताह ही तो बासमती चावल की 5 कि.ग्रा. की थैली लाया था। चावल घर में ही हैं, बेकार में सामान न मँगवाया करो।"

पतिदेव से तर्कहीन सुनकर कविता ने कहा, "चावल तो घर में हैं, लेकिन वे बासमती हैं।" दरअसल, कल अपने रवि का जन्मदिन है - मैं सोच रही थी कि चावल बनाकर अनाथालय में भिजवा दूँ। जन्मदिन के साथ-साथ अनाथ बच्चों की सेवा भी हो जाएगी। यही सोचकर मैंने आपसे हल्के वाले चावल (सस्ते) लाने को कहा था। अनाथालय में बासमती चावल बनाकर भेजना कहाँ की समझदारी है? पत्नी से समझ-बूझ की बातें सुनकर रमेश चुप न रह सका, अपने गुस्से पर संयम रखते हुए उसने कहा, "अच्छे विचारों के साथ अच्छी चीज (वस्तु) या मिष्ठान बनाकर भेजोगी तो दुआएँ भी अच्छी मिलेंगी। यदि हल्की और सस्ती वस्तु अनाथालय में भिजवाओगी तो तुम्हारे लाड़ले को दुआएँ भी वैसी ही मिलेंगी। यह कहकर रमेश चुप हो गया। कविता भी चुपचाप रमेश की बात पर विचारमग्न हो गयी थी।

छि: छि: आदतें हैं, इन्हीं को मिटाने के लिए तो तपस्या करनी है

तुम्हारी अवस्था ऐसी मीठी हो जो भी देखे तो बोले ये तो भगवान के बच्चे हैं.

रोने के लिए किसी का कंधा तलाशने के बजाय बस एक काम करना–घंटा भर के लिए अपने भीतर में उतर जाना, ध्यान में खो जाना। वहां समाधि की एक ऐसी लहर आयेगी जो तुम्हारे जीवन के तमाम दुःख तकलीफ को अपने साथ बहाकर ले जायेगी।

भगवान् बुद्ध ने यही इंगित किया है कि जो जैसा सोचता है वैसा ही हो जाता है। तुम आज जो हो, वह तुम्हारे बीते कल के सोचने का परिणाम है। सोचना तो ठीक वैसा है जैसे मानो तुमने बीज बोया हो। जैसा बीज बोओगे वैसा ही काटोगे। जैसा सोचोगे वैसे ही बन जाओगे।

खुद कड़वे हैं तो दूसरों को भी कड़वा बनाते हैं

Click to enlarge

B.K.Neelam

आओहेस □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□ सब □□ मदद □□□□..

- About
- Free Hindi Spiritual E-book
- Hindi Spiritual One Liners
- Bhajan
- Links
- Contact

Bhajan

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च, सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं, मम देवदेव।।

Aai Seenh Pe Sawaar Maiyaa Aade Chunadi – Bhajan – 1

आई सिंह पे सवार मैया ओढे चुनड़ी
ओढे चुनड़ी ओ मैया ओढे चुनड़ी मैया....

१ आदि शक्ति मात भवानी जय दुर्गे माँ काली
बडे बडे राक्षस संहारे रणं चण्डी मतवाली
करती भगतो का उद्धार मैया ओढे चुनड़ी

२ महिषासुर था महा बली देवों को खूब सताया
छीन लिया इन्द्राशन और देवों को मार भगाया
करी देवों ने पुकार मैया ओढे चुनड़ी

३ दुर्गा का अवतार लिया झट महिषासुर संहारी
दूर किया देवो का संकट लीला तेरी न्यारी
किया देवों पे उपकार मैया ओढे चुनड़ी

४ जो कोई जिस मन्श्या से मैय्या द्वार तिहारे आये
मन इच्छा होती पुरी और मूंह मांगा वर पाए
तेरा गुण गाए संसार मैया ओढे चुनड़ी

५ कष्ट अनेकों मुझको घेरे कौन हरें दुःख मेरे
नाम तेरा रटता हूं मैया मै हर सांझ सबेरे
'राजु' करता है पुकार मैया ओढे चुनड़ी

Mann Laago Mera Yaar Phakeeri Mein – Bhajan – 2

मन लागो मेरा यार फकीरी में
जो सुख पाऊं राम भजन में वो सुख नाही अमीरी में

- भला बुरा सब का सुन लीजिए
  कर गुजरान गरीबी में ....मन लागो....
- प्रेम नगर में रहन हमारी
  बन बन आई सबूरी में ....मन लागो ....
- हाथ में डण्डा बगल लंगोटी
  चारो ओर जगीरी में ....मन लागो ....
- ये तन आखिर खाक मिलेगा
  भाई बन्द कुटुम्ब कबीलो बांधे मोह जंजीरी में ....मन...

कहत कबीर सुनो भई साधो
साहब मिलेगें सबूरी में ....मन लागो ....

Mujhe Garaj Na Aur Saharo Ki – Bhajan – 3

मुझे गरज न और सहारो की
इक तेरा सहारा काफी है
मझधार में डूबने वालों को
इक तेरा किनारा काफी है
मुझे गरज ....

- बन बन के सहारे टूटते हैं
रे रसम पुरानी है जग की
जो टूटे कभी ना छूटे ना
वो तेरा सहारा काफी है, मुझे ....

- नज़रो को धोखा देते हैं
दुनियां के झूठे नज़ारे
जो कायम हमेशा रहता है
वो तेरा नज़ारा काफी है, मुझे ....

- जहां रिश्वत और सिफारिश , से
काम नहीं बन सकता है
मेरी बिगड़ी बन जाने में
इक तेरा इशारा काफी है, मुझे ....

प्रेमी पपीहे को मतलब क्या
नदियों और तालाबों से
स्वाती जो बरसे बादल से
केवल इक धारा काफी है

Jhoom Jhoom Ke Naacho Aaj – Bhajan – 4

झूम-झूम के नाचो आज गाओ खुशी के गीत
आज तो मन की हार हुई है और गुरू की जीत हो

गाओ खुशी के गीत हो ....

अब तक था मन ने मुझको रुलाया
मोह माया में था अटकाया
गुरू ने प्रेम से इसे समझाया
सारे जहाँ का राजा बनाया
अपने जैसा मुझे बनाया
धन्य गुरू की प्रीत हो

गाओ खुशी के गीत हो ....

भाग्य बढ़े मेरे जो गुरू ने अपनाया
गहरी नींद से मुझे जगाया
भव बन्धन से मुझे छुड़ाया
बिन मांगे सब कुछ दे डाला
यही प्रीत की रीत हो

गाओ खुशी के गीत हो ....

भटक रहा था मैं जग की माया में

अटक गया था इस काया में
भ्रमित हो रहा था छाया में
अपने स्वरूप को अब आया मैं
सपने से मुझको जगा के
सुनाया आत्मा का गीत हो

गाओ खुशी के गीत

Anmol Tera Jeevan – Bhajan – 5

अनमोल तेरा जीवन यूं ही गवां रहा है
किस ओर तेरी मंजिल किस ओर जा रहा है,

- सपनों की नींद में ही ये रात ढल न जाए
पल भर का क्या भरोसा ये जान निकल न जाए,
गिनती की हैं ये स्वांसे यूंही गवां रहा है। किस ओर.
- जाएगा जब यहाँ से कोई न साथ होगा
इस हाथ जो किया है उस हाथ जा तू लेगा।
कर्मों की है ये खेती फल आज पा रहा है। किस ओर..
- ममता के बंधनों ने क्यों आज तुझको घेरा
सुख के सभी हैं साथी कोई नही है तेरा
तेरा ही मोह तुझको कब से रुला रहा है। किस ओर
- जब तक है भेद दिल में भगवान से जुदा है
देखें जो दिल का दर्पण इस दिल में ही खुदा है
सुख रूप होके भी तू दुख आज पा रहा है । किस ओर ..

- इच्छा से यह जग है पाया
  इच्छा ने दुःख मुझे कितने दिये
- इक सुख है तो लाखों दुःख हैं
  इक सुख ने दुःख मुझे कितने दिये ।
- तुम शांत रहो तुम मौन रहो-३
  शब्दों ने दुःख मुझे कितने दिये ॥
- बुद्धि विनाश कर दो भगवन-३
  बुद्धि ने दुःख मुझे कितने दिये ॥
- अपनो को त्याग अपने मे रहो-३
  अपनो ने दुःख मुझे कितने दिये ॥
- तू ज्ञान से देह का भरम मिटा-३
  इस भरम ने दुःख मुझे कितने दिये ॥
- निष्काम बनो और प्यार करो-३
  इस मोह ने दुःख मुझे कितने दिये ॥
- हो मैं को त्याग ओउम् को जगा-३
  हो मैं ने दुःख मुझे कितने दिये ॥

सपने से जागा सत में ही रहो - ३
सपने ने दुःख मुझे कितने दिये ॥

अब ज्ञान से जीवन मुक्त हुआ - ३
गुरु ज्ञान ने सुख ही सुख हैं दिये

ऐ मेरे प्यारे गुरू, जन्मों से बिछड़े गुरू,
तुम पे मैं कुरबान
तू ही मेंरी जिन्दगी, तू ही मेरी बन्दगी
तू ही मेरी जान
ऐ मेरे प्यारे ....

- गुरू के आंचल से जो आए उन हवाओं को सलाम
  गुरू के मुख से निकली वाणी को मेरा शत-शत प्रणाम
  जितनी प्यारी याद तेरी उतना प्यारा तेरा ज्ञान
  तुझपे मैं कुर्बान ऐ मेरे ....
- मैं ने मांगी तुझसे खुशियां, तूने दिया आत्म आनन्द
  मैंने सुनाया राग अपना, तूने मुझे निर्मल किया
  द्वैत अब किससे करूं, सब जगह है तेरा धाम
  तुझपे मैं कुर्बान ऐ मेरे ....
- ज्ञान की ज्योति सदा दिल में मेरे जलती रहे
  कोई इच्छा ना रहे ये भावना बढ़ती रहे
  और कुछ बांकी नहीं, बस रह गया इक तेरा नाम (प्यार)
  तूझपे मैं कुर्बान ऐ मेरे ....

Kitho Ne Rangaiyaan – Bhajan – 8

कित्थों ने रंगाईयां अखां पुछदियां सारियां
जदों तेरे नाम दियां चढ़िया खुमारियां
सत्गुरु मेरिया ने कीता ए कमाल सी
शहनशाह बनाया मैनूं युगां दी कंगाल सी
कित्थों लगा राम मैनूं पूछदियां सारियां

सत्गुरू पूरियां ने चरणी ए लाया सी
वगदी हनेरी विचों दीया ए जलाया सी
वगदे सरोवर विचों ला लईया तारीया

सतगुरू पूरिया मिलाया संजोग सी
मिट गए दुख सारे होई हा निरोग जी
जन्म-जन्म दिया कटियां बीमारियां

सत्गरू मेरियां दर्श दिखाया सी
मोह वाला फन्दा मेरा फाड़ गिराया सी
आवागमन दिया कटियां ने बीमारिया

जरा तो इतना बता दो भगवन्
लगी ये कैसी लगा रहे हो
मुझी में रहकर मुझी से अपनी
ये खोज़ कैसी करा रहे हो

- हृदय भी तुम हो तुम्ही हो प्रीतम
प्रेम तुम हो तुम्ही हो प्रेमी
पुकारता मन तुम्हीं को क्यों फिर
तुम्हीं जो मन में समा रहे हो ॥ जरा ....

- प्राण तुम हो तुम्ही हो स्पन्दन
नयन तुम हो तुम्ही हो ज्योति
तुम्हीं को लेकर तुम्ही को ढूंढ
नई ये लीला दिखा रहे हो जरा ॥ ....

- भव भी तुम हो तुम्ही हो रचना
संगीत तुम हो तुम्ही हो रसना
स्तुति तुम्हारी तुम्ही से गाऊं
नई ये रीति बता रहे हो ॥ जरा ....

- कर्म भी तुम हो तुम्ही हो कर्त्ता
धर्म भी तुम हो तुम्ही हो धर्त्ता
निमित्त कारण मुझे बनाकर

Aa chal Ke Tujhe – Bhajan – 10

आ चल के तुझे, मैं लेके चलूं इक ऐसे गगन के तले
जहां गम भी न हो, आंसू भी न हो, बस गुरू का प्यार खिले।।

- जहां दूर नज़र दौड़ाएं, हमें ब्रह्म ही ब्रह्म दिखाएं
जहां रगं-बिरंगे सत्संगी, आत्मा का संदेशा लाएं
जहां प्रेम मिले, जहां तृप्ति मिले, जहां ज्ञान सुहाना मिला।।
- जहां गुरू की वाणी सुनकर, आशा का सवेरा जागे
जहां गुरू की महिमा गाकर, घनघोर अंधेरा भागे,
चाहे खुशी मिले, चाहे ग़म भी मिले, दोनों में समान रहें।।
- अपने मन के मन्दिर में, जब गुरू को हमने बसाया
अद्वैत का गहरा भेद, तब हमको समझ में आया
श्रद्धा भी रहे, धीरज भी रहे, अनमोल ये ज्ञान मिले ।।
- बस ओम ही ओम बसे, बस प्रेम ही प्रेम बहे
बस गुरू का प्यार खिले, बस ज्ञान ही ज्ञान मिले ।।

Ajeeb Daastan Hai Yeh – Bhajan – 11

- अजीब दास्तां है ये, कहां गुरू कहां थे हम
यह मंज़िल आई कौन-सी, न वो जुदा रहे न हम ।
- गुरू का प्यार पाके रे, नया जहां बसाया है
कि दिल को साफ-साफ कर खुद यहां बसाया है।
- ये रोशनी के आने से, अन्धेरा सारा ढल गया
अन्दर की आग जो लगी, दिया ही जल के गल गया ।
- मुबारकें हमें के हम, तो नूर ही नूर हो गए
गुरू के इतने पास है, कि खुद से दूर हो गए ।

Dheere Dheere Pyaar Ko Badana Hai – Bhajan – 12

धीरे-धीरे प्यार को बढ़ाना है
हद से गुजर जाना है

मुझे बस गुरू से दिल लगाना है,
आत्म में टिक जाना है। धीरे-धीरे ....

- ऐसी जिन्दगी है अब ,
हर तरफ खुशी है अब ,
इतना प्यार दिया तूने सतगुरू
अब ने कोई गम होगा ,
ना ये प्यार कम होगा
सच्चा प्यार तूने ही सिखाया
बेहद में अब तो आना है। धीरे ....

- मैं अकेला क्या करता ,
द्वैत में जलता मरता ,
तेरे प्यार के बिना ,
तड़पता उमर भर।
तूने गले से लगाया ,
कर्मों से है बचाया ,
दिव्य दृष्टि देके सबमें ,
अपना आप है दिखाया।
तेरे लिए मरके भी दिखाना है

धीरे धीरे ....

तेरा प्यार है निष्काम.
तेरी वाणी है सरल
तू हमारे जीवन की ज्योति का कमल
जान से भी जान हमको
है इतना प्यारा

Ye Meetha Prem Pyaala – Bhajan – 13

ये मीठा प्रेम प्याला कोई पीएगा किस्मत वाला
यह सत्संग वाला प्याला कोई पीएगा किस्मत वाला
प्रेम गुरू है प्रेम ही चेला , प्रेम धर्म है प्रेम ही मेला
प्रेम की फेरो माला , कोई फेरेगा किस्मत वाला
प्रेम बिना प्रभु नहीं मिलता , मन का कष्ट कभी नहीं टलता
प्रेम करे उजियाला , कोई करेगा किस्मत वाला
प्रेम का गहना प्रेमी पावे , जन्म मरण का दुःख मिटाए
काटे कर्म जंजाला , कोई काटेगा किस्मत वाला
प्रेम ही सबका कष्ट मिटाए, लाखों के दुराचार छुड़ाए
प्रेम में हो मतवाला , कोई होएगा किस्मत वाला ।

Tere Ehsaan Ka Badla – Bhajan – 14

तेरे अहसान का बदला चुकाया जा नहीं सकता
करम ऐसा किया तूने भुलाया जा नहीं सकता
अगर मुझको न तू मिलता मेरा मुश्किल गुजारा था
जो पहुंचा है बुलन्दी पर वो इक टूटा सितारा था
दिलों से तेरी उल्फत को मिटाया जा नहीं सकता।

- मेरी हर सांस पर दाता फकत अधिकार तेरा है
मिला जो भी मिला तुझसे मेरा क्या था जो मेरा है
तुझे दुनियां की दौलत से रिझाया जा नहीं सकता

- बड़ी ऊंची तेरी रहमत बड़ी छोटी जुबां मेरी
तुम्हें दाता समझ पाऊं, है हस्ती वो कहां मेरी
तेरी रहमत को शब्दों में सुनाया जा नहीं सकता
जगत जीवन यह साया है सदा तेरी इनायत का
मुझे है शौक ए दाता सदा तेरी इबादत का
बिना तेरे यह जीवन को संवारा जा नहीं सकता।

तुम्हे पाके हमने जहां पा लिया है

जमीं तो जमीं आसमां पा लिया है

- मुझको मिली है सच्ची ये जो मस्ती

  मिटा न सकेगी इसे कोई हस्ती

  जब से हे भगवन् तुम्हें पा लिया है । जमीं तो

- तुम्हारे ही प्रेम में बनी हूं मैं जोगन

  सिवा अब तुम्हारे मेरा कौन भगवन

  जड़ और चेतन में तुम्हें पा लिया है । जमीं तो

- दुनियां की नियामत कुछ भी नहीं है

  फिर भी ये मूरख भटक रहे हैं

  सच्चा ये खजाना हम ने पा लिया है

  जमीं तो जमीं आसमां पा लिया है । ....

तू तू न रहे मैं मैं न रहूं
हम राम में ऐसे रम जाए
पानी में जैसे नमक डली
हम राम में ऐसे रम जाएं

- हम तेरे द्वारे आन पड़े
अब और बताएं जाएं कहां
ऐसी दया करो भगवान मेरे
इस जन्म में तुझ से मिल जाएं
कहीं काम कोध में फंसकर
हम घुट-घुट कर न मर जाएं
ऐसी दया करो दयावान मेरे
इस जन्म मरण से छूट जाएं

- अब कोई कर्म का खाता नहीं
अब राम में हम सब रम ही गए
कोई लोक नहीं परलोक नहीं
जब सतगुरू का आदेश मिला

दिल में बैठा राम रमैया, तुझको नज़र न आवे
पाथर मूर्त आप बनाई उसको सीस झुकाए

- सुख की खातिर जोड़ी माया सुख तो हाथ न आया
जिस कारण सुख उपजे मन में वह ठाकुर बिसराया
तुझे कैसे कोई समझावे तुझको नज़र न आये।
- जग की वस्तु थिर नहीं कोई पल पल मिटती जाए
घट-घट जले यह जीवन ज्योति वह सबमें मुस्काए
क्यों उससे नयन चुराए, तुझको नज़र न आये।
- पत्थर की तूने नाव बनाई, कैसे पार लगाए
अब तू अपना भाग्य जगा ले, जीवन सफल बना ले।

Darbar Mein Sache Satguru – Bhajan – 18

दरबार में सच्चे सतगुरू के दुख दर्द मिटाए जाते है
जो तंग आए इस जीवन से इस दर पे हंसाए जाते है

- दुनियां के सताए लोग यहां सीने से लगाए जाते है
ये महफिल है मस्तानों की हर एक यहां मतवाला है
भर भर के ज़ाम इबादत के यहां सब को पिलाए जाते है
- इल्जाम लगाने वालों ने इल्जाम लगाए लाख मगर
तेरी सौगात समझकर ही हम सर पे उठाए जाते हैं
- जिन प्यारो पे हे जगवालो, हो खास इनायत सतगुरू की
उनको ही संदेशा आता है, और वे ही बुलाए जाते हैं
- क्यो डरते हो ऐ जगवालो इस दर पर शीश झुकाने को
इस दर पे तो ऐ नादानों सिर भेंट चढ़ाए जाते हैं
दरबार में सच्चे सतगुरू के दुख दर्द ....

Tujhme Om Mujhme Om – Bhajan – 19

तुझमे ओम मुझमे ओम सबमें ओम समाया
सब से कर ले प्यार जगत में कोई नहीं पराया है

- जितने हैं संसार के प्राणी सब में एक ही ज्योति
एक बाग के पुष्प हैं सारे एक माला के मोती
न जाने किस कारीगर ने कैसी मिट्टी से बनाया
- एक आत्मा एक प्रेम है, एक है मन्जिल हमारी
एक को जान के एक में रहके यही निश्चय हमारा
सतगुरू के वचनों को जाने ये ही उत्तम पूजा
- छूत-छात और भेद-भाव की दीवारों को तोड़ें
बदला जमाना तुम भी बदलो बुरी आदतें छोड़ो
जागो और जगाओ सबको समय है ऐसा आया
- भेद भाव के बन्धन तोड़ो, आत्मसंग में प्रीत को जोड़ो
सतगुरू का फरमान यही है, मेरे दादा का ज्ञान यही है
सबमें देखो झांकी प्रभू की सबमें वो ही समाया। ....

Jag Mein Sunder Hai Do Naam – Bhajan – 20

जग में सुन्दर है दो नाम

दोहा – दस मास को तेरो पिंजरो, ऊपर सुन्दर चाम ।
कंचन काया राख बनेगी, ले ले राम को नाम ।।

जग में सुन्दर हैं दो नाम, चाहे कृष्ण कहो या राम ।।टेर।।
बोलो राम राम राम, बोलो श्याम श्याम श्याम ।।

एक हृदय में प्रेम बढ़ावै, एक पाप के ताप हटावै ।
दोनों सुख के सागर हैं औ दोनों पूरन काम ।। चाहे...

माखन ब्रज में एक चुराये, एक बेर भिलनी घर खाये ।
प्रेम भाव से भरे अनोखे, दोनों के हैं काम ।।चाहे...

एक कंस पापी संहारे, एक दुष्ट रावण को मारे ।
दोनों हैं दुःख के हर्ता और दोनों बल के धाम ।।चाहे...

एक राधिका के संग राजै, एक जानकी संग विराजै ।
चाहे राधेश्याम कहो या बोलो सीताराम ।।चाहे...

दोनों हैं घट-घट के बासी, दोनों हैं आनन्द प्रकाशी ।
राम श्याम के दिव्य भजन से मिलता है आराम ।।चाहे...

मिलता है सच्चा सुख केवल गुरुदेव तुम्हारे चरणों में ।
यह बिनती है पल-पल छिन-छिन, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में । टेर ।

चाहे बैरी सब संसार बने, चाहे जीवन मुझ पर भार बने ।
चाहे मौत गले का हार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में । १ ।

चाहे अग्नी में मुझे जलना हो, जाहे कांटों पर मुझे चलना हो ।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में । २ ।

चाहे संकट ने मुझे घेरा हो, चाहे चारों ओर अंधेरा हो ।
पर मन नहीं डगमग मेरा हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में । ३ ।

जिह्वा पर तेरा नाम रहे, तेरा ध्यान सुबह और शाम रहे ।
तेरी यादें तो आठों याम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में । ४ ।

दया कर दान भक्ति का

जब तक रहेगी जिन्दगी, फुरसत न होगी काम से।
कुछ समय ऐसा निकालो, प्रेम कर लो राम से ॥

दया कर दान भक्ति का, हमें परमात्मा देना।
दया करके हमारी आत्मा को शुद्धता देना ॥

सदा से आप दीनों का, प्रभु उद्धार करते हैं।
हमारी दीन हालत को, पतित पावन मिटा देना ॥
दया कर दान भक्ति का ...

बहा दो प्रेम की गंगा, दिलों में प्रेम का सागर।
हमें आपस में मिल-जुलकर प्रभु रहना सिखा देना।
दया कर दान भक्ति का ...

हमारे ध्यान में आओ, प्रभु आंखों में बस जाओ।
अंधेरे दिल में आकर के, परम ज्योति जगा देना।
दया कर दान भक्ति का ...

हमारा कर्म हो सेवा, हमारा धर्म हो सेवा।
सदा ईमान हो सेवा, हमें सेवक बना देना।
दया कर दान भक्ति का ...

मां की भीगे चुनरिया

तर्ज : चंचल ...

सावन की बरसे बदरिया, मां की भीगी चुनरिया।
भीगी चुनरिया, मां की भीगी चुनरिया॥

लाल चुनड मां की, चम-चम चमके,
माथे की बिन्दिया भी, दम-दम दमके।
हाथों में, झलके मुन्दरिया मां की भीगी चुनरिया।
सावन की बरसे बदरिया ...

छायी हरियाली, झूमे अमवा की डाली,
होके मतवाली कूके, कोयलिया काली।
बादल में, कड़के बिजुरिया मां की भीगी चुनरिया।
सावन की बरसे बदरिया ...

ऊंचा भवन है तेरा, ऊंचा है डेरा,
कैसे चढूं ऊपर, पांव फिसले है मेरा।
टेढ़ी-मेढ़ी, है डगरिया मां की भीगी चुनरिया।
सावन की बरसे बदरिया ...

काली घटा पानी, भर-भर के लाई,
झूला झूले हैं, माँ वैष्णो माई।
भक्तों पे, मां की नजरिया मां की भीगी चुनरिया।
सावन की बरसे बदरिया ...

भगवान ! मेरी नैया उस पार लगा देना ।
अब तक तो निभाया है आगे भी निभा लेना ।
दल बल के साथ माया घेरे जो मुझे आकर ।
तो देखते न रहना झट आके बचा लेना । भगवान .....
सम्भव है झंझटों में मैं तुमको भूल जाऊँ ।
पर नाथ ! कहीं तुम भी मुझको भूला देना । भगवान .....
तुम देव मैं पुजारी, तुम इष्ट मैं उपासक ।
यह बात अगर सच है सच करके दिखा देना । भगवान .....

Duniya Chale Na Sri Ram Ke Bina – Bhajan – 25

(तर्ज: दुनिया चले ना श्रीराम के बिना...)

रोज मेरी खिडकी से झाँकता है वो, ताजा ताजा माखन खाता है वो ॥
छोटे छोटे हाथ निकालता है वो, नहीं दू तो माटी उछालता है वो ॥

बोलता है थोड़ा सा तुतला के,
माँगता है थोड़ा सा शरमा के-2
चोरी चोरी चोरी चोरी चोरी चोरी
चोरी-चोरी आंगन को फांदता है वो,
ताजा-ताजा माखन मांगता है वो ॥

नर्म कलाई पकड़ता हूं
माखन हथेली पर रखता हूं-2
धीरे धीरे धीरी धीरे धीरे धीरे
धीरे-धीरे माखन चाटता है वो
ताजा-ताजा माखन मांगता है वो ॥

जब-जब मैं माखन बिलौता हूं,
आँसुओं से दामन भिगोता हूं-2
बात 'बनवारी' मैं भी जानता है वो,
इसलिए माखन मांगता है वो ॥

श्रृंगार तेरा बाबा, कहो किसने सजाया है,
कैसा लगे, कह दूं तुझे, जो मन में आया है,
आज तेरे भक्तों ने, तुझे बनड़ा सा बनाया है ।।टेर।।

।। अन्तरा ।।

पेचा फूलों का सोहे-हाँ-सोहे,
रोली चावल तिलक बने मन मोहे,
काजल से नैणों में, क्या खूब लगाया है ।।
आज तेरे भक्तों....

हीरों से जड़ा तेरा बागा-हाँ-बागा,
चमचम चमके दूर अन्धेरा भागा,
हाथों की मेहन्दी ने क्या रंग खिलाया है ।।
आज तेरे भक्तों....

मुस्कान तुम्हारी प्यारी हाँ प्यारी,
मेरे दिल में प्रेम जगाने वाली,
किस्मत से ये शुभ दिन भक्तों ने पाया है ।।
आज तेरे भक्तों....

मैं नर हूं तू नारायण हाँ नारायण,
जब तक सांसे करूं तेरा गुणगायन
नन्दू' मेरा दिल तुझ पर सांवरिया आया है ।।
आज तेरे भक्तों....

कैसे आऊँ रे साँवरिया थारी ब्रजनगरी, कैसे आऊँ रे ।।टेर।।
तेरी नगरी में कीच बहुत है, पाँव चलूँ तो भीजे घघरी ।।१।।
तेरी नगरी में यमुना बहत है, पनियाँ भरन आई सगरी ।।२।।
तेरीं नगरी में दान लगत है, श्याम करे झगरा-झगरी ।।३।।
तेरी नगरी में फाग मचो है, मोहन रोक लई डगरी ।।४।।
लाल गुलाल के बादल छाये, केशर रंग भरे गगरी ।।५।।
भर पिचकारी मारत मोहन, चुनरी भींग गई सगरी ।।६।।
मो पर तो रंग हँस-हँस डारत, मोहन आप गयो भगरी ।।७।।
रामसखी तुम्हरो जस गावे, हृदय धरूँ तुमरी पगरी ।।८।।

Sri Vrindavun Dhaam – Bhajan – 28

श्रीवृन्दावन-धाम अपार रटे जा राधे-राधे ।
भजे जा राधे-राधे ! कहे जा राधे-राधे ।। १ ।।

वृन्दावन गलियाँ डोले, श्रीराधे-राधे बोले ।
वांको जनम सफल हो जाय, रटे जा राधे-राधे ।। २ ।।

या ब्रज की रज सुन्दर है, देवन को भी दुर्लभ है ।
मुक्तारज शीश चढ़ाय, रटे जा राधे-राधे ।। ३ ।।

ये वृन्दावन की लीला, नहीं जाने गुरु या चेला ।
ऋषि-मुनि गये सब हार, रटे जा राधे-राधे ।। ४ ।।

वृन्दावन रास रचायो, शिव गोपी रूप बनायो ।
सब देवन करें विचार, रटे जा राधे-राधे ।। ५ ।।

जो राधे-राधे गावे, सो प्रेम पदारथ पावे ।
तेरो बेड़ो होतो पार, रटे जा राधे-राधे ।। ६ ।।

जो राधे-राधे गावे, सो प्रेम पदारथ पावे ।
भव-सागर होवे पार, रटे जा राधे-राधे ।। ७ ।।

जो राधा नाम न गायो; सो बीरथा जनम गँवायो ।
बांको जीवन है धिक्कार, रटे जा राधे-राधे ।। ८ ।।

जो राधा-जनम न होतो, रसराज बिचारो रोतो ।
होता न कृष्ण अवतार, रटे जा राधे-राधे ।। ९ ।।

मन्दिर की शोभा न्यारी, यामें राजत राजदुलारी ।
ड्योढ़ी पर ब्रह्मा राजे, रटे जा राधे-राधे ।। १० ।।

जेहि वेद पुरान बखाने, निगमागम पार न पावे ।
खड़े वे राधे के दरवार, रटे जा राधे-राधे ।। ११ ।।

तू माया देख भुलाया, वृथा ही जनम गँवाया ।
फिर भटकैगो संसार, रटे जा राधे-राधे ।। १२ ।।

तेरे बिना श्याम हमारा नहीं कोई रे ।
हमारा नहीं कोई रे सहारा नहीं कोई रे ।। टेक ।।

मैंने तुमको कभी न ध्याया, फिर भी तुमने किन्हीं दया,
तेरे जैसा लाड़ लड़ाया नहीं कोई रे ।। टेक ।।

मैने जब से तुमको पाया, तुमने मुझको गले लगाया
तेरे जैसा भाव दिखाया नहीं कोई रे ।। टेक ।।

मैंने तुमको ही अपनाया, तुम कर दो दीनन पर दया ।
तेरे जैसा दीनों का सहारा नहीं कोई रे ।। टेक ।।

मैंने तुमसे नाता जोड़ा, तुमसे जोड़ दुनिया से तोड़ा ।
तेरे जैसा साथ निभाया नहीं कोई रे ।। टेक ।।

मैंने सब कुछ तुम पर वारा, तुम मुझको प्यारे से प्यारा
तेरे जैसा प्यार दिखाया नहीं कोई रे ।। टेक ।।

Krishn Govind Gopal Gaate Chalo – Bhajan – 30

कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो
मनको विषयों के विष से हटाते चलो ।
इंद्रियों के ना घोड़े विष्यों में अड़े,
जो अड़े भी तो संयम के कोड़े पड़े,
तन के रथ को सु-पथ पर चलाते चलो ।। कृष्ण.. ।।१।।
नाम जपते रहो, काम करते रहो
पाप की वासनाओं से डरते रहो
सदगुणों का परम धन कमाते चलो ।। कृष्ण.. ।।२।।
लोग कहते हैं 'भगवान आते नहीं'
रुक्मिणी की तरह हम बुलाते नहीं
द्रोपदी की तरह धुन लगाते चलो ।। कृष्ण.. ।।३।।
लोग कहते हैं 'भगवान खाते नहीं'
भिलनी की तरह हम खिलाते नहीं
शाकप्रेमी विदुरसम जिमाते चलो ।। कृष्ण ।।४।।
दुःख में तड़पो नहीं सुख में फूलो नहीं
प्राण जायें मगर धर्म भूलो नहीं
धर्म धन का खजाना लुटाते चलो ।। कृष्ण.. ।।५।।
वक्त आयेगा ऐसा कभी ना कभी
हम भी पायेंगे प्रभु को कभी ना कभी
ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो ।। कृष्ण.. ।।६।।

तर्ज : ऐ मेरे दिले नादान ...

फरियाद मेरी सुनके, भोले नाथ चले आना ।
नित ध्यान धरूँ तेरा, बिगड़ी को बना देना ।। टेर।।

तुझे अपना समझ कर मैं, फरियाद सुनाता हूँ।
तेरे दर पे आकर मैं, नित धुनी रमाता हूँ।
क्यों भुल गये भगवन, मुझे समझ के बेगाना ... ।।१।।

मेरी नाव भँवर डोले, तुम ही तो खेवैया हो।
जग के रखवाले तुम, तुम ही तो कन्हैया हो।
कर बैल सवारी तुम, भव पार लगा जाना ... ।।२।।

तुम बिन ना कोई मेरा, अब नाथ सहारा है।
इस जीवन को मैने, तुझ पर ही वारा है।
मर्जी है तेरी बाबा, अच्छा नहीं तड़पाना ... ।।३।।

नैनों में भरे आँसू, क्यों तरस ना खाते हो।
क्या दोष हुआ मुझसे, मुझे क्यों ठुकराते हो।
अब महर करो बाबा, सुनके मेरा अफसाना ... ।।४।।

(तर्ज : जुम्मे के जुम्मे)

दुनियाँ चले ना श्री राम के बिना,
रामजी चले ना हनुमान के बिना ।

जब से रामायण पढली है
एक बात मैंने समझ ली है
रावण मरे ना श्रीराम के बिना
लंका जले ना हनुमान के बिना ।। १ ।।

लक्ष्मण का बचना मुश्किल था
कौन बुँटि लाने के काबिल था
लक्ष्मण बचे ना श्रीराम के बिना
बुँटी मिले ना हनुमान के बिना ।। २ ।।

सीता हरण की कहानी सुनो
''सुशील'' मेरी जुबानी सुनो
वापस मिले ना श्रीराम के बिना
पता चले ना हनुमान के बिना ।। ३ ।।

बैठे सिंहासन पे श्रीराम जी
चरणों में बैठे है हनुमान जी
मुक्ति मिले ना श्रीराम के बिना
भक्ति मिले ना हनुमान के बिना ।। ४ ।।

Sri Hanuman Vandana – Bhajan – 33

श्री हनुमान वन्दना

छम छम नाचे देखो वीर हनुमाना
कहते है लोग इसे राम का दीवाना ॥
पांव मे घुंघरू बाँध के नाचे ।
रामजी का नाम इसे प्यारा लागे ।
राम ने भी देखो इसे खूब पहचाना ॥ छम ...
जहाँ जहाँ किर्तन होता श्रीराम का ।
लगता है पहरा वहाँ वीर हनुमान का ।
राम के चरण में है इसका ठीकाना ॥ छम ...
नाच नाच देखो श्रीराम को रिझावे
बनवारी रात दिन नाचता ही चावे
भक्तों मे भक्त बड़ा दुनिया ने माना ॥ छम ...

Shyaam Thodi Door – Bhajan – 34

श्याम थोडी दूर पर ही झोपडी हमारी,
छोटा सा परिवार सेवा करेगी तुम्हारी-2
गुजरो उधर से तो जरूर चले आना-2
खाना खाके जाना श्याम खाना खाके जाना-2

आपको बुलाने में संकोच हो रहा है-2
रोक ना संकेगे तुम्हे दिल रो रहा है-2
लायक नही आपके गरीब का ठीकाना
खाना खाके जाना श्याम खाना खाके जाना
श्याम थोडी दूर पे ही झोपडी हमारी
आपकी हमारी कोई जान ना पहचान है
आप से हमारी कोई ना ही राम राम है
आपको बुला के हमें प्रेम है बढाना
खाना खाके जाना श्याम, खाना खाके जाना
श्याम थोडी दूर पे ही झोपडी हमारी
सुना है तू करमा की खिचड़ी को तरसे-2
बनवारी जाए वहां जहां प्रेम बरसे-2
हो सके तो सांवरे हमें भी आजमाना-2
खाना खाके जाना श्याम, खाना खाके जाना
श्याम थोड़ी दूर पे ही झोपडी हमारी

पायो जी म्हे तो

पायो जी म्हे तो, राम रतन धन पायो।

वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरू,
कृपा कर अपनायो।
जन्म जन्म की पूंजी पाई,
जग में सभी खो बायो।।
पायो जी म्हे ......

खायो न खरच चोर न लेवें,
दिन दिन बढत सवायो।
सत की नाव खेवटिया सतगुरू,
भव सागर तर आयो।।
पायो जी म्हे ......

मीरा के प्रभु गिरधर नागर,
हरस हरस जश गायो।।
पायो जी म्हे ......

।। तर्ज: तुम्हीं हो माता पिता....।।

सफल हुआ है उन्हीं का जीवन
जो तेरे चरणों में आ गये है
नहीं जरूरत उन्हें किसी की
तेरी कृपा को जो पा गये है

है घोर कलियुग घना अंधेरा,
ना रस्ता सूझे ओ श्याम बाबा
जो आ गये है शरण तुम्हारी
वो सत्य मार्ग को पा गये है
सफल हुआ..........

ना ज्ञान हमको विषम समय का
है दृष्टि धूमिल थकी है काया
हे बोझ हर सांस बन गई है
ना मर ही पायें ना ही जीयें है
सफल हुआ है..........

तुम्हारी माया को श्याम बाबा
ना सुर असुर कोई समझ हे पाया
हो प्रेमियों के तुम एक प्रेमी
पुकारा जब भी तो आ गये हैं
सफल हुआ है........

श्रृंगार तेरा बाबा, कहो किसने सजाया है,
कैसा लगे, कह दूं तुझे, जो मन में आया है,
आज तेरे भक्तों ने, तुझे बनड़ा सा बनाया है ।।टेर।।

।। अन्तरा ।।

पेचा फूलों का सोहे-हाँ-सोहे,
रोली चावल तिलक बने मन मोहे,
काजल से नैणों में, क्या खूब लगाया है ।।
आज तेरे भक्तों....

हीरों से जड़ा तेरा बागा-हाँ-बागा,
चमचम चमके दूर अन्धेरा भागा,
हाथों की मेहन्दी ने क्या रंग खिलाया है ।।
आज तेरे भक्तों....

मुस्कान तुम्हारी प्यारी हाँ प्यारी,
मेरे दिल में प्रेम जगाने वाली,
किस्मत से ये शुभ दिन भक्तों ने पाया है ।।
आज तेरे भक्तों....

मैं नर हूं तू नारायण हाँ नारायण,
जब तक सांसे करूं तेरा गुणगायन
नन्दू' मेरा दिल तुझ पर सांवरिया आया है ।।
आज तेरे भक्तों....

जाहि विधि राखे राम

राम नाम रटते रहो, जब तक घट में प्राण।
कबहुं तो दीन दयाल के, भनक पड़ेगी कान॥

सीताराम-सीताराम-सीताराम कहिए,
जाहिविधि राखे राम ताहि विधि रहिए॥

मुख में हो राम नाम, राम सेवा हाथ में,
तू अकेला नहीं बन्दे, राम तेरे साथ में।
विधि का विधान जान, हानि-लाभ सहिए,
जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिए।
सीताराम-सीताराम ...

किया अभिमान तो फिर, मान नहीं पाएगा,
होगा प्यारे वो ही, जो रामजी को भाएगा।
फल आशा त्याग, शुभ कर्म करते रहिए,
जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिए।
सीताराम-सीताराम ...

जिन्दगी की डोर सौंप, हाथ दीनानाथ के,
महलों में राखे चाहे, झोंपड़ी में वास दे।
धनवाद, निरवाद, राम राम कहिए,
जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिए।
सीताराम-सीताराम ...

आशा एक रामजी से, दूजी आशा छोड़ दे,
नाता एक रामजी से, दूजा नाता तोड़ दे।
काम-रस छोड़ प्यारे, राम रस पीजिए,
साधु संग अंग-अंग, राम रंग रंगिए।
सीताराम-सीताराम ...

सीताराम-सीताराम सीताराम कहिए।
जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिए।
सीताराम-सीताराम ...

समाधि स्तुति

इतना तो कर दो स्वामी, जब प्राण तन से निकले।
होवे समाधि पूरी, जब प्राण तन से निकले।।टेर।।

माता पितादि जितने, हैं ये कुटुम्ब सारे।
उनसे ममत्व छूटे, जब प्राण तन से निकले।। इतना तो।१।

वैरी मेरे बहुत से, होवेंगे इस जगत में।
उनसे क्षमा करालू जब प्राण तन से निकले।। इतना तो।२।

परिग्रह का जाल मुझ पर फैला बहुत है स्वामी।
उनसे ममत्व छूटे, जब प्राण तन से निकले।। इतना तो।३।

दुष्कर्म दुःख दिखावे या रोग मुझ को घेरे।
प्रभु का न ध्यान छूटे, जब प्राण तन से निकले।। इतना तो।४।

इच्छा क्षुधा तृषा की, होवे जो उस घड़ी में।
उनका भी त्याग कर दूं,जब प्राण तन से निकले।। इतना तो।५।

ऐ नाथ अर्ज करता विनती पै ध्यान दीजे।
होवे सफल 'मनोरथ' जब प्राण तन से निकले।। इतना तो।६।

हे नाथ ! अब तो ऐसी दया हो,
जीवन निरर्थक जाने न पाये ।।टेक।।
यह मन न जाने क्या-क्या कराये,
कुछ बन न पाया अपने बनाये ।
संसार में ही आसक्त रहकर,
दिन-रात अपने मतलब की कह कर ।
सुख के लिए लाखों दुःख सह कर,
ये दिन अभी तक यों ही बिताये ।
हे नाथ ! अब तो ऐसी दया हो ....(१)

ऐसा जगा दो, फिर सो न जाऊँ,
अपने को निष्काम प्रेमी बनाऊँ ।
मैं आपको चाहूँ और पाऊँ,
संसार का भय रह कुछ न जाये ।
हे नाथ ! अब तो ऐसी दया हो ....(२)

वह योग्यता दो सत्कर्म करलूँ,
अपने हृदय में सद्भाव भरलूँ ।

भगवान मेरी नैय्या, उस पार लगा देना ।
अब तक तो निभाया है, आगे भी निभा देना ।

दल बल के साथ माया, आकर मुझे जो घेरे ।
तुम देखते न रहना, झट आकर बचा लेना ।

तुम ईष्ट मैं उपासक, प्रभु देव मैं पुजारी ।
जो बात सत्य होवे, सत्य करके दिखा देना ।

सम्भव है झंझटों में, मैं तुमको भूल जाऊँ ।
पर नाथ कहीं तुम भी, मुझको न भुला देना ।

हम मोर बन के मोहन, नाचा करेंगे बन में ।
तुम श्याम घटा बनकर, वन् वन में उठा करना ।

बन करके हम पपीहा, पी पी रटा करेंगे ।
तुम स्वाति बूँद बन कर, प्यासे पर दया करना ।

हम राधेश्याम जग में, तुमको ही निहारेंगे ।
तुम दिव्य-ज्योति बनकर नयनों में रहा करना ।

छलिया का वेश बनाया, श्याम चूड़ी बेचने आया
झोली कांधे धरी, उसमें चूड़ी भरी,
गलियों में शोर मचाया, श्याम चूड़ी बेचने आया ।
छलिया का .... (१)

राधा ने सुनी ललिता से कही
मोहन को तुरंत बुलाया, मनिहारी का वेश बनाया ।
छलिया का .... (२)

चूड़ी लाल नहीं पहनु, चूड़ी हरी नहीं पहनुं,
मुझे श्याम रंग भाया, श्याम चूड़ी बेचने आया ।
छलिया का .... (३)

राधा पहनने लगी, श्याम पहनाने लगे,
राधा ने हाथ बढ़ाया, श्याम चूड़ी बेचने आया ।
छलिया का .... (४)

राधा कहने लगी तुम छलिया घणा,
धिरे से हाथ दबाया, श्याम चूड़ी बेचने आया
छलिया का .... (५)

राधा ने तुरंत पहचाना, श्याम मनिहारी का वेश बनाया
छलिया का वेश बनाया, श्याम चूड़ी बेचने आया ।
छलिया का .... (६

तेरे पूजन को भगवान बना मन मन्दिर आलीशान ।

किसने जानी तेरी माया किसने भेद तुम्हारा पाया ।
हारे ऋषिमुनि कर ध्यान बना मन मन्दिर आलीशान ।।१।।

तू ही जल में तूही थल में तूही मन में तूही बन में ।
तेरा रूप अनूप जहान बना मन मन्दिर आलीशान ।।२।।

तू हर गुल में तू बुलबुल में तू हर डालके हर पातन में ।
तू हर दिल में मूर्ति मान बना मन मन्दिर आलीशान ।।३।।

तूने राजा रंक बनाये तूने भिक्षुक राज बैठाये ।
तेरी लीला परम महान बना मन मन्दिर आलीशान ।।४।।

झूठे जगकी झूठी माया मुर्ख इसमें क्यों भरमाया ।
कर कुछ जीवन का कल्यान बना मन मन्दिर आलीशान ।।५।।

Ab Saunp Diya Es Jeevan Ka – Bhajan – 44

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में ।
है जीत तुम्हारे हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में ।
मेरा निश्चय वस एक यही, इक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं ।
अर्पण कर दूं दुनिया भर का, सब भार तुम्हारे हाथों में ।
जो जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ, ज्यों जल में कमल का फूल रहे ।
मेरे सब गुण-दोष समर्पित हों, गोपाल तुम्हारे हाथों में ।
यदि मानुष का मुझे जन्म मिले, तब चरणों का मैं पूजारी बनूँ ।
इस पूजक की इक इक रग का, हो तार तुम्हारे हाथों में ।
जब जब संसार का कैदी बनूँ, निष्काम भाव से कर्म करूँ ।
फिर अन्त समय में प्राण तजूँ निराकार तुम्हारे हाथों में ।
मुझमें तुझ में बस भेद यही, मैं नर हूँ तुम नारायण हो ।
मैं हूँ संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में ।
अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में ।
है जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में ।

Tera Ramji Karenge Beda Paar – Bhajan – 45

तेरा रामजी करेंगे बेड़ा पार, उदास मन काहे को करे ।
उदास मन काहे को करे, निराश मन काहे को करे ।। टेर ।।
नैया तू करदे उसके हवाले, लहर-लहर हरि आप सम्भाले ।
प्रभु आप ही उतारें तेरा भार, उदास मन काहे को करे ।। १ ।।
काबू में है मझधार उसीके, हाथों में है पतवार उसी के ।
बाजी जीत लेओ होवे नहीं हार, उदास मन काहे को करे ।। २ ।।
गर निर्दोष तुझे क्या डर है, पग-पग पर साथी ईश्वर है ।
जरा भावना से करले पुकार, उदास मन काहे को करे ।। ३ ।।
सहज किनारा मिल जायेगा, परम सहारा मिल जायेगा ।
डोरी सौंप दे उसी के अब हाथ, उदास मन काहे को करे ।। ४ ।।

Rama Rama Rathte Rathte – Bhajan – 46

रामा-रामा रटते रटते, बीती रे उमरिया ।
रघुकुल नन्दन कब आओगे, भिलनी की डगरिया ।। टेर ।।

मैं भिलनी सबरी की जाई, भजन भाव न जानूँ रे ।
राम तुम्हारे दरसन के हित, बन में जीवन पालूँ रे ।
चरण कमल से निर्मल करदो, दासी की झोपड़िया ।। रामा० ।१।

रोज सबेरे बन में जाकर, रास्ता साफ कराती हूँ ।
अपने प्रभु के खातिर बनसे, चुन-चुन के फल लाती हूँ ।
मीटे-मीठे बेरन की भर, ल्याई मैं छबड़िया ।। रामा० ।२।

सुन्दर श्याम सलोनी सूरत, नैनन बीच बसाऊँगी ।
पदपंकज की रज धर मस्तक, चरणों में सीस नवाऊँगी ।
प्रभुजी मुझको भूल गये क्या, ल्यो दासी की खबरिया ।। रा० ।३।

नाथ तुम्हारे दर्शन के हित मैं अबला एक नारी हूँ ।
दर्शन बिन दोऊ नैना तरसे दिल की बड़ी दुख्यारी हूँ ।
मुझको दर्शन देवो दयामय, डालो म्हैर नजरिया ।। रामा० ।४।

Tune Ajab Racha – Bhajan – 47

तुने अजब रच्या भगवान खिलौना माटी का
माटी का रे माटी का । तूने अजब .... (१)
कान दिए तुझे भजन सुनन को, मुख से करें गुणगान
खिलौना माटी का । तुने अजब .... (२)
जिह्वा दी हरि भजन करन को, आखों से करे पहचान
खिलौना माटी का । अजब .... (३)
शीश दिए हरि चरण झुकन को, हाथ दिए कर दान
खिलौना माटी का । तुने अजब .... (४)
सत्य नाम का बनाकर बेड़ा, उतरेगा तु भव से पार
खिलौना माटी का .... (५)

तेरा ओम नाम रम जाये प्रभु जी मेरी नस-नस में
तेरी भक्ति का रस भर जाये प्रभु जी मेरी नस-नस में

तू दाता मैं दीन भिखारी
तू स्वामी मैं तेरा पुजारी
तेरी गूंज गूँजती जाये प्रभु जी मेरी नस-नस में ।

पाप मिटा मन निर्मल कीना
ओम नाम का अमृत पीना
तेरा प्रेम छलकता जाये प्रभु जी मेरी नस-नस में ।

मिट गया मेरे मन का अंधेरा
मिल गया प्यारा प्रीतम मेरा
तेरी ज्ञान ज्योति जग जाये प्रभु जी मेरी नस-नस में ।

प्रभु है मेरा घट घट वासी
अजर अमर प्रभु है अविनाशी
तेरा गुण गान का मुख बन जाये प्रभु जी मेरी नस-नस में ।

Jug Mein Sundar Hai Do Naam – Bhajan – 49

जग में सुन्दर हैं दो नाम, चाहे कृष्ण कहो या राम ।।टेर।।

एक हृदय में प्रेम बढ़ावे, एक ताप संताप मिटावे ।
दोनू सुख के सागर हैं, दोनू पूरण काम ।।१।।

माखन ब्रज में एक चुरावै, एक बेर भीलनी के खावै ।
प्रेम भाव के भरे अनोखे, दोनु के हैं काम ।।२।।

एक पापी कंस संहारे, एक दुष्ट रावण को मारे ।
दोनू दीन के दुःख हरता हैं, दोनु बलके धाम ।।३।।

एक राधिका संग राजे, एक जानकी संग विराजे ।
चाहे सीताराम कहो, चाहे राधेश्याम ।।४।।

दोनू हैं घट-घट के वासी, दोनू हैं आनन्द प्रकासी ।
राम श्याम के दिव्य भजन से, मिलता है विश्राम ।।५।।

Tune Heero So Janam Gawayo – Bhajan – 50

तुने हीरो सो जन्म गवायो, भजन बिना बावरे ।।टेर।।
ना तू आयो संतां शरणे, ना तू हरि गुण गायो ।
पचि-पचि मरयो बैलकी नाँई, सोय रह्यो उठ खायो ।।१।।
यो संसार हाट बनिये की, सब जग सोदे आयो ।
चतुर माल चौगुना कीन्या, मूरख मूल गमायो ।।२।।
यो संसार फूल सँमल को, सूवो देख लुभायो ।
मारी चोंच निकल गई रूई, शिर धुनि-धुनि पछितायो ।।३।।
यो संसार माया को लोभी, ममता महल चिनायो ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, हाथ कछू नहीं आयो ।।४।।

Ek Jholi Mein Phool Bhare Hai – Bhajan – 51

एक झोली में फूल भरे हैं, एक झोली में काँटे, कोई कारण होगा ।
तेरे बस में कुछ भी नहीं, यदि बाँटने वाला बाँटे, कोई कारण होगा ।।

पहले बनती हैं तकदीरें, फिर बनते हैं शरीर ।
ये प्रभु की है कारीगरी तू क्यों होता गंभीर ।। कोई.... ।।

नाग भी डँस ले तो मिल जाये, किसी को जीवनदान ।
चींटी से भी मिट सकता है, किसी का नामनिशान ।। कोई.... ।।

धन का विस्तर मिले जाये पर नींद को तरसे नैंन ।
काँटो पर भी सो कर आये किसी के मन कौ चैन ।। कोई.... ।।

सागर से भी बुझ सकती नहीं, कभी किसी की प्यास ।
कभी एक ही बूँद से हो जाती है पूरण आस ।। कोई.... ।।

Fariyaad Meri Sunke – Bhajan – 52

फरियाद मेरी सुनके, खाखीजी चले आना।
नित ध्यान धरूँ तेरा, बिगडी को बना देना ।। टेर ।।

आपको अपना समझ कर मैं, फरियाद सुनाता हूँ,
तेरे दर पे आकर मैं, नित ध्यान लगाता हूँ।
क्यु भूल गये बाबा, क्यू मुझे समझा ना अपना ।।१।।

मेरी नाव भंवर में डोले, तुम ही तो खिवैया हो,
भक्तों के रखवाले तुम, तुम ही तो खाखी हो।
कर नजर मेहर की तुम, भव पार लगा जाना ।।२।।

तुम बिन न कोई मेरा, अब आप का सहारा है,
इस जीवन में मैंने, अब आपको अपनाया है।
मर्जी करदो बाबा, बहुत तप पाया है ।। ३।।

दुःखों के आँसू पहचानकर, तरस खाओजी,
जो कुछ दोष हुआ बाबा, अब क्षमा करवाओ जी,
कर मेहर बाबा, मोहे चरण बिठाओ जी ।।४।।

Tumhaare Charno Mein – Bhajan – 53

तुम्हारे चरणों में

मिलता है सच्चा सुख केवल, भगवान तुम्हारे चरणों में।
यह विनती है पल पल छिन छिन, रहे ध्यान तम्हारे चरणों में ॥

जिह्वा पर तेरा नाम रहे, तेरी याद सुबह और शाम रहे।
बस काम यह आठों याम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥
मिलता है ...

चाहे संकट ने मुझे घेरा हो, चाहे चारों ओर अंधेरा हो।
पर चित न डगमग मेरा हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥
मिलता है ...

चाहे अग्नि में भी जलना हो, चाहे कांटों पर ही चलना हो।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥
मिलता है ...

चाहे गृहस्थ का फर्ज निभाना हो, चाहे घर-घर अलख जगाना हो।
चाहे दुश्मन सारा जमाना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।
मिलता है ...

चाहे बीच भंवर में नैया हो, चाहे कोई ना उसका खिवैया हो।
भवसागर पार उतरने को, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥
मिलता है ...

चाहे बैरी सब संसार बने, चाहे जीवन मुझ पर भार बने।
चाहे मौत गले का हार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥
मिलता है ...

Rimjhim Ke Geet Saawan Gaaye – Bhajan – 54

तर्ज : रिमझिम के गीत सावन गाये ....

भरदे रे श्याम झोली भरदे भरदे
ना बहलाओ, बातों में

दिन बीते, बीती रातों, अपनी कितनी हुई मुलाकातें
तुझे जाना, पहचाना, तेरे झूठे हुए रे सारे वादे
भूले रे श्याम तुम तो भूले भूले क्या रखा है बातों में
भरदे रे ... ॥१॥

नादान है, अनजान है, श्याम तूं ही मेरा भगवान है
तुझे चाहूं, तुझे पाऊं, मेरे दिल का यही अरमान है
पढले रे श्याम दिल की पढले पढले सब लिखा है आँखों में
भरदे रे ... ॥२॥

मेरी नैया, ओ कन्हैया, पार करदे तूं बन के खीवैया
मैं तो हारा, गम का मारा, आजा आजा ओ बंशी बजैया
लेले रे श्याम अब तो लेले, मेरा हाथ हाथों में
भरदे रे ... ॥३॥

मैं हूं तेरा, तू है मेरा, मैंने डाला तेरे दर पे डेरा
मुझे आशा है, विश्वास है, श्याम भर देगा दामन मेरा
झूमें रे श्याम नन्दू झूमें झूमें तेरी बाहों में
भरदे रे ... ॥४॥

|| शब्द ||

भन्डारे मे बुलालो गुरुजी अर्ज करूँ ।
अर्ज करुँ ओ थारी गरज करूँ ||
आई सावन की पूर्णिमा न मेलो लाग भारी ।
दूर- दूर का दर्शन खातिर आवे है नर-नारी ।
थारे भगता से मिलादे गुरुजी अर्ज करूँ ||
गुरु बहना न जाता देखा मन म्हारो ललचावे
मेहर गुरु की हो जावे तो कोई न रोकन पावे ।
गुरुजी ऐसो हाथ फिरादे थार से अर्ज करूँ ||
सातो सुख दे राख्या गुरुजी, या क्युँ मन मे भराखों ।
हाथ जोड़ कर विनती करां हम गुरुजी थारे आगे ।
एक झलक दिखाके गुरुजी थार स अर्ज करूँ ||

|| शब्द ||

गोविन्दा गोपाला रे नन्दलाला तेरा प्यारा नाम है !
मोहन मुरली वाला और नन्दलाला तेरा प्यारा नाम है ।

मोर मुकुट माथे तिलक विराजे, गल वैजयन्तीमाला
कोई कहे बसुदेव के नन्दन कोई कहे नन्दलाला ।। गोविन्दा ।।

जमुना किनारे कृष्ण कन्हैया मुरली मधुर बजावे
ग्वाल बाल के संग में कान्हा माखन मिश्री खावे ।। गोविन्दा ।।

द्रोपदी ने जब तुम्हें पुकारा साड़ी आन बढ़ाई
भक्तों के खातिर आप बने प्रभु आकर नन्दा नाई ।। गोविन्दा ।।

दुर्योधन के मेवा त्यागे, साग विदुर घर खाये
अभिमानी से बात करो ना, दीनों को अपनाये ।। गोविन्दा ।।

जल में गज को ग्राह ने घेरा, जल में चक्र चलाया
जब जब पीड़ पड़ी भक्तन पर नंगे पावों आया ।। गोविन्दा ।।

जो कोई भजन करे नहीं भाई, वो नर जन्म वृथा खोता
राम नाम से गणिका तर गई पढ़ा पढ़ा घर में तोता ।। गोविन्दा ।।

शरणागत का संकट हरि से जावे नहीं बिलकुल देखा
क्रोध किया जब दुर्वासा ने, चक्र सुदर्शन को फेंका ।। गोविन्दा ।।

नरसी के सब काम संवारे, मुझको मत विसरारे
जनम-जनम से तेरा सेवक तेरा नाम पुकारे ।। गोविन्दा ।।

Janam Janam Ka Saath Hai – Bhajan – 57

।। भजन ।।

जनम जनम का साथ है, तुम्हारा हमारा।
करेंगे सेवा हर जीवन में, पकड़ो हाथ हमारा

जब भी जनम मिलेगा, सेवा करेंगे तेरी,
करते हैं तुमसे वादा, शरण रहेंगे तेरी,
हर जीवन में बनकर सथी, देना साथ हमारा।

दुनियां बनाने वाली, ये सब है तेरी माया,
सूरज चाँद सितारे, सब को तूंने बनाया,
फँस ना जाऊँ माया में, दे आर्शीवाद तुम्हारा।

जब से होश सम्भाला, तब से ये हमने जाना,
तेरी भक्ति ना मिले, जीवन व्यर्थ गँवाना
बनवारी इंसान जगत में, फिरता मारा मारा।

(तर्ज : ऐ मेरे दिल नादान.....)

गुरूदेव दया करके, मुझको अपना लेना।
मैं शरण पड़ा तेरी, चरणों में जगह देना।। टेर।।

करुणानिधि नाम तेरा, करुणा दिखलाओ तुम।
सोये हुये भाग्यो को, हे नाथ जगाओ तुम।
मेरी नाव भंवर डोले, उसे पार लगा देना।
गुरुदेव दया करके।।

तुम सुख के सागर हो, निर्धन के सहारे हो।
इस तन में समाये हो, मुझे प्राणों से प्यारे हो।
नित माला जपूँ तेरी; नही दिल से भुला देना।
गुरूदेव दया करके।।

पापी हूँ या कपटी हूँ जैसा भी हूँ तेरा हूँ।
घर वार छोड़ कर मै, जीवन से खेला हूँ
दुःख का मारा हूँ मै, मेरे दुखडे मिटा देना।
गुरूदेव दया करके।।

मै सवका सेवक हूँ, तेरे चरणो का चेरा हूँ।
नही नाथ भुलाना मुझे, इस जग मे अकेला हूँ।
तेरे दर का भिखारी हूँ मेरे दोष मिटा देना।
गुरुदेव दया करके।।

भरोसा कर तू ईश्वर का

भरोसा कर तू ईश्वर का, तुझे धोखा नहीं होगा।
यह जीवन बीत जायेगा, तुझे रोना नहीं होगा।।

कभी सुख है कभी दुख है, यह जीवन धूप छाया है।
हंसी में ही बिता डालो, बिताना ही तो माया है।।
भरोसा कर तू ......

जो सुख आये तो हंस देना, जो दुख आवे तो सह लेना।
न कहना कुछ कभी जग से, प्रभु से ही कह देना।।
भरोसा कर तू ......

यह कुछ भी तो नहीं बस में, तेरे जग कर्म की माया।
तो खुद ही धूप में बैठा, लखे निज रूप की छाया।।
भरोसा कर तू ......

कहां जग था कहां तू था, कभी तो सोच ए बन्दे।
झुका कर शीश को कह दे, प्रभु बन्दे प्रभु बन्दे।।
भरोसा कर तू ......

दाता एक राम जी

दाता एक राम जी भिखारी सारी दुनिया।
राम एक देवता पुजारी सारी दुनिया।।दाता एक....

द्वारे पे जाके उसके कोई भी पुकारता।
परम कृपा दे अपनी भव से उबारता।
ऐसे दीनानाथ पे बलिहारी सारी दुनिया।।दाता एक...

दो दिन का जीवन प्राणी कर ले विचार तू।
प्यारे प्रभु को अपने मन में निहार तू।
बिना हरि नाम के दुखयारी सारी दुनिया।।दाता एक...

नाम का प्रकाश जब अन्दर जगमगायेगा।
प्यारे श्री राम जी का दर्शन तू पायेगा।
ज्योति से जिसकी है उजियारी सारी दुनिया।।दाता एक...

राम नाम के हीरे मोती

राम नाम के हीरे मोती, मैं बिखराऊँ गली–गली।
लेलो रे कोई राम के प्यारे, शोर मचाऊँ गली–गली।।

माया के दिवानों सुन लो, एक दिन ऐसा आएगा।
धन दौलत और मालखजाना, यहीं पड़ा रह जायेगा।
सुन्दर काया मिट्टी होगी, चर्चा होगी गली–गली।।
राम नाम के हीरे मोती ...

क्यों करता है मेरा–मेरा, यह तो तेरा मकान नहीं।
झूठे जग में फंसा हुआ है, वह सच्चा इंसान नहीं।
दो दिन का जग में मेला, आखिर होगी चला चली।।
राम नाम के हीरे मोती ...

जिस जिसने यह मोती लूटे, वे तो माला माल हुए।
धनदौलत के बने पुजारी, अन्त में कंगाल हुए।
चांदी सोने वाले सुन लो, बात सुनाऊँ खरी–खरी।।
राम नाम के हीरे मोती ...

दुनियां को तू पगले कब तक, अपनी कहता जायेगा।
ईश्वर को तू भूल गया है फिर पाछे पछतायेगा।
दो दिन का यह चमन खिला है फिर मुरझाये कली–कली।।
राम नाम के हीरे मोती ...

श्यामा तेरे चरणों की गर धूल जो मिल जाये ।
सच कहती हूँ मेरी तकदीर सँवर जाये ॥ १ ॥
सुनती हूँ तेरी रहमत (कृपा) दिन-रात बरसती है ।
एक बूंद जो मिल जावे मन की कली खिल जाये ॥ २ ॥
यह मन बड़ा चंचल है तेरा भजन नहीं करता ।
जितना इसे समझाऊँ उतना ही मचल जाये ॥ ३ ॥
नजरों से गिराना ना चाहे जितनी सजा देना ।
नजरों से जो गिर जाये मुश्किल ही सम्हल पाये ॥ ४ ॥
राधे इस जीवन में बस इतनी तमन्ना है ।
तुम सामने हो मेरे मेरा दम ही निकल जाये ॥ ५ ॥

Rama Rama Rathte Rathte Beeti Re Umariya – Bhajan – 63

रामा–रामा रटते–रटते

रामा–रामा रटते–रटते, बीती रे उमरिया।
रघुकुल नन्दन कब आवोगे, भिलनी की डगरिया।।

मैं भिलनी सबरी की जाई, भजन भाव नहीं जानू रे।
राम तुम्हारे दर्शन के हित, बन में जीवन पालू रे।
चरण कमल से निर्मल कर दो, दासी की झुपडिया।।
रामा–रामा रटते ...

रोज सबेरे बन मे जाकर, रस्ता साफ कराती हूं।
अपने प्रभु के खातिर वन से, चुन चुन के फल लाती हूं।
मीठे मीठे बेरन की, भर ल्याई मैं छावड़िया।।
रामा–रामा रटते ...

सुंदर श्याम सलोनी सूरत, नयनों बीच बसाऊँगी।
पद पंकज की राजधर मस्तक, चरणों में शीश नवाऊँगी।
प्रभुजी मुझ को भूल गये क्या, ल्यो दासी की खबरिया।।
रामा–रामा रटते ...

नाथ तुम्हारे दर्शन के हित, मैं अबला एक नारी हूँ।
दर्शन बिन दोऊ नैना तरसे, दिल की बड़ी दुख्यारी हूं।
मुझ को दर्शन देवो दयामय, डालो म्हैर नजरिया।।
रामा–रामा रटते ...

भरोसा कर तू ईश्वर पर तुझे धोखा नहीं होगा ।
यह जीवन बीत जायेगा तुझे रोना नहीं होगा ।।
कभी सुख है कभी दुःख है यह जीवन धूप छाया है ।
हँसी में ही बिता डालो, बिताना ही यह माया है ।।
जो सुख आवे तो हँस देना, जो दुःख आवे तो सह लेना ।
न कहना कुछ कभी जग से, प्रभु से ही तू कह लेना ।।
वह कुछ भी तो नहीं जग में, तेरे बस कर्म की माया ।
तू खुद ही धूप में बैठा, लखे निज रूप की छाया ।।
कहाँ ये था कहाँ तू था, कभी तो सोच ये बन्दे ।
झुका कर सीस को कह दे प्रभु वन्दे ! प्रभु वन्दे ।।

Thaali Bharke Lyaai Khichdi – Bhajan – 65

थाली भरके ल्याई खीचड़ो, ऊपर घी की बाटकी ।
जीमो म्हारा श्याम धणी, जीमावै बेटी जाट की ।। टेर ।।

बाबो म्हारो गांव गयो है, ना जाने कद आवेगो ।
आज जिमाऊँ तने खीचड़ो, काल राबड़ी छाछ की ।। जीमो ।।

बार बार मन्दिर न जड़ती, बार-बार में खोलती ।
कईयाँ कोनी जीमो रे मोहन, करड़ी करड़ी बोलती ।
तू जीमे तो जद में जीमू, मानु ना कोई लाट की ।। जीमो ।।

पड़दो भूल गयी साँवरिया, पड़दो फेर लगायो जी ।
धावलीये के ओट बैठ कर, श्याम खीचड़ो खायो जी ।
भोला से भक्तां से यो, सांवरियो कईयां आंटकी ।। जीमो ।।

भक्ति हो तो करमा जैसी, सांवरियो घर आवेगो ।
सौहनलाल लोहाकर प्रभु का, हरष-हरष गुण गावेगो ।
सांचो प्रेम प्रभु में हो तो, मुर्ति बोले काट की ।। जीमो ।।

Ek Din Wo Bhole Bhandari – Bhajan – 66

एक दिन वो भोले भण्डारी, बन करके वृजनारी ।
गोकुल में आ गये हैं
पार्वती जी मना के हारी, न माने त्रिपुरारी,
गोकुल में आ गये हैं ।।टेर।।

पारवती से बोले, मैं भी चलूँगा तेरे संग में ।
राधा संग श्याम नाचे, मैं भी नाचूँगा तेरे संग में ।
रास रचेगा वृज में भारी, हमें दिखाओ प्यारी ।। गोकुल में.।। १ ।।

ओ मेरे भोले स्वामी, कैसे ले जाऊँ अपने साथ में ।
मोहन के सिवा वहाँ, कोई पुरुष ना जाए रास में ।
हँसी करेंगी ब्रज की नारी, मानो बात हमारी ।। गोकुल में.।। २ ।।

ऐसा बना दो मुझे, कोई न जाने इस राज को ।
मैं हूँ सहेली तेरी, ऐसा बताना ब्रजराज को ।
बना के जूड़ा, पहन के साड़ी, चाल चले मतवारी ।। गोकुल में.।। ३ ।।

हँस के सती ने कहा, बलिहारी जाऊँ इस रुप में ।
एक दिन तुम्हारे लिए, आए मुरारी इस रुप में ।
मोहिनी रूप बनाया मुरारी, अब ये तुम्हारी बारी ।। गोकुल में.।। ४ ।।

देखा मोहन ने, समझ गये वो सारी बात रे ।
ऐसी बजाई बंशी, सुध-बुध भूले भोलेनाथ रे ।
सिर से खिसक गई जब साड़ी, मुस्काए गिरिधारी ।। गोकुल में.।। ५ ।।

दीन दयालु तेरा, तब से गोपेश्वर हुआ नाम रे ।
ओ भोले बाबा तेरा, वृन्दावन बना धाम रे ।
"परमानन्द" कहे ओ त्रिपुरारी, रखियो लाज हमारी ।। शरण में.।। ६ ।।

Shyaam Teri Banshi Baje Dheere Dheere – Bhajan – 67

श्याम तेरी बंशी बजे धीरे धीरे (२)
बजे धीरे धीरे यमुना के तीरे (२)
गोविन्द तेरी, गोपाल तेरी माधव तेरी
बंशी बजे धीरे धीरे (२) (टेक)
इत में गोकुल उत में मथुरा
इत में मथुरा उत में गोकुल
बीच में यमुना बहे धीरे धीरे (२)
श्याम तेरी बंशी बजे धीरे धीरे (टेक)
इत में मनसुख उत में सुदामा (२)
बीच में लाला चले धीरे धीरे (२)
श्याम तेरी बंशी बजे धीरे धीरे (टेक)
इत में ललिता उतमें विशाखा (२)
बीच में राधाजी चले धीरे धीरे (२)
श्याम तेरी बंशी बजे धीरे धीरे
गोविन्द तेरी बंशी बजे धीरे धीरे
बजे धीरे धीरे यमुना के तीरे (२) (टेक)
गोविन्द तेरी गोपाल मेरी माधव तेरी
बंसी बजे धीरे धीरे ।।

किसी के काम जो आये, उसे इन्सान कहते हैं ।
पराया दर्द अपनाये, उसे इन्सान कहते हैं ।।

कभी धनवान है कितना, कभी इन्सान निर्धन है ।
कभी सुख है, कभी दुख है, इसी का नाम जीवन है ।
जो मुश्किल में न घबराये, उसे इन्सान कहते हैं ।।१।।

यह दुनिया एक उलझन है, कहीं धोखा कहीं ठोकर ।
कोई हँस-हंसके जीता है, कोई जीता है रो-रोकर ।
जो गिरकर फिर सम्हल जाये, उसे इन्सान कहते हैं ।।२।।

अगर गलती रुलाती है, तो राहें भी दिखाती है ।
मनुष्य गलती का पुतला है जो अक्सर हो ही जाती है ।
जो कर ले ठीक गलती को, उसे इन्सान कहते हैं ।।३।।

यों भरने को तो दुनिया में, पशु भी पेट भरते हैं ।
जिन्हें इन्सान का दिल है, वे नर परमार्थ करते हैं ।
पथिक जो बाँटकर खाये, उसे इन्सान कहते हैं ।।४।।

कभी राम बनके, कभी श्याम बनके
चले आना, प्रभु जी चले आना । .... (१)

तुम राम रुप में आना, तुम राम रुप में आना
सीता साथ लेकर, धनुष हाथ लेकर चले आना प्रभुजी चले आना
कभी राम .... (२)

तुम श्याम रुप में आना, तुम श्याम रुप में आना
राधा साथ लेके, मुरली हाथ लेके चले आना प्रभुजी चले आना
कभी राम .... (३)

तुम शिवके रुप में आना, तुम शिवके रुप में आना
गौरा साथ लेकर, डमरु हाथ लेकर चले आना प्रभुजी चले आना
कभी राम .... (४)

तुम विष्णु रुप में आना, तुम विष्णु रुप में आना
लक्ष्मी साथ लेकर, चक्र हाथ लेकर चले आना प्रभुजी चले आना
कभी राम .... (५)

तुम गणपति रुप में आना, तुम गणपति रुप में आना,
रिद्धि साथ लेकर, सिद्धि हाथ लेकर चले आना प्रभुजी चले आना
कभी राम .... (६)

श्याम से मिलने का संतसंग बहाना है ।
मिल जारे सांवरीया दिल तो दीवाना है ।

कहा-कहाँ ढुढुँ तुझे, कहाँ-कहाँ पाऊँ तुझे ।
भक्तों की महफील में मेरे श्याम का ठिकाना है ।
श्याम से मिलने का सत्संग बहाना है....... ।। १ ।।

मथुरा में ढूँढा तुझे गोकुल में ढूँढा तुझे ।
वृन्दावन की गलियों में मेरे श्याम का ठिकाना है ।
श्याम से मिलने का सत्संग बहाना है....... ।। २ ।।

मीरा ने पाया तुझे राधा ने पाया तुझे
द्रौपदी के चीरों में मेरे श्याम का ठिकाना है ।
श्याम से मिलने का सत्संग बहाना है....... ।। ३ ।।

यमुना किनारे पर बाँसुरी की तानो पर
गोपीयों के झुण्डों में मेरे श्याम का ठिकाना है
श्याम से मिलने का सत्संग बहाना है....... ।। ४ ।।

सतसंग में आ जाओ आकर के बैठ जाओ ।
भक्तों के कीर्तन में मेरे श्याम का ठिकाना है ।
श्याम से मिलने का सत्संग बहाना है....... ।। ५ ।।

राम नाम के हीरे मोती मैं बिखराऊँ गली-गली
लूट लो जिसका दिल चाहे मैं शोर मचाऊँ गली-गली
............आवाज लगाऊँ गली-गली ।

जिस जिसने ये मोती लूटे, वह तो मालामाल हुए
और माया के जो बने पुजारी, आखिर में कंगाल हुए
अरे दौलत के दिवाने सुन ले, एक दिन ऐसा आयेगा
धन दौलत और माल खजाना, यहीं पड़ा रह जायेगा
सुन्दर काया माटी होगी, चर्चा होगी गली-गली
राम नाम के हीरे मोती मैं बिखराऊँ गली-गली
लूट लो जिसका दिल चाहे मैं शोर मचाऊँ गली-गली
..............आवाज लगाऊँ गली-गली ।

एक दिन प्यारे सगे सम्बन्धी तुझको पास बुलायेंगे
कल तक तो अपना कहते थे अग्नि में तुझे जलायेंगे
दो दिनका यह चमन खिला है फिर मुरझाए कली-कली
राम नाम के हीरे मोती मैं बिखराऊँ गली-गली
लूटलो जिसका दिल चाहे मैं शोर मचाऊँ गली-गली
.............आवाज लगाऊँ गली-गली ।

अरे क्यों करता है तेरी मेरी तज दे इस अभिमान को
झूटे धंधे छोड़के बंदे भजले सतगुरु नाम को

- कभी प्यासे को पानी, पिलाया नहीं ।
अब अमृत पिलाने से क्या फायदा ।।
कभी गिरते हुए को, उठाया नहीं ।
पाँच आँशू बहाने से, क्या-फायदा ।।१।।

- मैं मन्दिर गया, पूजा आरती की ।
पूजा करते हुए को, खयाल आगया ।।
कभी माँ-बाप की सेवा, की ही नहीं ।
सिर्फ मन्दिर जाने से, क्या फायदा ।।२।।

- धर्म स्थान गया, गुरु वाणी सुनी ।
गुरु वाणी को सुनकर, खयाल आगया ।।
मनुष्य कुल में हुआ, धर्मी बन ना सका ।
सिर्फ मनुष्य कहलाने से, क्या फायदा ।।३।।

- मैं काशी बनारस, मथुरा गया ।
गँगा नहाते हुए ये, खयाल आगया ।।
तन को धोया मगर मन को धोया नहीं ।
सिर्फ गंगा नहाने से क्या फायदा ।।४।।

- मैंने दान दिया, जप तप भी किया ।
दान करते हुए, ये खयाल आगया ।
कभी भूखे को भोजन, कराया नहीं ।
दान लाखों का कर दूँ तो, क्या-फायदा ।।५।।

मीठे रस से भरोरी राधारानी लागे महारानी लागे ।
म्हाने कारो-कारो जमुना जी को पानी लागे । टेक ।
जमुना जी तो कारी-कारी राधा गोरी-गोरी ।
वृन्दावन में धूम मचावे, बरसाने की छोरी ।
बृजधाम राधारानी को रजधानी लागे (म्हाने कारो) । टेक ।
कान्हा नित मुरली तेने समरु बारम्बार ।
कोटिन रुप धरे नन्दनन्दन कोऊ न पावे पार ।
रूपरंग की छबीली पटरानी लागे । (म्हाने कारो) । टेक ।
ना भावे म्हाने माखन मीसरी, ना कोई और मलाई
म्हारी तो जिवडल्या न भावे राधा नाम मलाई ।
बृषभानु की लाली तो गुण खानी लागे (म्हाने कारो) । टेक ।
राधे-राधे नाम रटत है जो जन आठोयाम ।
उनकी बाधा दूर करत है केवल राधा नाम ।
राधा नाम से सफल जिन्दगानी लागे (म्हाने कारो) । टेक ।

Radhaji Ka Bhajan – 74

राधाजी का भजन

आओ मेरी सखियों मुझे मेंहदी लगा दो ।
मेंहदी लगा दो मुझे ऐसी सजा दो ।
मुझे श्यामसुन्दर की दुल्हन बना दो ।।

सत्संग ने मेरी बात चलाई ।
सद्‌गुरु ने मेरी कीन्हीं सगाई ।
सद्‌गुरु को बुलाके हथ लेवा करा दो ।। मुझे .... ।।

ऐसी पहनूँ चूड़ी जो कबहूँ न टूटे ।
ऐसा वरुँ दुल्हा जो कबहुँ न छूटे ।
अचल सुहाग की बिन्दिया लगा दो ।। मुझे .... ।।

ऐसी ओढूँ चूनर जो रंग नहीं छूटै ।
प्रीति का धागा कबहूँ न टूटे ।
आज मेरी मोतियों से माँग भरा दो ।। मुझे .... ।।

भक्ति का सुरमा मैं आँख में लगाऊँगी ।
दुनियाँ से नाता तोड़ उन्हीं की हो जाऊँगी ।
सद्‌गुरु बुलाके मेरे फेरे करा दो ।। मुझे ..... ।।

बाँध के घुँघरू मैं उन्हीं को रिझाऊँगी ।
लेकै एकतारा मैं श्याम-श्याम गाऊँगी ।
सद्‌गुरु बुलाके मेरी डोली सजा दो ।। मुझे .... ।।

बड़ी देर भई नन्दलाला, तेरी रांह तके वृजवाला,
ग्वाल बाल इक २ से पूछे कहां है मुरली वाला रे ।
बड़ी देर भई नन्दलाला...... ।। १ ।।
कोई न जाए कुंज गली में, तुम बिन कलियां चुनने को ।
तरस रहे हैं जमुना के तट, धुन मुरली की सुनने को ।
अब तो दरश दिखादे मोहन, क्यों दुविधा में डाला रे ।
बड़ी देर भई नन्दलाला...... ।। २ ।।
संकट में है आज वो धरती, जिस पर तूने जन्म लिया ।
पूरा कर दे आज वचन वो, गीता में जो तूने दिया ।
तुम बिन कोई नहीं है, मोहन भारत का रखवाला रे ।
बड़ी देर भई नन्दलाला...... ।। ३ ।।

म्हान चाकर राखो जी, गिरधारी म्हान चाकर राखो जी ।। टेर ।।

चाकर रहस्यूँ बाग लगास्यूँ, नित उठ दर्शन पास्यूँ ।
वृन्दावन की कुञ्जगली में, गोविन्द लीला गास्यूँ ।। १ ।।

चाकरी में दर्शन पाऊँ, सुमरन पाऊँ खरची ।
भाव भक्ति जागीरी पाऊँ, तीनों बातां सरसी ।। २ ।।

मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, गल वैजन्ती माला ।
वृन्दावन में धेनु चरावे, मोहन मुरलीवाला ।। ३ ।।

ऊँचा ऊँचा महल बनाऊँ, बिच-बिच राखूँ बारी ।
साँवरिया का दर्शन पाऊँ, पहर कशूमल साड़ी ।। ४ ।।

योगी आया योग करन को, तप करने सन्यासी ।
हरि भजन को साधू आयो, वृन्दावन के बासी ।। ५ ।।

मीरा के प्रभु गहर गम्भीरा, हृदय धरो जी धीरा ।
आधी रात प्रभु दर्शन दीन्हा, यमुनाजी के तीरा ।। ६ ।।

Maiya Mori Maine Hee Maakhan Khayo – Bhajan – 77

मैया मोरी मैं नहीं माखन खायो ।।
भोर भयो गैयन के पाछे, मधुवन मोहि पठायो ।
चार पहर बंशीवट भटक्यो, साँझ परे घर आयो ।। १ ।।
मैं बालक बहियन को छोटो, छींको किहि बिधि पायो ।
ग्वाल-बाल सब बैर परे है, बरबस मुख लपटायो ।। २ ।।
तू जननी मन की अति भोरी, इनके कहे पतियायो ।
मन तेरे कछु भेद उपजिहै, जानि परायो जायो ।। ३ ।।
यह लै अपनी लकूटि कमरिया, बहुतहि नाच नचायो ।
'सूरदास' तब बिहँसि यशोदा, ले उर-कंठ लगायो ।। ४ ।।

Tumhaare Haatho Mein – Bhajan – 78

तुम्हारे हाथों में

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में।

मेरा निश्चय बस एक यही, इक बार तुम्हें पा जाऊं मैं।
अर्पण कर दूं दुनिया भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में।
अब सौंप दिया ...

जो जग में रहूं तो ऐसे रहूं, ज्यों जल में कमल का फूल रहे।
मेरे गुण-दोष समर्पित हों, करतार तुम्हारे हाथों में।
अब सौंप दिया ...

यदि मानुष का मुझे जन्म मिले, तेरे चरणों का पुजारी बनूं।
इस पूजक की इक-इक रग का, हर तार तुम्हारे हाथों में॥
अब सौंप दिया ...

जब-जब संसार का कैदी बनूं, निष्काम भाव से कर्म करूं।
फिर अन्त समय में प्राण तजूं, निराकार तुम्हारे हाथों में।
अब सौंप दिया ...

मुझमें तुझमें बस भेद यही मैं नर हूं, तुम नारायण हो।
मैं हूं संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में॥
अब सौंप दिया ...

श्याम पिया मोरी रंग दे चुनरिया
बाँके बिहारी मेरी रंग दे चुनरिया,

ऐसी जो रंग दे रंग नाहीं छूटे,
धोबनिया धोऐ चाहे सारी उमरिया।
श्याम ....

पीली न ओढूं धोली न ओढूं,
ओढूंगी श्याम मैं तो काली कमरिया।
श्याम ....

बिना रंगाये बाहर न निकलूं,
चाहे तो बीत जाये सारी उमरिया ॥
श्याम ....

गागर जो भरदे सर पर जो धर दे,
चलके बतादे श्याम तेरी नगरिया ॥
श्याम ....

बाई मीरा के प्रभु गिरधर नागर
हरि चरणा चित लागी नजरिया ॥
श्याम ....

कदकी खड़ी

थे तो पलक उघाड़ो दीनानाथ,

मैं हाजिर-नाजिर कदकी खड़ी ॥

साजनियां दुसमण होय बैठ्या, सबने लगूं कड़ी।

तुम बिन साजन कोई नहिं है, डिगी नाव मेरी समंद अड़ी ॥

दिन नहिं चैन रैण नहिं निंदरा, सूखूं खड़ी खड़ी।

बाण बिरहका लग्या हिये मे, भूलूं न एक घड़ी ॥

पत्थर की तो अहिल्या तारी, बनके बीच पड़ी।

कहा बोझ मीरामें कहिए, सौ पर एक घड़ी ॥

मेरे भगवान आए हैं

तर्ज : बहारों फूल बरसाओ मेरा ...

लताओ पुष्प बरसाओ, मेरे भगवान आए हैं,
ऐ कोयल मीठे स्वर गाओ, मेरे भगवान आए हैं ॥

लगी थी आस सदियों से, हुए हैं आज वो दर्शन,
निभाने आज वादे को, पधारे खुद पतित-पावन।
मेरे कष्टों को हरने को, ये नंगे पांव आए हैं।
लताओ पुष्प बरसाओ ...

करूं कैसे तेरी पूजा, न मन फूला समाता है,
कहां जाऊं मैं क्या लाऊं, समझ कुछ भी नहीं आता है
मुझे अपने ही रंग-रंगकर, बढ़ाने मान आए हैं।
लताओ पुष्प बरसाओ ...

ना चाहिए दौलत मुझको, तेरी भक्ति मैं चाहता हूं,
मेरे सिर हाथ हो तेरा, यही वरदान चाहता हूं।
अधम मुझ नीच पापी का, करने उद्धार आए हैं।
लताओ पुष्प बरसाओ ...

मधुर कीर्तन

(१)

नटवर नागर नन्दा, भजो रे मन गोविन्दा ।
श्यामसुन्दर मुख चन्दा, भजो रे मन गोविन्दा ।। टेर ।।
तूँ ही नटवर, तूँ ही नागर, तूँ ही बाल मुकुन्दा ।।१।।
सब देवन में कृष्ण बड़े हैं, ज्यूँ तारा बिच चन्दा ।।२।।
सब सखियन में राधाजी बड़ी हैं, ज्यूँ नदियाँ बिच गंगा ।।३।।
ध्रुव तारे, प्रहलाद उबारे, नरसिंह रूप धरन्ता ।।४।।
कालीदह में नाग ज्यों नाथो, फण फण निरत करन्ता ।।५।।
वृन्दावन में रास रचायो, नाचत बाल मुकुन्दा ।।६।।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, काटो यम का फन्दा ।।७।।

Ek Tera Naam Saari Duniya Se Pyaara Hai – Bhajan – 83

|| शब्द ||

एक तेरा नाम सारी दुनियाँ से प्यारा है
न मिले संसार तेरा प्यारा तो हमारा है
ना मिले संसार एक तू ही तो हमारा है ।।

मन में बसी हो वह मोहनी छबी
मोह माया में नें उलझू कभी भी
ऐसा मुझको ज्ञान दो ये ही बरदान दो
तेरी ही अधार दिल में तुझको ही पुकारा है ।।

बीच भवंर में पड़ी हे मेरी नैया
देखते हो क्या जब बने हो खेवैया
नैया मझधार है न कोड़ पतवार है
दूर है मंजिल नहीं दिखता किनारा है ।।

तेरा दर छोड़ के मै किस दर जाऊँ
सुनता है कौन मेरी किसको सुनाऊँ
हो पिता माता है तू ही प्राणदाता है
रख लिया संसार मुझको आसरा तुम्हारा है ।।

नाम तेरा है गंगा को धारा, डुबकी लगाए जो मिल जा किनारा
मेरी पार करो मेरी भी उद्धार करो
हाथों के नाथ कि मुझको क्यों बिसारा है
मुझको आसरा तुम्हारी है ।

भजन बिना बावरे

दोहा – रात गँवायो सोय कर, दिवस गँवायो खाय ।
हीरा जनम अमोल था, कौड़ी बदले जाय ।।

तू ने हीरो सो जनम गँवायो, भजन बिन बावरे ।।टेर।।
कदे न तू सतसंगत कीन्ही, कदे न हरि गुण गायो ।
पचि - पचि मरियो बैल की नाहीं, सोय रह्यो उठ खायो ।।१।।
यो संसार हाट बनिये की, जग सौदा ले आयो ।
चतुर माल तो दूनो कीन्हो, मूरख मूल गँवायो ।।२।।
यो संसार फूल सेमर को, सूवो देख लुभायो ।
मारी चोंच निकल गई रूई, सिर धुनि धुनि पछितायो ।।३।।
यो संसार माया को लोभी, ममता महल चिनायो ।
कहत ''कबीर'' सुनो भई साधो, हाथ कछु नहीं आयो ।।४।।

Dekhoi Bahut Nirali Mahima Satsang Ki – Bhajan – 85

देखी बहुत निराली महिमा सतसंग की ।।
सतसंग अन्दर मोती हीरे, मिलते लेकिन धीरे- धीरे ।
जिसने खोज निकाली महिमा सतसंग की ।
सतसंग ही सब संकट टाले डूबे हुवे को सतसंग तारे ।
दीन दीन होय खुशियाली महिमा सतसंग की ।। टेक
सतसंग सच्चा तीरथ भाई, करते जिनकी नेक कमाई ।
कर्महीन रहे खाली महिमा सतसंग की ।। टेक
सतसंग अन्दर प्रेम बढ़ाओ, समय न अपना वीरथ गवाओ ।
जाओ न यहाँ से खाली महिमा सतसंग की ।। टेक
सतसंग अन्दर अमृत वरसे, पीवे पीवे कोई ज्ञानी
महिमा सतसंग की
पीवे- पीवे बड़भागा महिमा सतसंग की ।। टेक

Gurudev Daya Karke – Bhajan – 86

गुरुदेव दया करके, मुझको अपना लेना
शरण पड़ा तेरी, चरणों मे जगह देना ।।
करुणानिधि नाम तेरा, करुणा दिखलाओ तुम ।
सोये हुए भाग्यों को, हे नाथ जगाओ तुम ।
मेरी नाँव भंवर डोले उसे पार लगा देना ।।
तुम सुख के सागर हो निर्धन के सहारे हो
इस तन मे समाये हो मुझे प्राणों से प्यारे हो ।
नित माला जपूँ तेरी, नहीं दिल से भुला देना ।।
पापी हूँ या कपटी हूँ जैसा भी हूँ तेरा हूँ ।
घर द्वार छोड कर मै जीवन से खेला हूँ ।
दुख का मारा हूँ मै मेरा दोष मिटा देना ।।
मै सत्य का सेवक हूँ तेरे चरणों का चेला हूँ ।
नही नाथ भुलाना मुझे इस जग मे अकेला हूँ
अपना लो गुरुजी मुझको, चरणों मे लगा लेना ।।

भजन

पहले मनाऊँ मैं तो सरस्वती
ध्याऊँगी गुरु गणेश बधावा गुरुदेव का ॥
१) गरुड़ चढ़े गुरुजी आ गए
लाम्बी तो करुँ ऐ दण्डवत् बधावा गुरुदेवा का ॥
२) भवसागर जल डूँगा घना
किस विध उतरागें पार, बधावा गुरुदेव का ॥
३) अपने सत्गुरुजी का सुमिरन करो
हर भज उतरागें पार बधावा गुरुदेव का ॥
४) सुमरे तो सुगरे गुरुजी पार उतर गए,
नुगरे तो डूबे मझधार, बधावा गुरुदेव का ॥
५) नाथ समझाई हमने पूरे मिले
लाजवन्ती सन्त हमने पूरे मिले
सारे संवारे म्हारे काज, बधावा गुरुदेव का ॥

॥ भजन ॥

Ab Saunp Diya Es Jeevan Ka – Bhajan – 88

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में ।
अब हार तुम्हारे हाथों में, अब जीत तुम्हारे हाथों में ।।
इस जीवन की एक तमन्ना है, भगवान तुम्हारे चरणों में ।
अरपन कर दूँ इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में ।।
यदि मानुष जनम मिले तो मैं चरणों का पुजारी बन जाऊँ ।
तेरा प्रेम हो मेरी रग रग में, मेरा ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।
यदि मैं संसार का बन्दी बनूं, दरबार में तेरे आऊँ मैं ।
हो मेरे पापों का निर्णय, भगवान तुम्हारे हाथों में ।।
या तो मैं इस जग से दूर रहूँ, या जग में रहूँ तो तेरा रहूँ ।
इस पार तुम्हारे हाथों में, उस पार तुम्हारे हाथों में ।
तुम में मुझ में है भेद यही, मैं नर हूँ तुम नारायण हो ।
मैं हूँ संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में ।।

Kam Se Kam Insaan Bano – Bhajan – 89

कम से कम इंसान बनो

यदि भला किसी का कर न सको,
तो बुरा किसी का न करना।
अमृत पिलाने को न हो अगर,
तो जहर पिलाते भी डरना।।
सत्य मधुर यदि कह न सको,
तो झूठ कभी भी मत बोलो।
मौन रहो तो सबसे अच्छा,
कम से कम विष तो मत घोलो।।
महल किसी का बना न सको,
तो झोपड़िया न जला देना।
मलहम पट्टी गर कर न सको,
तो खारा नमक न लगा देना।।
दीपक बन कर जल न सको,
तो अन्धकार न कर देना।।
इस दुनिया में आये हो तो,
कम से कम इंसान बनो।
काम - क्रोध - मद - लोभ त्याग कर,
प्रतिपल सीताराम भजो।।

वन जाने वाले रघुवर से

वन जाने वाले रघुवर से, प्रणाम हमारा कह देना।
तुम भूल न जाना रस्ते में, प्रणाम हमारा कह देना।।

शिवशंकर कैलाशी को, उमा हमारी माता को।
सूंड सूंडाले गणपति को, प्रणाम हमारा कह देना।।
वन जाने वाले रघुवर ......

राजा दशरथ रानी को और सारी बानर सेना को।
वीर बांकुरे बजरंगी को, प्रणाम हमारा कह देना।।
वन जाने वाले रघुवर ......

राम लखन बनवासी को, भरत शत्रुघ्न भैया को।
सीता जनक दुलारी को, प्रणाम हमारा कह देना।।
वन जाने वाले रघुवर ......

पांचो पांडव भाइयों को, सारे कौरव भाइयों को।
द्रुपद सुता के चरणों में, प्रणाम हमारा कह देना।।
वन जाने वाले रघुवर ......

श्री मद्भगवत गीता को और वाल्मीकी रामायण को।
चारों वेदों पुराणों को, प्रणाम हमारा कह देना।।
वन जाने वाले रघुवर ......